पुरुषोत्तम मास विशेषांक

मई 2026
वर्ष – 16

मूल्य : 40/-
अंक – 09

निखिल-मंत्र-विज्ञान

लक्ष्मी नारायण साधना

ऋण बाधा निवारण मंगल साधना

मन में तंत्र स्थापन

चन्द्र मौलिश्वर साधना

A Monthly Journal

आवश्यक सूचना

निखिल मंत्र विज्ञान का प्रत्येक अंक अब से रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा जा रहा है। जिससे आपको पत्रिका निश्चित रूप पता हो सके। अब पत्रिका जोधपुर कार्यालय से POST होते आपको डाक विभाग द्वारा SMS प्राप्त होगा। यदि आपको मोबाईल पर SMS के माध्यम से सूचना प्राप्त नहीं हुई है तो कृपया पते के साथ अंकित अपना MOBILE NUMBER अवश्य जांच लें और यदि आपने अपना मोबाईल नम्बर बदल दिया है तो तत्काल जोधपुर कार्याल के WhatsApp No. 9602334847 पर अपना नया नम्बर अपने नाम सहित भेज दें अथवा फोन द्वारा सूचना कर दें।

पत्रिका आपको समय पर और निरन्तर प्राप्त हो इसीलिये रजिस्टर्ड डाक (MAGAZINE POST) की विशेष सेवा का प्रयोग किया जा रहा है। पत्रिका नहीं प्राप्त होने पर तुरन्त जोधपुर कार्यालय में फोन एवं WhatsApp द्वारा सम्पर्क करें।

साधना और दीक्षा से ही जीवन गतिशील

प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री, दीक्षा, भेंट आदि की न्यौछावर आप सीधे "निखिल मंत्र विज्ञान, जोधपुर" के SBI Bank A/c. 32677736690 और UBI Bank A/c. 310001010036403 में QR Code Scan कर जमा करवा सकते है -

SBI Payments
SBI Bank A/c.
32677736690
IFSC Code
SBIN0000659
SCAN & PAY

Union Bank of India
UBI Bank A/c.
3100010100-
36403
IFSC Code
UBIN0531006
SCAN & PAY

WhatsApp 9602334847 पर न्यौछावर की जानकारी अवश्य भेजे।

कार्यालय में व्यक्तिगत सम्पर्क केवल इन्ही चार नम्बरों पर करें

9799988915 9799988930 9799988937 9799988938

इन्हें अपने Phone में Save कर दें।

शिविर, दीक्षा, साधना सामग्री, विधान, पूजन आदि की जानकारी हेतु
निखिल मंत्र विज्ञान जोधपुर के कार्यालय व्यवस्थापक से सम्पर्क करें -
संजय निखिल - मान सिंह - प्रवेश भारती - जगदीश

दिल्ली कार्यालय में साधनात्मक जानकारी, पूजन-यज्ञ-अनुष्ठान हेतु सम्पर्क करें - मनोज भारद्वाज - 9799988970

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

वर्ष 16 | मई 2026

मूल्य मासिक रुपये 40/-

निखिल आलेख

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥

मूल्य वार्षिक रुपये 405/-

अंक 09 | पृष्ठ 68

अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार
जोधपुर

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

संयोजक
मनोज भारद्वाज

व्यवस्थापक मण्डल
नितेश कुमार
संजय 'निखिल'

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
नन्द किशोर श्रीमाली
निखिल मंत्र विज्ञान
द्वारा
सालासर ईमेजिंग सिस्टम,
ए-97, सेक्टर-58
नोएडा (उ.प्र.) - 201301
से मुद्रित तथा
निखिल मंत्र विज्ञान,
14 अ मेन रोड
हाईकोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर से प्रकाशित

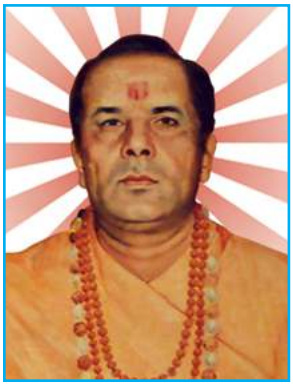

निखिल सम्यक्

सद्गुरु प्रवचन -
क्रियायोग : जीवन आधार ...37
गुरु वाणी ...34
शिष्य धर्म ...36
वराहमिहिर ...51
नक्षत्रों की वाणी ...52
काल निर्णय ...54
इस माह की प्रमुख साधनाएं ...55
शिविर जानकारी ...63

साधनाएं

लक्ष्मी नारायण साधना ...07
शनि प्रसन्न साधना ...12
चन्द्रमौलिश्वर साधना ...18
महाविद्या कमला साधना ...22
छः सिद्धिदायक यंत्र ...29
ऋण मोचन मंगल साधना ...58
ऋण मोचन मंगल स्तोत्र ...62

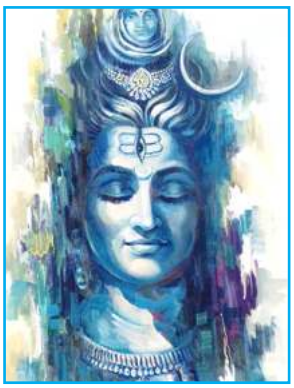

विशेष

नारायण दीक्षा ...09
महाविद्या कमला दीक्षा ...24
शनि प्रसन्न दीक्षा ...67

निखिल विचार प्रवाह

शनि साधना से बदलता है : जीवन ...10
शिव सूत्र : जीवन सूत्र ...13
मन और तंत्र : आत्म नियन्त्रण से विजय ...16
जीवन : आज का उत्सव ...20
पुरुषोत्तम मास : कर्म और लक्ष्मी ...25
पृथ्वी से आकाश : पंच तत्वों की यात्रा ...27

14 A, मेन रोड हाईकोर्ट कॉलोनी, सेनापति भवन के पास, जोधपुर, फोनः 9799988915, 9799988930, SMS & WhatsApp 9602334847
आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोनः 9799988970, 9799988904, 9799988905
www.nikhilmantravigyan.org E-mail – nmv.guruji@gmail.com facebook.com\nikhilmantravigyan.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'निखिल मंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायं, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर–न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय द्वारा किसी भी सामग्री का विक्रय नहीं किया जाता, केवल उस पर मंत्र साधना, यज्ञ इत्यादि सम्पन्न किया जाता है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। पत्रिका में प्रकाशित आलेखों को किसी भी प्रिन्ट या डिजिटल माध्यम से प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक/सम्पादक कार्यालय से स्वीकृती अवश्य प्राप्त कर लें।

☆ प्रार्थना ☆

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामे को गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।

हे गुरुदेव! त्रयी (वेदमार्ग), सांख्य, योग, पाशुपत मत, वैष्णव मत सभी आपकी प्राप्ति के ही मार्ग है। रुचि-वैचित्र्य के कारण ही **'यह श्रेष्ठ है, वह हितकारी है'** इस प्रकार उनमें पृथक्ता प्रतीत होती है। सद्गुरु! जैसे समस्त नदी-नालों का जल समुद्र में ही जाता है, वैसे ही सीधे-टेढ़े सभी साधन मार्गों से यात्रा करने वाले साधकों के गन्तव्य स्थान एकमात्र आप ही हैं।

☆ अवसर ☆

एक जगह चित्रों की प्रदर्शनी लगी हुई थी। वहां कई तरह के चित्र लोगों के आकर्षण का केंद्र बने हुए थे। लेकिन एक चित्र के पास काफी ज्यादा भीड़ थी। चित्र में एक ऐसी आकृति बनी हुई थी, जिसका चेहरा बालों से पूरी तरह ढका हुआ था। सिर के पीछे से वह गंजा था। उसके पैरों में पंख लगे हुए थे। उस चित्र से प्रभावित कई दर्शकों ने उस चित्र के पास ही खड़े चित्रकार से पूछा, यह किस चीज का चित्र है?

दर्शकों का प्रश्न सुनकर चित्रकार बोला, **यह अवसर का चित्र है।** दर्शक बोले, आपको कैसे पता कि अवसर का रूप ऐसा होता है। चित्रकार बोले, अवसर का यह रूप सिर्फ मैं नहीं बल्कि कई लोग जानते हैं। इस पर एक दर्शक बोला, अवसर का मुंह ढका हुआ क्यों है? चित्रकार ने कहा, **अवसर का मुंह ढका हुआ इसलिए है क्योंकि अधिकतर लोग सामने आए हुए अवसर को पहचान नहीं पाते।** दूसरा दर्शक बोला, इसके पैरों में पंख क्यों लगे हैं? चित्रकार बोला, इसके पैरों में पंख इसलिए लगे हुए हैं क्योंकि वह आता है और फुर्र से उड़ जाता है। **यदि अवसर को आपने सही समय पर नहीं पकड़ा तो फिर वह आपके दरवाजे से लौट जाता है।**

तीसरा दर्शक भी उत्सुकतावश बोल पड़ा, और यह पीछे से गंजा क्यों है? चित्रकार तीसरे दर्शक का प्रश्न सुनकर मुस्कराते हुए बोले, जाते हुए अवसर को कोई पीछे से नहीं पकड़ सकता। सामने बाल हैं, चेहरे पर बिखरे हुए बाल को पकड़कर आप अवसर को अपने काबू में कर सकते हैं, पर जब अवसर जाने वाला हो और तब आप उसे पकडने की कोशिश करो तो वह फिसल जाता है।

जो व्यक्ति, भाग्य और पुरुषार्थ के अन्तर को समझ लेता है, वह प्रत्येक अवसर का उपयोग करता है।

अपनों से अपनी बात...

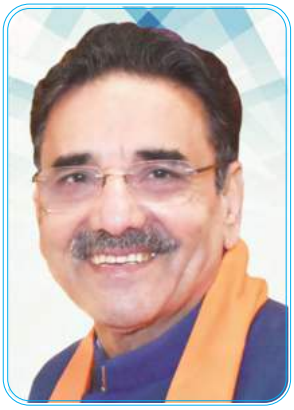

मेरे प्रिय आत्मीय,

शुभाशीर्वाद,

सबसे प्रिय शब्द है 'प्रेम' और सबसे प्रिय कार्य है 'प्रेम'...। प्रेम से ही जगत में उत्पति, पोषण और वृद्धि होती है। प्रकृति को देखों, बादल पृथ्वी से प्रेम करते है इसलिये उस पर बरसने के लिये तत्पर हो जाते है, समुद्र भी आकाश से प्यार करता है और वह अपनी ऊष्मा को वाष्प रूप में आकाश में भेजता है। हिमालय से निकली गंगा और अन्य नदियां भी सागर से अथाह प्रेम करती है इसीलिये वे निरन्तर गतिशील होती हुई सागर में समा जाती है। ऐसा करने से न तो पृथ्वी अपना अस्तित्व खोती है, न बादल, न सागर, न आकाश, न नदी।

हमारे शरीर को ही देखों शरीर की सारी नाड़ियों में रक्त प्रवाहित हो रहा है और इस प्रवाह का उद्देश्य है मैं हृदय में पहुंचकर पुनः शुद्ध होऊं और पुनः शरीर में निरन्तर प्रवाहमान रहूं। इसलिये हृदय को जिसमें मन बसता है प्रेम की आधार भूमि कहा गया है।

संसार में अभिवृद्धि प्रेम का ही स्वरूप है, प्रेम से न तो पुरुष छोटा होता है और न स्त्री छोटी होती है। सृष्टि का कण-कण जीवित, निर्जीव सभी पदार्थ प्रेम से ही तो एक-दूसरे के प्रति आकर्षित है।

यह बात निश्चित है कि **प्रेम के बिना ब्रह्माण्ड में कुछ भी नहीं हो सकता...।**

अब सबसे बड़ा प्रश्न है कि प्रेम किससे किया जाये? प्रेम स्वयं से किया जाये या समस्त संसार से किया जाये? इसका स्पष्ट उत्तर है सबसे पहले आप अपने आप से प्रेम करो, तब आप प्रेम का पहला अध्याय सीखोंगे। अपने आप से प्रेम करने का अर्थ है अपने शरीर से प्रेम अर्थात् शरीर को स्वस्थ रखना, अपने मन से प्रेम अर्थात् अपने भावों को सरस रखना।

प्रेम के चार पद है - आत्मभाव, आत्मलीन, आत्म शांति और आत्म आनन्द।

भीतर श्रेष्ठ भावों का उदय होगा तो हम अपने आप में ही लीन रह सकते है और उस स्थिति में आत्म शांति प्राप्त होगी और आत्मशांति ही आत्म आनन्द प्रदान करती है।

हम प्रेम प्राप्त करने के लिये भागते है, उसका उद्देश्य है - हमें आनन्द प्राप्त हो। पर आनन्द के लिये सबसे पहले स्वयं से प्रेम करना पड़ेगा।

स्वयं से प्रेम करने का अर्थ है अपने अस्तित्व, अपने मन, अपने शरीर और अपनी आत्मा का सम्मान करना। जब हम अपने आपको स्वीकार कर लेते है तो अपनी क्षमताओं को और सीमाओं दोनों को समझ लेते है तब जीवन सन्तुलित भाव से जागरुक भाव से जी पाते है।

स्वयं से प्रेम करना परम आवश्यक है, क्योंकि हमें अपने जीवन के प्रति जिम्मेदार बनना है, अपने विकास के लिये निरन्तर प्रयास करना है।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।

मनुष्य स्वयं ही अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु। जब वह स्वयं को समझकर अपने मन को सही दिशा देता है, तब वही जीवन को ऊंचा उठा सकता है। यही आत्मप्रेम का वास्तविक अर्थ है, अपने जीवन को बेहतर बनाने का संकल्प।

स्वयं से प्रेम करोगे तो भीतर आत्म विश्वास, सन्तुलन और सकारात्मकता का विकास होता है।

क्यों दूसरों की प्रशंसा और आलोचनाओं से प्रभावित हो? किसी से प्रभावित नहीं होना है। स्वयं को प्रेम करते हुए अपने निर्णय स्वयं लेने है और अपने निर्णयों के लिये अपने आपको जिम्मेदार बनाना पड़ता है।

अरे भाई! हम जैसे है वैसे है इस बात को स्वीकार कर लो, हर मनुष्य में कुछ गुण होते है, कुछ कमियां होती है। दोनों को ही स्वीकार करो। अपने शरीर और मन का ध्यान रखों। अपने आपसे प्रेम करोगे तो निरन्तर सकारात्मक विचार मन में उभरेंगे और आपको और अधिक मजबूत बनायेंगे।

क्यों करें हम दूसरों से तुलना? जब भी हम तुलना करते है तो असंतोष और हीन भावना में फंस जाते है। नहीं करनी है तुलना, स्वयं से प्रेम करते हुए अपने विकास और अपने मार्ग की ओर ही ध्यान देना है।

तब क्या होगा? आत्मविश्वास बढ़ेगा, निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होगी, जीवन की चुनौतियों का सामना अधिक धैर्य और साहस के साथ कर पायेंगे। हताशा-निराशा पास में नहीं आयेगी।

यह जान लो कि संसार में सबसे स्थाई सम्बन्ध आपके स्वयं के साथ ही है। वही प्रेम की शक्ति आपको भीतर से मजबूत बनाती है और जीवन क्या है? निरन्तर बदलती हुई परिस्थितियां हैं। भीतर से मजबूत हुए तो हर परिस्थिति का सामना कर लेंगे।

बार-बार अपने आपसे कहो, **मेरे भीतर अपार शक्ति है। मैं सब कार्य सम्पन्न कर सकता हूं।**

बस आपके जीवन में हीन भावना और संदेह कभी आयेंगे ही नहीं, आप अपनी क्षमताओं को कभी कम नहीं समझेंगे और अपने जीवन की दिशा दूसरों के विचारों के अनुसार नहीं, अपने अनुसार तय करेंगे।

ध्यान देना, आत्म प्रेम ही आत्म शक्ति का द्वार है।

स्वयं से प्रेम करना, संसार से दूर होना नहीं है। यह तो जगत से सच्चे प्रेम की शुरुआत है। स्वयं को समझना है, स्वयं को स्वीकार करना है तभी तो दूसरों के प्रति प्रेम और करुणा प्रकट कर सकते है।

जब आप अपने आप से प्रेम करना प्रारम्भ कर देते है तो संसार से प्रेम आपका और अधिक गहरा हो जाता है। परिवार से प्रेम और अधिक गहरा हो जाता है क्योंकि आप किसी भी स्थिति में असन्तुष्ट और अशांत नहीं है। आपने अपने आत्मभाव में प्रेम और आनन्द को स्थापित कर दिया है।

जब ऐसी स्थिति आ जाती है तब आप अपने जगत के विष्णु बन जाते है। विष्णु अर्थात् नारायण और नर से नारायण बनने की क्रिया एक ही है। बिना चिन्ता के कार्य करते रहना। **अपनी पालना करना, अपने आश्रितों की पालना करना, तब जीवन की वास्तविक लक्ष्मी, वह भी प्रेम का ही स्वरूप है, आपके साथ स्थापित होगी। जहां प्रेम है वहां विष्णु है, जहां प्रेम है वहां लक्ष्मी है, जहां प्रेम है वहां शिव है, जहां प्रेम है वहां शक्ति है।**

आज से शुरुआत कीजिये, अपने आपसे प्रेम करना, अपने शरीर और अपने मन की भावनाओं का ध्यान रखना, उनके प्रति सजग रहना।

नन्द किशोर श्रीमाली

किसी भी पूजा का शुभारम्भ देव प्रार्थना से किया जाता है। सबसे पहले देवताओं का नमन करते है, आह्वान करते है और उच्चरित करते है - **ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः, उमा-महेश्वराभ्यां नमः, शची-पुरन्दराभ्यां नमः, वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः, वास्तु देवताभ्यो नमः, कुल देवताभ्यो नमः, ब्राह्माणेभ्यो नमः, स्थान देवताभ्यो नमः, ग्राम देवताभ्यो नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो पितृरेभ्यो नमः...'**

इस प्रकार हम विराट् जगत के स्वरूप लक्ष्मी के साथ विष्णु की, उमा के साथ महेश, वाणी शक्ति सरस्वती के साथ ब्रह्मा के हिरण्यगर्भ स्वरूप के तत्पश्चात् अन्य सभी देवी-देवताओं और अपने पितृजनों, माता-पिता, स्थान देवता, कुल देवता, ग्राम देवता का नमन करते है।

लक्ष्मी के साथ नारायण की प्रार्थना है -

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

विष्णु अपनी शक्ति लक्ष्मी के माध्यम से संसार को गतिशील रखते है। विष्णु जगत पालक है, जगत के पिता है, उनके कार्यों हेतु लक्ष्मी संसार में विचरण करती है और मनुष्य को कर्मों के अनुसार फल प्रदान करती है। सामान्य मनुष्य फल और लक्ष्मी में भेद नहीं कर पाता है। जबकि लक्ष्मी अर्थात् जीवन में प्राप्ति और यह प्राप्ति तभी सुनिश्चित होती है जब जगत के पालक विष्णु अपनी कृपा करते है।

यह सुविदित तथ्य है कि ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की और भगवान शिव ने अपनी जंघा से विष्णु को प्रकट कर जगत के पालना का कार्य उन्हें सौंप कर अपनी तपस्या में पुनः लीन हो गये।

विष्णु आधार देव है और विष्णु के दसावतार - मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध हुए और भविष्य में कल्कि रूप होगा। हर काल में जैसी स्थिति आई उस अनुसार विष्णु ने अवतार लेकर इस जगत की गति को सुनिश्चित किया, इसकी उचित व्यवस्था की जिससे जगत निरन्तर गतिशील रहे।

भगवान विष्णु **'पुरुषोतम'** की उपाधि दी गई है अर्थात् सब पुरुषों में उत्तम, यही उपाधि विष्णु के अवतार श्रीराम को मर्यादा पुरुषोतम के रूप में मिली, श्रीकृष्ण को मिली।

पुरुषोतम मास एक कल्प है, एक अनुष्ठान पर्व है जिस पूरे मास आदि देव विष्णु की आराधना की जाती है और अपने पूरे वर्ष के कार्यों की समीक्षा की जाती है इसलिये इस पुरुषोतम मास में व्रत, उपवास, संयम, दान, धर्म, तीर्थाटन की महिमा है क्योंकि मनुष्य संसार की गति में लिप्त होते-होते भूल जाता है कि उसे यह नर-नारी स्वरूप केवल संसार को पशु रूप में भोगने के लिये नहीं मिला है अपितु अपनी आत्मा का उन्नति कर अपना आत्मकल्याण करने के लिये प्राप्त हुआ है जिससे वह अपने आधार लक्ष्मी-नारायण से पुनः जुड़ सके।

लक्ष्मी नारायण साधना

इस साधना को **पुरुषोत्तम मास** अथवा किसी भी गुरुवार को सम्पन्न कर सकते है। पुरुषोत्तम मास में पति-पत्नी को एक साथ साधना सम्पन्न करनी चाहिये। गृहस्थ साधकों हेतु यह अद्वितीय साधना है।

प्रातः स्नान इत्यादि से निवृत होकर पीले वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुख कर बैठे जाये। अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर गुरु चित्र और श्रीमंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित **'श्रीलक्ष्मी नारायण यंत्र'** स्थापित करें।

सर्वप्रथम बायें हाथ में जल लेकर उसे दायें हाथ से ढककर निम्न मंत्र पढ़े -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर जल को अपने ऊपर छिड़क ले। फिर आत्म शुद्धि के लिए दायें हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें -

ॐ नारायणाय नमः।
ॐ केशवाय नमः।
ॐ गोविन्दाय नमः।

फिर साधना प्रारम्भ करने से पूर्व सद्गुरुदेव निखिल का पूजन करें और साधना में सफलता के लिये आशीर्वाद की कामना व्यक्त करे तत्पश्चात् एक माला **गुरु मंत्र** का जप करें।

गुरु मंत्र

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

फिर गुरुदेव की सुक्ष्म उपस्थिति में साधना का संकल्प करें उसके बाद इस साधना का मूल विधान प्रारम्भ होता है।

दोनों हाथ जोड़कर लक्ष्मी-नारायण का ध्यान करें।

ध्यान

लालनात् जननात् लोकान् लक्ष्मीत्यभिधीयते
पालनात् रक्षणात् विष्णुः जगतः पितरौ नमो नमः।

समस्त लोकों के लालन पालन एवं जन्म देने वाली परम सत्ता लक्ष्मी एवं अखिल भुवनों के स्वामी विष्णु को मैं माता-पिता स्वरूप में बारम्बार प्रणाम करता हूं।

तत्पश्चात् यंत्र का पंचोपचार पूजन कर दांये हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग -

ॐ अस्य मंत्रस्य प्रजापति ऋषि गायत्री छन्दः श्री लक्ष्मी नारायण देवताः मम सर्व पाप विनाशाय, परमेश्वर प्रीत्यर्थे जपे विनियोग।

करन्यास -

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः।
नमो तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रीं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः।
श्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः।
श्री लक्ष्मी कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
श्री वासुदेव करतल पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयन्यास -

दायें हाथ की पांचों उंगलियों को मिलाकर निम्न अंगों को प्रत्येक मंत्र के साथ स्पर्श करें।

ॐ हृदयाय नमः।
नमो शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रीं शिखायै वषट्।
ॐ श्रीं श्रीं कवचाय हुं।
श्री महालक्ष्मी नेत्रत्रयाय वौषट्।
श्री वासुदेवाय अस्त्राय फट्।

तत्पश्चात् प्रत्येक मंत्र के साथ तुलसी दल यंत्र पर अर्पित करें।

ॐ विष्णवे नमः
ॐ लक्ष्मीपतये नमः
ॐ नारायणाय नमः
ॐ ऋषिकेशाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ भूतभावनाय नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ चतुर्भुजाय नमः
ॐ प्रजाधिपतये नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः
ॐ लोहिताक्षाय नमः

तत्पश्चात **श्री माला** से निम्न मंत्र की 11 माला जप करे।

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः

जीवन में प्रेम, सांमजस्य, सहभागिती की अभिवृद्धि करने की प्रार्थना करें और परिवार सहित लक्ष्मी-विष्णु आरती सम्पन्न करें। इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती है। अगले दिन यंत्र और माला को जल में विसर्जित कर दें।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. 490/-

पुरुषोतम मास – 17 मई 2026 से 15 जून 2026
पुरुषोत्तम मास एकादशी – 27 मई 2026
पुरुषोत्तम मास एकादशी 11 जून 2026
सोमवती आमवस्या – 15 जून 2026

नारायण दीक्षा

सृष्टि का प्रारम्भ भगवान विष्णु से हुआ, भगवान विष्णु ने सृष्टि की रचना एक संकल्प के रूप में की। चतुर्भुजधारी भगवान विष्णु के अंदर ज्योंहि सृष्टि रचना का संकल्प हुआ, त्योंही उनके नाभि कमल से चतुर्मुख श्रीब्रह्माजी का जन्म हुआ। इसके बाद श्रीब्रह्मा ने भगवान विष्णु की आज्ञानुसार प्राणियों को चार आकारों अर्थात् चार वर्गों अण्डज, जरायुज, स्वदेज एवं उद्भिज में विभाजित कर सृष्टि क्रम प्रारम्भ किया, भगवान विष्णु को नारायण भी कहा गया है।

नारायण पूर्ण पुरुष है और संसार का हर व्यक्ति ईश्वर की संतान है, मनुष्य जब जन्म लेता है तो वह विष्णु का ही एक अंश होता है क्योंकि उसका प्रधान कार्य सृष्टि में वृद्धि करना और उसको पालना है, यदि वह श्रेष्ठ पालनकर्ता है, तो वह अपने जीवन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के लिए क्रियाशील रहते हुए पूर्ण पुरुष स्वरूप को धारण कर सकता है और नर से नारायण बन सकता है।

भगवान विष्णु नारायण अपना आदर्श शिव को मानते है, हर व्यक्ति का यही लक्ष्य रहता है कि मैं विष्णु के समान ऐश्वर्यमान, शौर्ययुक्त, कीर्तियुक्त, लक्ष्मीयुक्त बनूं इसके साथ ही जीवन में शिव के समान आनन्दयुक्त रहूं।

ब्रह्मा ने रचना तो कर दी है किन्तु यह सब पालन और संहार अर्थात् जीवन में सद्गुणों का विकास और दुर्गुणों का विनाश, यह सब शक्तियां विष्णु और शिव के अधीन है, इसलिए जीवन में पूर्ण उन्नति का मार्ग नारायण और शिव की साधना से होकर जाता है, इसलिए अनन्त चतुर्दशी और महाशिवरात्रि का विशेष विधान है।

जो व्यक्ति इन दो दिवसों में कोई संकल्प नहीं लेता, वह अपने जीवन में कुछ काल के लिए उन्नति और भोग विलास तो अवश्य प्राप्त कर लेता है किन्तु यह उसे केवल पूर्व जन्मों के शुभ कर्म के फल स्वरूप अल्प समय के लिए प्राप्त होता है, इन गुणों को स्थायी रूप से आत्मसात कर जीवन में धन, ऐश्वर्य, ज्ञान, कीर्ति इत्यादि इन छः गुणों को व्यक्ति आत्मसात कर आंतरिक आनन्द की अनुभूति प्राप्त कर सकता है और पूर्ण आनन्द की अनुभूति तो वही कर सकता है जिसमें नारायण तत्व हो अर्थात् विष्णु के समान जीवन पालन करने की क्षमता हो नारायण तत्व के द्वारा ही जीवन को पूर्ण बनाया जा सकता है, और उसके लिए हमारे ऋषियों ने एक ही विधान बताया है कि सद्गुरु से 'नारायण दीक्षा' शुभ मुर्हुत में ग्रहण की जाएं। जिसके द्वारा व्यक्ति के रोम-रोम में नारायण शक्ति स्थापित हो और वह साधारण मनुष्य के अपेक्षा श्री से युक्त हो सकें।

– नारायण दीक्षा (प्रति चरण) – न्यौ. – 3100/–

शनि जयन्ती

16 मई 2026

तेल चढ़ाने से नहीं...

शनि साधना से बदलता है जीवन

शनि का नाम सुनते ही मन में भय क्यों उत्पन्न हो जाता है?

क्या शनि सचमुच कष्ट देने वाले ग्रह हैं, या वे हमारे जीवन के सबसे कठोरपरंतु सबसे सच्चे गुरु हैं?

एक बार मेरे पास एक साधक आया। उसे किसी ने बताया था कि उसके शनि की साढ़े साती चल रही है। उससे मुक्ति पाने के लिए वह हर शनिवार को शनि मंदिर जाकर तेल चढ़ाता था। परन्तु उसके जीवन के कष्ट समाप्त नहीं हो रहे थे। उसका स्वास्थ्य बार-बार बिगड़ जाता था, नौकरी भी प्रभावित हो रही थी और घर में भी बहुत कलह रहने लगी थी।

मैं उस साधक को लम्बे समय से जानता था। उसके पिता ने मुझसे गुरु-दीक्षा ली थी। वह स्वयं भी बहुत अच्छे स्वभाव का था। परंतु इस समय वह शनि की दशा के भय में पूरी तरह उलझ गया था। उसे लगने लगा था कि उसके जीवन में जो भी रुकावटें आ रही हैं, वे सब शनि के प्रभाव के कारण ही हैं।

वह अकेला नहीं था जिसने ऐसा सोच लिया था। आमतौर पर हमारे यहां यह मान लिया जाता है कि जब शनि की दशा या साढ़े साती आए, तो शनि मंदिर में जाकर तेल चढ़ा देने से शनि के दुष्प्रभाव कम हो जाएंगे।

लेकिन प्रश्न यह है कि क्या केवल तेल चढ़ाने से ही शनि शांत हो जाते हैं?

क्या शनि को इस प्रकार प्रसन्न किया जा सकता है?

वास्तव में, शनि को नियंत्रित करने का मार्ग केवल बाहरी कर्मकांड नहीं है। **शनि अनुशासन, तप, कर्म की शुद्धता और साधना के देवता हैं। इसलिए शनि की वास्तविक शांति और नियंत्रण केवल शनि साधना, संयमित जीवन और कर्म की शुद्धता के द्वारा ही संभव है।**

शास्त्रों में स्पष्ट विवेचन है कि कि शनि केवल मात्र एक ग्रह नहीं हैं, **शनि एक सिद्धांत हैं - कर्म और उसके परिणाम का सिद्धांत।** शनि किसी को अकारण कष्ट नहीं देते, बल्कि वे हमारे ही कर्मों का दर्पण बनकर जीवन में प्रकट होते हैं। जो बोया गया है, वही किसी समय फल बनकर सामने आता है। इसीलिए **शनि का भय वास्तव में भविष्य का भय नहीं होता, बल्कि अपने ही कर्मों के परिणाम का भय होता है।**

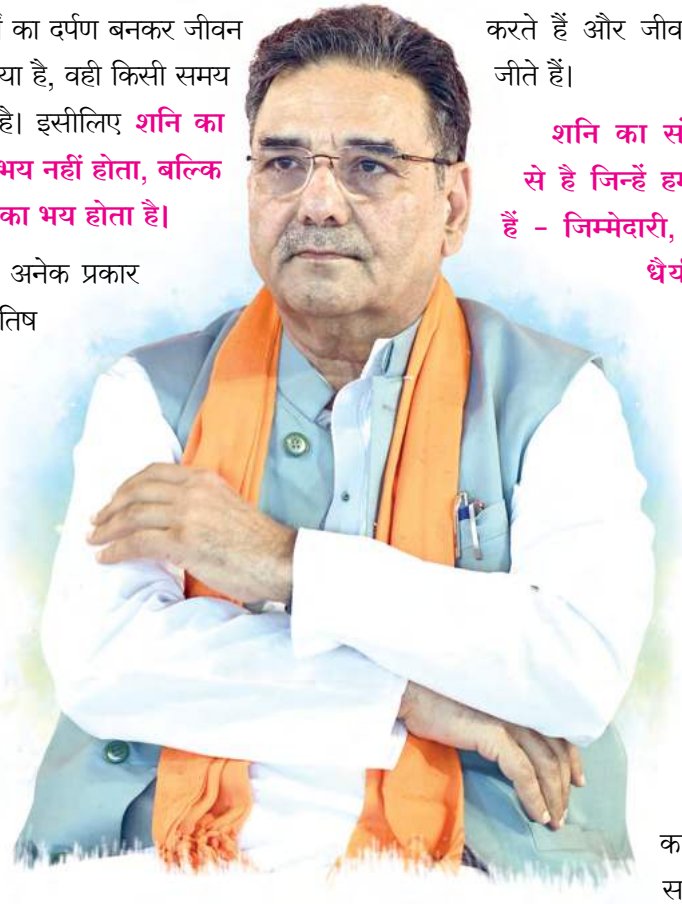

लोगों ने शनि को लेकर अनेक प्रकार की भ्रांतियां बना ली हैं। ज्योतिष की अपूर्ण जानकारी ने यह धारणा बना दी कि यदि शनि की साढ़ेसाती या ढैया चल रही हो तो शनि मंदिर में जाकर तेल चढ़ा देने से शनि शांत हो जाएंगे। यह परंपरा श्रद्धा का प्रतीक अवश्य हो सकती है, परंतु शनि के वास्तविक सिद्धांत को समझे बिना केवल बाहरी कर्मकांड से जीवन के कष्ट समाप्त नहीं होते।

शनि का स्वभाव सूर्य से बिल्कुल भिन्न है। सूर्य तेज, त्वरित परिणाम और बाहरी शक्ति का प्रतीक है, जबकि शनि संयम, धैर्य, तप और दीर्घकालिक परिपक्वता का ग्रह है। वे जीवन में तुरंत फल नहीं देते, बल्कि व्यक्ति को प्रक्रिया से गुजारते हैं। वे प्रतीक्षा करवाते हैं, परखते हैं और धीरे-धीरे मनुष्य के भीतर की परतों को हटाते हैं।

इसीलिए शनि का समय अक्सर कठिन प्रतीत होता है, क्योंकि उस समय मनुष्य को अपने जीवन की सच्चाइयों का सामना करना पड़ता है। जब बाहरी सहारे पद, प्रतिष्ठा, धन या संबंध डगमगाने लगते हैं, तब व्यक्ति असुरक्षित अनुभव करता है। पर वास्तव में शनि दंड देने नहीं आते; वे व्यक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप से परिचित कराने आते हैं।

यदि शनि के स्वभाव को समझा जाए, तो स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें प्रसन्न करने का मार्ग केवल तेल चढ़ाना नहीं है। शनि को प्रिय है - सेवा, संयम, सत्य और श्रम। वे उन लोगों से प्रसन्न होते हैं जो अहंकार त्यागकर सत्य का आचरण करते हैं, अपने कर्मों की जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं और जीवन को अनुशासन के साथ जीते हैं।

शनि का संबंध जीवन के उन पक्षों से है जिन्हें हम सामान्यतः टालते रहते हैं - जिम्मेदारी, श्रम, आत्मनिरीक्षण और धैर्य। जब व्यक्ति इन गुणों को अपनाता है, तभी शनि की कृपा प्रकट होती है। इसलिए शनि का वास्तविक उपाय बाहरी कर्मकांड नहीं, बल्कि जीवन की दिशा को सुधारना है।

इसी कारण मैंने उस साधक से कहा - 'तुम हर शनिवार को तेल चढ़ाते हो, यह श्रद्धा का कार्य है। परंतु यदि तुम सचमुच शनि के प्रभाव को समझना चाहते हो, तो तुम्हें शनि की साधना करनी होगी।'

शनि साधना का अर्थ केवल मंत्र जप नहीं है। इसका अर्थ है -

अपने कर्मों को शुद्ध करना,
अपने जीवन में अनुशासन लाना,
असत्य और अन्याय से दूर रहना,
और सेवा के मार्ग पर चलना।

जब मनुष्य अपने जीवन में सत्य, सेवा और संयम को स्थान देता है, तब शनि के दुष्प्रभाव धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं। शनि उस व्यक्ति को कभी नहीं सताते जो अपने कर्मों को स्वीकार कर लेता है और उन्हें सुधारने का साहस रखता है।

इसलिए शनि से डरने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें समझने की आवश्यकता है। तेल चढ़ाने से श्रद्धा प्रकट होती है, शनि की शक्ति तो केवल शनि साधना में है।

और जब कोई व्यक्ति साधना, सेवा और सत्य के मार्ग पर चलने लगता है, तब वही शनि जो कभी कष्ट के प्रतीक लगते थे जीवन के सबसे बड़े रक्षक और मार्गदर्शक बन जाते हैं।

कुछ दिन पहले आरोग्यधाम में उसी साधक का एक पत्र आया था, गुरुदेव, आपके निर्देशानुसार मैंने शनि साधना का संकल्प लिया और नियम पूर्वक साधना, मंत्र-जप सम्पन्न किया और साथ ही दिनचर्या में अनुशासन लाने का प्रयास किया, आलस्य का त्याग किया, सत्य का आचरण और सेवा का भाव अपनाया।

धीरे-धीरे मुझे अनुभव होने लगा कि जो भय पहले मेरे मन में था, वह कम होने लगा है। परिस्थितियां तुरंत नहीं बदलीं, परंतु मेरे भीतर धैर्य आ गया।

कुछ ही महीनों में आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखाई देने लगे। मेरा स्वास्थ्य, जो बार-बार बिगड़ रहा था, स्थिर होने लगा। नौकरी में जो अस्थिरता थी, वह भी धीरे-धीरे समाप्त हो गई। मेरे अधिकारी, जो पहले मुझसे असंतुष्ट रहते थे, अब मेरे कार्य की प्रशंसा करने लगे।

घर का वातावरण बदलने लगा, कलह समाप्त हो गई तथा शांति और समझ बढ़ने लगी है। सद्गुरु कृपा से मेरी दिनचर्या में सकारात्मकता का विकास हुआ।

सबसे बड़ा परिवर्तन यह हुआ कि मेरे मन का भय समाप्त हो गया। अब मुझे शनि से डर नहीं लगता। अब मुझे लगता है कि शनि दंड देने नहीं आए थे, बल्कि मुझे सही मार्ग पर लाने आए थे।

गुरुदेव, आज मैं यह अनुभव कर रहा हूं कि शनि साधना केवल ग्रह की शांति का उपाय नहीं है, बल्कि जीवन को सही दिशा देने का माध्यम है।

जो कष्ट मुझे पहले असहनीय लगते थे, वे अब समाप्त हो चुके हैं। मेरे जीवन में स्थिरता है, मन में विश्वास है और कार्यों में प्रगति हो रही है। मैं सदैव आपका ऋणी रहूंगा।

उस साधक का यह पत्र पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई, परंतु आश्चर्य नहीं हुआ। क्योंकि शनि का स्वभाव ही ऐसा है।

जब तक मनुष्य अपने कर्मों से भागता है, तब तक शनि उसे रोकते हैं।

पर जैसे ही वह साधना, संयम और सत्य के मार्ग पर चलने लगता है वही शनि उसके जीवन को स्थिर और मजबूत बना देते हैं।

जो व्यक्ति शनि साधना के माध्यम से अपने जीवन में अनुशासन, श्रम, सेवा और सत्य को स्थान देता है, उसके लिए शनि कष्ट के कारण नहीं, बल्कि जीवन के सबसे बड़े गुरु बन जाते हैं।

शनि जीवन का वह अध्याय हैं, जहां से वास्तविकता आरम्भ होती है। वे अचानक सब कुछ नहीं छीनते, बल्कि धीरे-धीरे उन सहारों को हटाते हैं जिन पर हमारा झूठा विश्वास टिका होता है। शनि हमें आत्म निर्भर बनाते हैं, स्वाभिमानी बनाते है, स्वयं के प्रयत्नों से कार्य सिद्ध करना सिखलाते है।

शनि का साधक परिस्थितियों से नहीं, अपने भीतर की दुर्बलताओं से लड़ना सीख जाता है...

- अप्रैल 2026 - पृष्ठ सं. 11- प्राण प्रतिष्ठा न्यौछावर - 750/-

मीमांसा

शिव सूत्र : जीवन सूत्र

आत्मा को अनुभव करो
ज्ञान को अनुभव करो
शरीर को अनुभव करो
शब्द मातृका को अनुभव करो

कश्मीर की पवित्र भूमि में एक महान साधक हुए आचार्य वसुगुप्त। वे केवल शास्त्रों के ज्ञाता नहीं थे, बल्कि उस सत्य की खोज में थे जो मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप का बोध करा सके। उनके भीतर एक ही जिज्ञासा जलती रहती थी यदि सब शिव से उत्पन्न है, तो मनुष्य स्वयं को सीमित और दुखी क्यों अनुभव करता है? वे इसी प्रश्न को लेकर साधना और ध्यान में डूबे रहते।

एक रात ध्यानावस्था में उन्हें शिव का आह्वान अनुभव हुआ। जैसे भीतर कोई दिव्य संकेत मिला हो कि **सत्य कहीं बाहर नहीं, बस जागृत होने की प्रतीक्षा में है।**

उन्हें संकेत मिला कि एक विशेष शिला पर वह ज्ञान अंकित है, जो साधकों के लिए मुक्ति का मार्ग बनेगा। प्रातः काल वे उस दिशा में चले और अंततः एक पर्वतीय शिला तक पहुंचे। जब उन्होंने उस शिला को स्पर्श किया, तो वह पलट गई या खुल गई और उस पर दिव्य सूत्र अंकित दिखाई दिए। यही सूत्र आगे चलकर शिवसूत्र कहलाए।

कश्मीरी शैव परम्परा में शिव सूत्र का वर्णन आता है। शिव सूत्र चेतना के वैदिक दृष्टिकोण का पुनरावलोकन हैं। किंवदंती के अनुसार, वासुगुप्त (लगभग 800 ईस्वी, कश्मीर में) ने स्वप्न में इन सूत्रों को देखा था। शिव सूत्रों के कारण कश्मीर शैव धर्म का विकास हुआ।

इन सूत्रों की विशेषता यह है कि वे किसी दार्शनिक ग्रंथ की तरह विस्तार नहीं करते, बल्कि अत्यंत संक्षिप्त वचनों में साधक को उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराते हैं कि तुम सीमित जीव नहीं, स्वयं शिव चेतना के ही अंश नहीं, बल्कि शिव ही हो। वसुगुप्त ने इस ज्ञान को अपने शिष्यों तक पहुंचाया और वहीं से कश्मीर शैव दर्शन की एक महान परम्परा प्रवाहित हुई।

इस कथा का सार यही है कि **ज्ञान बाहर से नहीं आता; वह भीतर जागता है। जब साधक की जिज्ञासा सच्ची हो, मन निर्मल हो और साधना परिपक्व हो जाए, तब स्वयं शिव भीतर से सत्य प्रकट कर देते हैं।** शिवसूत्र की उत्पत्ति केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि इस सत्य का प्रतीक है कि जब साधक तैयार होता है, तब ज्ञान स्वयं उसके द्वार पर आ खड़ा होता है।

प्रथम सूत्र है – चैतन्य आत्मा

आत्मा चैतन्य है, क्योंकि आत्मा ही शिव है। चैतन्यता का अर्थ है अपने भीतर चल रहे दर्शन का ज्ञान होना। **संसार दो तरह से जिया जाता है एक होता है भक्षक, जो सुखों और दुखों को भोग रहा है भोगता; और दूसरा है दर्शक या द्रष्टा, जो केवल देख रहा होता है।** उसे भोगना नहीं है। वह दूर से सब कुछ देख रहा होता है, अच्छा भी और बुरा भी। उसका स्वर भी मंद है; वह कुछ कहता नहीं, पर सुनता सब है।

लेकिन ऐसा नहीं है कि वह प्रतिकार करेगा या युद्ध लड़ेगा; वह बस अनुभव करता है क्योंकि वह चेतन है और हर अनुभूति को अवशोषित करता है।

पहला सूत्र यही है कि आत्मा चैतन्य है अर्थात जाग्रत तो है, परंतु क्रियारत नहीं होती। जैसे अर्ध-नींद में सब सुनाई देता है पर आंखें बंद रहती हैं, वैसी ही मनोदशा आत्मा की है। अनुभूति होती है पर वह भागीदारी नहीं करती।

यह ज्ञान उस सोच का एक प्रकार का प्रतिपक्ष है कि आत्मा सर्वशक्तिमान है। आत्मा की शक्ति उतनी ही प्रकट होती है जितनी हम उसके स्वर को दृढ़ होने की अनुमति देते हैं।

दूसरा सूत्र है - ज्ञानम् बन्धः

ज्ञान बंधन है। यह कैसा विरोधाभास है? ज्ञान बंधन कैसे हो सकता है? वह तो मुक्त करता है। लेकिन यह तभी संभव होगा जब ज्ञान अनुभवजन्य हो। शरीर एक पात्र है, जो अनुभव एकत्र करने आया है। ये अनुभव अच्छे हों या बुरे, दोनों उस आत्मा के हित में हैं, जो उस शरीर की चेतना है। **बिना आत्मा के शरीर का कोई मूल्य नहीं यह तो सब जानते हैं; लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि बिना शरीर के आत्मा प्रेत कही जाती है। वह भटक सकती है, पर अनुभव कैसे जोड़ेगी?**

थोड़ा ज्ञान अक्सर अलगाव पैदा करता है। इस ज्ञान के कारण लोग अपने को दूसरों से श्रेष्ठ मानने लगते हैं। उनमें यह अहंकार आ जाता है कि वे दूसरों से श्रेष्ठ हैं। यह श्रेष्ठता ज्ञान के कारण हो सकती है, जाति के कारण या धन के कारण। जबकि यथार्थ में इस विशाल सृष्टि में हम सब एक बूंद के समान हैं, और यदि एक बूंद स्वयं को दूसरी से श्रेष्ठ समझे, तो वह उसी बूंद का अज्ञान है।

ज्ञान को अर्थ प्रेम और करुणा देते हैं। इसलिए कबीर को कहना पड़ा -

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

क्योंकि ज्ञान अक्षरों में नहीं, बल्कि उन अक्षरों के मर्म में है। कितना ही पढ़ लिया जाए कि क्षमा परम धर्म है, पर जीवन में किसी को क्षमा किया ही नहीं, तो यह ज्ञान कितना खोखला है, एक बंधन की तरह जो मन को मथता रहता है।

ज्ञान के साथ एक और समस्या है, यह सोच को बांध देता है। मन की उड़ान पर ज्ञान लगाम खींच देता है, क्योंकि ज्ञान मौलिक प्रश्नों को मूर्खतापूर्ण प्रश्न कहकर हमारी जिज्ञासा को संकुचित कर देता है।

जैसे कभी किसी ने सोचा कि वृक्ष का रंग हरा क्यों है और मनुष्य का क्यों नहीं? हाँ, क्लोरोफिल इसका उत्तर है, पर किसी वयस्क में इतना साहस नहीं होता कि वह इस प्रश्न को सबके सम्मुख रख सके, जबकि एक बालक इसे निसंकोच कह सकता है, क्योंकि उसे विज्ञान का ज्ञान नहीं होता।

तीसरा सूत्र है - योनि वर्गः कला शरीरम्

यहां पर योनि का अर्थ एक शरीर है। शैव सिद्धांत के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि 36 तत्त्वों से निर्मित मानी जाती है। तत्त्व, अस्तित्व के वे मूल सिद्धांत या घटक जिनसे चेतना से लेकर स्थूल भौतिक जगत तक की पूरी रचना होती है। इन तत्त्वों के माध्यम से यह समझाया जाता है कि अनंत शिव चेतना किस प्रकार क्रमशः सीमित अनुभव, मन, इंद्रियों और अंततः भौतिक जगत के रूप में प्रकट होती है। इस दर्शन का मूल भाव यह है कि जो कुछ ब्रह्माण्ड में है वही सूक्ष्म रूप में मनुष्य के भीतर भी विद्यमान है।

इन 36 तत्त्वों का पहला स्तर शुद्ध तत्त्वों का है, जो पूर्ण चेतना का क्षेत्र है जहाँ द्वैत नहीं होता। शिव तत्त्व शुद्ध, निराकार और निष्क्रिय चेतना का प्रतीक है, जबकि शक्ति तत्त्व उसी चेतना की सृजनशील गतिशील शक्ति है। **सदाशिव तत्त्व में 'मैं' की चेतना प्रमुख रहती है और जगत**

सूक्ष्म रूप में उपस्थित रहता है। ईश्वर तत्त्व में जगत का अनुभव प्रमुख हो जाता है, और शुद्ध विद्या तत्त्व में 'मैं' और 'यह जगत' दोनों का संतुलन स्थापित होता है। यहां तक चेतना अपनी पूर्णता में रहती है।

इसके बाद चेतना सीमित अनुभव की ओर प्रवेश करती है, जिसे शुद्ध-अशुद्ध तत्त्वों का क्षेत्र कहा जाता है। यहां माया तत्त्व अनंत चेतना को सीमित अनुभव में बदल देती है।

माया के प्रभाव से पाँच आवरण या कंचुक उत्पन्न होते हैं, और छठा आवरण स्वयं माया है।

ये पर्दे चेतना की शक्ति को संकुचित कर देते हैं।

पहला पर्दा है कला, जो हमारी अनंत सामर्थ्य को सीमित कर देता है।

दूसरा पर्दा है विद्या, जो हमें मान्यता और दूसरों की स्वीकृति के अधीन कर देता है।

तीसरा पर्दा है राग या मोह, जिसमें हम बांट लेते हैं यह मेरा है, यह मेरा नहीं है। जो मेरा है, उसके लिए विशेष आग्रह और आसक्ति पैदा हो जाती है।

चौथा पर्दा है काल, जिसमें उलझकर हम अनंत चेतना को दिन-रात, महीने और वर्षों के खंडों में बांट देते हैं और फिर नए साल के आने पर प्रसन्न भी होते हैं, जबकि वास्तव में नया कुछ भी नहीं होता; जीवन तो उसी धारा में चलता रहता है।

पांचवां और सबसे महत्वपूर्ण पर्दा है पुरुष, अर्थात् 'मैं' की भावना व्यक्तिगत अस्तित्व का अनुभव।

ये पांचों पर्दे हमें उस अनंत चेतना से अलग कर देते हैं। और जब हमें पुनः उसी चेतना से जुड़ना होता है, तब इन पर्दों को हटाना पड़ता है धीरे-धीरे, एक-एक करके।

इसके बाद सृष्टि का स्थूल और मानसिक क्षेत्र आता है जिसे अशुद्ध तत्त्व कहा जाता है। यहां प्रकृति समस्त भौतिक सृष्टि का मूल कारण बनती है। **प्रकृति से बुद्धि उत्पन्न होती है, जो निर्णय की शक्ति है; बुद्धि से अहंकार उत्पन्न होता है, जो 'मैं' की भावना देता है; और अहंकार से मन की उत्पत्ति होती है, जो संकल्प-विकल्प करता है।**

इसके बाद पांच ज्ञानेंद्रियां उत्पन्न होती हैं - श्रवण, स्पर्श, दृष्टि, रस और गंध का अनुभव करने वाली इंद्रियां। इनके साथ पांच कर्मेंद्रियां आती हैं - वाणी, हाथ, पैर, उत्सर्जन और प्रजनन अंग जिनसे क्रिया सम्पन्न होती है।

इसके पश्चात पांच सूक्ष्म तत्त्व या तन्मात्राएं उत्पन्न होती हैं - शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध जो अनुभव के मूल गुण हैं।

अंत में पांच महाभूत प्रकट होते हैं - आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी, जिनसे स्थूल जगत और शरीर का निर्माण होता है।

इस प्रकार शिव की अनंत चेतना क्रमशः सीमित अनुभव, मन, इंद्रियों और भौतिक जगत के रूप में प्रकट होती है। शैव सिद्धांत का सार यह है कि मनुष्य केवल शरीर नहीं, बल्कि चेतना से पृथ्वी तत्त्व तक की सम्पूर्ण सृष्टि का सूक्ष्म रूप है। **साधना का उद्देश्य इसी यात्रा को उलट कर समझना है अर्थात् स्थूल से सूक्ष्म और सूक्ष्म से शिव चेतना तक पुनः लौटना।**

चौथा सूत्र है - ज्ञानाधिष्ठानं मातृका

ज्ञान का अधिष्ठान मातृका है।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी ।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसा-क्षिणी

देवी स्वरूप शक्ति समस्त मंत्रों में मातृका अर्थात् मूलाक्षर में प्रतिष्ठित हैं और शब्दों में ज्ञान रूप से स्थित हैं। ज्ञान में चिन्मयातीता रूप में और शून्यों में शून्यसाक्षिणी के रूप में रहती हैं। जिनके अतिरिक्त और कुछ भी श्रेष्ठतम नहीं है।

ज्ञान का स्रोत शब्द है और शब्द है ईश्वर की ध्वनि शक्ति। शब्द चेतना को प्रभावित करते हैं और चेतना हमें। हम जो भी बनते हैं, अपनी चेतना के प्रारूप के अनुसार ही बनते हैं।

इसलिए शब्दों के प्रयोग में सावधानी बरती जाती है। क्योंकि शब्द ईश्वर की शक्ति हैं, अच्छा बोलो तो विचार अच्छा होता है और बुरा कहो तो विचार दूषित होता है।

विचारों की शुद्धता शब्दों के आश्रय में फलती-फूलती है एवं शब्द मातृकाओं के अधीन हैं और वास्तव में मातृका की शक्ति को नमन है। मात्रा के अंतर से अर्थ बदल जाते हैं, दिन-दीन, जैसे मात्रा शब्द के निर्माण में सेतु है, और इस मात्रा की शक्ति मातृका हैं।

मन और तंत्र

आत्मनियंत्रण से विजय का शाश्वत मार्ग

मानव जीवन का सबसे सूक्ष्म, सबसे तीव्र और सबसे प्रभावशाली तत्व है - 'मन'। यही मन हमें ऊंचाइयों तक ले जाता है और यही मन हमें गहराइयों में भी गिरा सकता है। इसलिए भारतीय दर्शन में बार-बार यह कहा गया है - 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'। यह केवल एक कहावत नहीं, बल्कि जीवन का परम सत्य है। किसी भी युद्ध की शुरुआत बाहर नहीं, बल्कि भीतर होती है। जब मन हार मान लेता है, तब शरीर और परिस्थितियां भी हार जाती हैं; और जब मन दृढ़ हो जाता है, तब असंभव भी संभव हो जाता है।

धर्म ग्रंथों में मन की स्थिति को बहुत गहराई से समझाया गया है। भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।

मनुष्य स्वयं ही अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु है। यदि मन नियंत्रित है, तो वह हमारा सबसे बड़ा सहायक बन जाता है; और यदि अनियंत्रित है, तो वही हमारे पतन का कारण बनता है।

मन की गति संसार में सबसे अधिक तीव्र मानी गई है। एक क्षण में यह अतीत में पहुंच जाता है, दूसरे क्षण भविष्य की कल्पनाओं में खो जाता है। यह कभी स्थिर नहीं रहता, और यही उसकी सबसे बड़ी चुनौती है। **कठोपनिषद** में मन को अश्व (घोड़े) के समान बताया गया है

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।

अर्थात शरीर रथ है, आत्मा रथी है, बुद्धि सारथी है और मन लगाम है। यदि लगाम (मन) सही दिशा में है, तो रथ सही मार्ग पर चलता है; अन्यथा वह भटक जाता है।

यही कारण है कि भारतीय तंत्र परंपरा में मन को नियंत्रित करना सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। तंत्र का वास्तविक अर्थ है व्यवस्था (System)। **रुद्रयामल तंत्र और अन्य तांत्रिक ग्रंथों में यह स्पष्ट कहा गया है कि कोई भी साधना तभी सफल होती है, जब साधक का मन स्थिर और नियंत्रित हो। तंत्र केवल रहस्यमय क्रियाओं का समूह नहीं है, बल्कि यह जीवन को व्यवस्थित करने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। और व्यवस्था तभी बन सकती है, जब मन शांत और संतुलित हो।**

भगवान शिव को तंत्र का अधिष्ठाता माना गया है। वे केवल देवता नहीं, बल्कि योग और ध्यान के परम आचार्य हैं। उनका हर स्वरूप एक गहरा संदेश देता है, और उनमें से एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्वरूप है - **'चन्द्रमौलिश्वर शिव', 'चन्द्र' का अर्थ है - चंद्रमा, और 'मौलि' का अर्थ है मस्तक।** अर्थात वह स्वरूप जिसमें शिव अपने मस्तक पर चंद्रमा धारण करते हैं।

चंद्रमा मन का प्रतीक है। ज्योतिष और शास्त्रों में चंद्रमा को मन का कारक माना गया है। जब शिव अपने मस्तक पर चंद्रमा धारण करते हैं, तो इसका अर्थ है कि उन्होंने अपने मन को पूर्ण रूप से नियंत्रित कर लिया है। यही कारण है कि वे **'महायोगी'** कहलाते हैं। शिव पुराण में शिव के इस स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है -

'चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।'

अर्थात जो **चन्द्रशेखर (शिव) का आश्रय लेता है, उसे मृत्यु भी नहीं डरा सकती। 'मृत्यु' जीवन का भय है जो हमारे मन मस्तिष्क को अस्थिर कर देती है, मृत्यु केवल जीवन की नहीं, बल्कि उद्देश्यों की, लक्ष्यों की, मूल्यों की, जीवन के रिश्तों की ये सभी सब समाप्त होते है तो जीवन को अस्थिर कर देते है और ऐसे समय शिव का साधक अस्थिर नहीं होता, वो किसी काल कोठरी में खुद को बंद नहीं कर लेता बल्कि यथार्थ में उनका सामना करता है।**

शिव का यह स्वरूप हमें सिखाता है कि जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या, भय या कठिनाई से घबराने की आवश्यकता नहीं है। यदि मन नियंत्रित है, तो हर समस्या का समाधान संभव है।

शिव ने समुद्र मंथन के समय निकले विष को अपने कंठ में धारण कर लिया। यह केवल एक पौराणिक घटना नहीं, बल्कि एक गहरा प्रतीक है। विष का अर्थ है नकारात्मकता, क्रोध, द्वेष, पीड़ा और जीवन की कठिनाइयां। शिव ने उस विष को शरीर में नहीं फैलने दिया, बल्कि उसे अपने भीतर नियंत्रित रखा। यही आत्मनियंत्रण का सर्वोच्च उदाहरण है।

जीवन में विष को कैसे संभालना है, यह हमारे मन पर निर्भर करता है। यदि मन अस्थिर है, तो वही विष हमें नष्ट कर सकता है; और यदि मन स्थिर है, तो हम उस विष को भी शक्ति में परिवर्तित कर सकते हैं।

मन का नियंत्रण केवल आध्यात्मिक साधना के लिए ही नहीं, बल्कि दैनिक जीवन के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। चन्द्रमौलिश्वर शिव का ध्यान और पूजन मन को स्थिर करने का एक अत्यंत प्रभावी माध्यम है।

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्।।

जहां-जहां यह चंचल मन जाता है, वहां-वहां से उसे हटाकर आत्मा में स्थिर करना चाहिए। यही साधना है, यही आत्मनियंत्रण है।

जीवन में सफलता का एक ही मूल मंत्र 'मन पर नियंत्रण'। जब मन नियंत्रित होता है, तो व्यक्ति अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहता है, वह विचलित नहीं होता और वह निरन्तर प्रयास करता रहता है। यही निरन्तरता उसे सफलता तक पहुंचाती है।

नक्षत्र, ग्रह और मन

नक्षत्र, ग्रह और उनकी निरंतर बदलती स्थितियां मानव जीवन पर सूक्ष्म लेकिन गहरा प्रभाव डालती हैं। **ज्योतिष के अनुसार, प्रत्येक ग्रह और नक्षत्र एक विशेष ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है, जो समय-समय पर हमारे जीवन में विभिन्न परिस्थितियां उत्पन्न करता है। ये परिस्थितियां चाहे सुखद हों या चुनौतीपूर्ण सबसे पहले हमारे मन को प्रभावित करती हैं। मन ही वह केंद्र है जहां से हमारी प्रतिक्रिया, निर्णय और जीवन की दिशा निर्धारित होती है।**

जब ग्रहों की स्थिति प्रतिकूल होती है, तो जीवन में बाधाएं, असंतुलन, तनाव और असफलताएं बढ़ने लगती हैं। ऐसे समय में व्यक्ति का मन डगमगा जाता है। वह भय, चिंता और असमंजस में घिर जाता है।

यही मानसिक अस्थिरता वास्तविक नुकसान का कारण बनती है। वास्तव में, घटनाएं जितना नुकसान नहीं करतीं, उससे अधिक प्रभाव हमारी मानसिक प्रतिक्रिया करती है। यदि मन कमजोर हो, तो छोटी-सी समस्या भी बड़ी प्रतीत होती है और यदि मन मजबूत हो, तो बड़ी से बड़ी कठिनाई भी संभाली जा सकती है।

यही कारण है कि हमारे शास्त्रों में मन के नियंत्रण को सर्वोच्च महत्व दिया गया है। यदि मन स्थिर और संतुलित है, तो ग्रहों के दुष्प्रभाव भी सीमित हो जाते हैं। परिस्थितियां भले ही बदलती रहें, लेकिन व्यक्ति का आंतरिक संतुलन उसे स्थिर बनाए रखता है। वह परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेता है और सही निर्णय लेने में सक्षम होता है।

चन्द्रमौलिश्वर शिव की उपासना से साधक के भीतर मानसिक स्थिरता, धैर्य और स्पष्टता का विकास होता है। मन की चंचलता धीरे-धीरे शांत होने लगती है और व्यक्ति हर परिस्थिति में संतुलित रहने की क्षमता प्राप्त करता है। यह शक्ति उसे ग्रहों और नक्षत्रों के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त नहीं करती, लेकिन उनके नकारात्मक प्रभाव को बहुत हद तक कम कर देती है।

जीवन में घटनाएं हमारे नियंत्रण में नहीं होतीं, लेकिन उन घटनाओं पर हमारी प्रतिक्रिया पूरी तरह हमारे हाथ में होती है। मन को नियंत्रित कर लें, तो कोई भी ग्रह, कोई भी परिस्थिति हमें हानि नहीं पहुंचा सकती।

सोमवती अमावस्या - 15 जून 2026 / महेश नवमी - 23 जून 2026 / सवार्थ सिद्धि योग

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः

मन ही बंधन और मोक्ष अर्थात् आनन्द का कारण है...

चन्द्रमौलिश्वर शिव साधना

ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव और मन के माध्यम से उनका नियंत्रण

ग्रह और नक्षत्र केवल आकाश में घूमने वाले पिंड नहीं हैं, बल्कि वे ऊर्जा के स्रोत हैं, जो निरंतर मानव मन-मस्तिष्क को प्रभावित करते रहते हैं।

'ग्रहा मनसो भावः'

ग्रह मन के भावों को प्रभावित करते हैं।

ग्रह मनुष्य को सीधे प्रभावित नहीं करते, बल्कि वे हमारे विचार, भावनाएं और प्रतिक्रियाएं प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए चन्द्रमा - मन, भावनाएं, मंगल - क्रोध, ऊर्जा और इसी प्रकार शनि - धैर्य, भय, कर्मफल को प्रभावित करते है।

चन्द्रमा अशांत है, तो मन चंचल होगा। यदि मंगल उग्र है, तो व्यक्ति जल्दी क्रोधित होगा। शनि की प्रतिकूलता अधैर्य को बढ़ायेगी। महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या मनुष्य इन प्रभावों का दास है? उत्तर है नहीं, यदि मन पर नियन्त्रण है।

'समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते'

जो सुख-दुःख में समान रहता है, जिसका अपने मन मस्तिष्क पर पूर्ण नियन्त्रण है वही आनन्द अवस्था को प्राप्त करता है।

ग्रह तब अधिक प्रभावित करते है जब - ✲ मन अस्थिर हो, ✲ व्यवहार प्रतिक्रियाशील हो, ✲ भावनाएं अनियन्त्रित हो ✲ भय, क्रोध, मोह की अधिकता हो।

'मुझे क्रोध आ रहा है', यह चिन्तन ही गलत है, जबकि 'मेरे अंदर क्रोध उत्पन्न हो रहा है' और मैं इसका शमन कर सकता हूं, संयमशील चिन्तन है जो स्थिर मन मस्तिष्क से ही संभव है। यही अंतर नियंत्रण की शुरुआत है जो चन्द्रमौलिश्वर की कृपा से ही संभव है। जब हम तुरंत प्रतिक्रिया नहीं देते, बल्कि अपने मन को देखते हैं, तब ग्रहों का प्रभाव कमजोर पड़ जाता है।

शिव का चन्द्र मौलिश्वर सिद्धांत

चन्द्र अर्थात् मन और शिव अर्थात् चेतना का स्वरूप। जब शिव चन्द्र को अपने मस्तक पर धारण करते हैं, तो इसका अर्थ है-

'मन मेरे नियन्त्रण में है, मैं मन के नियन्त्रण में नहीं हूं'

यही अवस्था साधना का लक्ष्य है और इसी से ग्रहों के प्रभाव को निष्प्रभावी किया जा सकता है।

'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः'

जब चित्त की वृत्तियां रुक जाती हैं, तब ग्रहों का प्रभाव भी रुक जाता है, क्योंकि उनका प्रवेश द्वार ही बंद हो जाता है।

शनि की साढ़े साती का प्रभाव सभी पर एक समान नहीं हो पाता है क्योंकि जो व्यक्ति शनि की साढ़े साती से डरता है, चिंता करता है उसके कष्ट बढ़ते जाते है। वही जो व्यक्ति धैर्य रखता है, मेहनत करता है, कर्म पर ध्यान देता है शनि की साढ़े साती में भी सफलता प्राप्त कर लेता है। इसी कारण ग्रह दशा समान होने पर भी उसके परिणाम अलग-अलग लोगों पर अलग अलग होते है।

❊ ग्रह मन को प्रभावित करते हैं।

❊ मन चेतना को प्रभावित करता है।

❊ चेतना व्यवहार को प्रभावित करती है।

और जब साधक की चेतना में शिव स्थापित हो जाते है, **'चन्द्रमौलिश्वर'** स्थापित हो जाते है तो चेतना मन से प्रभावित नहीं होती, चेतना मन के नियन्त्रण में नहीं बल्कि मन चेतना के नियन्त्रण में आ जाता है और ग्रहों का प्रभाव, ग्रहों का उत्प्रेरक तत्व साधक को प्रभावित नहीं कर पाता है।

ग्रह और नक्षत्र प्रत्येक व्यक्ति के मन को प्रभावित करते हैं और जो मन को नियंत्रित कर लेता है, वह ग्रहों के प्रभाव से भी ऊपर उठ जाता है। चन्द्रमौलिश्वर शिव का साधक मन को साध कर जीवन में सन्तुलन को प्राप्त कर लेता है। तब ग्रह उसके जीवन में बाधक नहीं बल्कि मार्गदर्शक बन जाते है।

मन को नियन्त्रित कर ग्रहों के दुष्प्रभाव को समाप्त करने की ही साधना है - चन्द्रमौलिश्वर साधना। इस साधना के बल पर वह व्यक्ति अपने जीवन में समस्त नौ ग्रहों के दूषित प्रभावों से मुक्ति प्राप्त कर उन ग्रहों को अपने अनुकूल बनाने में सफल हो पाता है, और तब उसे जीवन में कभी भी किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं भोगना पड़ता।

व्यक्ति के जीवन में उन्नति के स्रोत हमेशा के लिए खुले रहते हैं, और वह कामयाबी की मंजिल की ओर बढ़ते हुए अपने जीवन में पूर्ण सुखी एवं सम्पन्न हो जाता है, क्योंकि इस साधना-शक्ति के द्वारा व्यक्ति/साधक एक बार में ही अपनी समस्त परेशानियों एवं बाधाओं से मुक्ति पा लेता है।

साधना-विधान

रात्रिकालीन इस साधना में बैठने से पहले साधक स्नानादि करके पूर्णतया शुद्ध होकर, पीली धोती धारण कर, ऊपर गुरु चादर ओढ़ लें, तथा अपने सामने किसी लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें और फिर आसन पर शांतचित्त तथा दत्तचित्त होकर बैठ जाएं, इसके पश्चात् तीन बार **'ॐ'** की ध्वनि का उच्चारण करने के बाद 5 मिनट तक गुरु का ध्यान करें, और प्रार्थना करें कि मुझे समस्त परेशानियों से मुक्ति प्राप्त हो, ऐसा कहकर उनसे आशीर्वाद ग्रहण करें।

तत्पश्चात् किसी प्लेट में कुंकुम से **'ॐ'** लिखकर, उसमें उस विशिष्ट चैतन्य पूरित **'रुद्राक्ष'** को स्थापित कर दें, फिर कुंकुम का तिलक करके उस पर **'ॐ चन्द्रमौलिश्वराय नमः'** मंत्र बोलते हुए 11 बार थोड़े-थोड़े चावल चढ़ाएं, तथा 11 बार इसी मंत्र से काले तिल, काली सरसों, काली मिर्च अलग-अलग चढ़ाएं, और धूप या अगरबत्ती जलाकर सरसों या तिल के तेल का दीपक जलाएं, ध्यान रहे कि पूरे साधना काल में दीपक प्रज्वलित रहे।

इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करें -

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे,
सर्पैर्भूषित कण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थ वैश्वानरे।
दन्तित्वक् कृत सुन्दराम्बर धरे त्रैलोक्य सारे हरे,
मोक्षार्थं कुरुचित्तवृत्तिमचलाम् अन्यैस्तु किं कर्मभिः ।।

चन्द्रमौलिश्वर शिव कामदेव को भस्म करने वाले हैं, आपके मस्तक से गंगा प्रवाहित हो रही है, कण्ठहार के रूप में सर्प को धारण किए हुए हैं, आपके तृतीय नेत्र से वैश्वानर अग्नि निकल रही है, हस्ति चर्म को सुन्दर वस्त्र के रूप में धारण किए हुए तीनों लोकों में अद्वितीय भगवान् शंकर, आप अपने **'चन्द्रमौलिश्वर'** स्वरूप में मेरे मन और बुद्धि को मोक्ष मार्ग की ओर प्रेरित करें अर्थात् मन और बुद्धि को सन्तुलित करें जहां आनन्द पूर्ण मोक्ष की प्राप्ति हो।

फिर साधक मन ही मन शिव के **'चन्द्रमौलिश्वर स्वरूप'** को नमस्कार कर **'रुद्राक्ष माला'** से निम्न मंत्र का 9 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।।ॐ शं चं चन्द्रमौलिश्वराय नमः।।

जप-समाप्ति के बाद गुरु-आरती करें, फिर **'चैतन्य पूरित रुद्राक्ष'** पर अर्पित सामग्रियों को रात्रि के समय पूरे घर व दुकान तथा जो भी अपके आवासीय या व्यापारिक संस्थान हैं, सब जगह छिड़क दें, जिससे दुष्ट ग्रहों का प्रभाव दूर हो सके तथा भविष्य में भी उन ग्रह-दोषों का प्रभाव न हो, इसके पश्चात् रुद्राक्ष तथा माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

यह साधना पूर्ण सफलतादायक है, जिसे पूर्ण श्रद्धा और लगन से करने की आवश्यकता है, तभी साधक को इससे निश्चित लाभ की प्राप्ति संभव है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौछावर - 670/-

जीवन एक उत्सव है। जीवन से अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं है, और जीवन रोज़ खर्च हो रहा होता है। फिर भी एक विचित्र विरोधाभास में हम सब फंसे हुए हैं। हम अच्छी वस्तुओं को 'किसी विशेष दिन', 'किसी खास अवसर' या 'भविष्य की ज़रूरत' के लिए बचाकर रख देते हैं।

कई बार तो ऐसा भी होता है कि अलमारी में चीज़ें बंद रह जाती हैं और उनका उपयोग करने वाले बड़े हो जाते हैं। जैसे कोई सुंदर सी गुड़िया डिब्बे में बंद करके अलमारी में रख दी गई और बच्चे को उससे खेलने नहीं दिया गया कि वह खेल-खेल कर उसे नष्ट कर देगी। गुड़िया तो अलमारी में ही रह गई और बच्ची बड़ी हो गई। वह कभी उस गुड़िया से खेल ही नहीं पाई, जिसके लिए वह खरीदी गई थी।

जिसके लिए गुड़िया लाई गई, उसी को उससे खेलने का अवसर नहीं मिला, ऐसे ही कितने डिनर सेट, वस्त्र और उपयोगी वस्तुएं अलमारी के अन्दर बन्द रह जाती हैं, इस प्रतीक्षा में कि कोई अच्छा दिन आएगा, जिस दिन उनका प्रयोग किया जाएगा।

सुंदर, महंगी एवं आकर्षक वस्तुएं, जिन्हें हमने बहुत सोच-विचार कर खरीदा है, उन्हें अलमारी के तहखाने में रख देने के पीछे कई मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक कारण भी होते हैं। पहला कारण है कमी का डर। हमारे भीतर कहीं यह भावना बैठी होती है कि अच्छी चीज़ें, महंगी चीजें सामान्य प्रयोग से जल्दी खराब या खत्म हो जाएंगी, इसलिए उन्हें बचाकर रखना चाहिए। यह सोच अक्सर उन पीढ़ियों से आती है जिन्होंने अभाव देखा है।

दूसरा कारण है 'विशेष समय' की प्रतीक्षा। हम सोचते हैं कि अभी सामान्य दिन है, किसी खास अवसर पर ही इन चीज़ों का उपयोग करेंगे। लेकिन जीवन का सच यह है कि अधिकांश दिन विशेष ही होते हैं और यदि हम प्रतीक्षा करते रहे तो वह 'खास दिन' कभी आता ही नहीं।

तीसरा कारण है अवचेतन में स्वयं को उस आनंद के योग्य न मानना। कई बार व्यक्ति सोचता है कि अभी मैं इतना योग्य या सफल नहीं कि इन अच्छी वस्तुओं का उपयोग करूं, इतनी उच्च सफलता को प्राप्त करूं। इसलिए वह उन्हें भविष्य के अपने बेहतर रूप के लिए सुरक्षित रखता है।

परंतु ऐसा करते हुए हम अपने भीतर छिपी एक विशेष शक्ति को अवरुद्ध कर रहे होते हैं। वह शक्ति है इच्छा शक्ति और यही शक्ति सृजन की जननी है। इच्छा ही घनीभूत होकर आवश्यकता का रूप लेती है और आवश्यकता हर स्थिति में आविष्कार की जननी बनती है।

हम सबके अंदर तीन प्रकार की शक्तियां कार्य कर रही हैं - इच्छा की शक्ति, ज्ञान की शक्ति एवं क्रिया की शक्ति। इन तीनों शक्तियों के यथोचित संयोग से सृजन होता है। जीवन का उद्देश्य प्रायः सबको भ्रम में डाल देता है। कई बार चलते-फिरते अचानक मन में यह प्रश्न उठ जाता है कि इस जीवन का लक्ष्य क्या है?

एक वाक्य में कहा जाए तो जीवन का लक्ष्य सृजन करना है। हम सब स्वयं सृजन की परिणति हैं और हमारा उद्देश्य है कि हम इस जीवन में कुछ नया रचें, इस संसार को उन्नति और श्रेष्ठता की ओर ले जाएं। सृजन करने के लिए हमें ऊर्जा या शक्ति की आवश्यकता होती है।

शक्तिविहीन व्यक्ति भला क्या सृजन करेगा और जीवन को कैसे परिवर्तित करेगा? इसलिए प्रत्येक प्राणी में सृष्टि ने तीन प्रकार की विशेष शक्तियां प्रदान की हैं।

ऊर्जा या शक्ति का वास्तविक अर्थ क्या है? शक्ति तीन प्रकार की है - इच्छा, ज्ञान और क्रिया। और यही उनका स्वाभाविक क्रम भी है। इच्छा एक तरंग है जो शांति में हलचल उत्पन्न करती है। यह हलचल या व्यवधान जीवन में आवश्यक है, क्योंकि जब तक इच्छा नहीं होगी, तब तक सृजन कैसे होगा?

इच्छा के बाद आवश्यक है ज्ञान, वह शक्ति जो इच्छा को दिशा देती है और उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। और अंत में आती है क्रिया, क्योंकि जब तक हम कुछ करेंगे नहीं, हमारी इच्छा केवल प्रतीक्षा करती रहेगी। उस दिन की, जब वह फलित और विकसित हो सके, तथा हम जीवन में कुछ नया सृजन कर सकें।

सृजन कभी कल में नहीं होता, वह हमेशा आज में घट रहा होता है। स्वयं जीवन भी भविष्य की घटना नहीं, बल्कि आज की सांसों में घट रहा है।

यदि अच्छी वस्तुएं अलमारी में बंद रह जाएं और जीवन बीत जाए, तो वस्तु तो बच जाती है, पर जीवन का आनंद छूट जाता है।

असली बुद्धिमत्ता यह है कि हम जीवन के प्रत्येक दिन को भी सुंदर बनाना सीखें। अच्छे कपड़े, अच्छी खुशबू, अच्छे बर्तन, अच्छे शब्द, अच्छा मन, अच्छाभाव ये सब जीवन को उत्सव बनाते हैं।

शायद प्रश्न यह नहीं कि वस्तु को कब उपयोग करें, बल्कि यह है क्या हम अपने जीवन को अभी, इसी क्षण, उत्सव मानने को तैयार हैं?

चिन्तन मनुष्य के जीवन का एक अत्यंत आवश्यक और श्रेष्ठ गुण है, क्योंकि यही उसे पशु से भिन्न बनाता है। जब मनुष्य अपने बीते हुए अनुभवों पर शांत मन से विचार करता है, तो वह उनसे सीख लेकर अपने भविष्य को अधिक सुदृढ़ और सफल बना सकता है। ऐसा सकारात्मक चिन्तन वर्तमान को आनंदमय और संतुलित बना देता है। परन्तु जब यही चिन्तन अनियंत्रित होकर 'चिन्ता' का रूप धारण कर लेता है, तब वह मन को अशांत, भयग्रस्त और दुखी बना देता है। चिन्ता व्यक्ति की ऊर्जा को क्षीण कर देती है और उसे वर्तमान के सुख से वंचित कर देती है।

जीवन का वास्तविक सौंदर्य वर्तमान क्षण में ही निहित है, क्योंकि भूतकाल बीत चुका है और भविष्य अभी आया नहीं है। यदि मनुष्य निरंतर अतीत की गलतियों या भविष्य की आशंकाओं में उलझा रहता है, तो वह अपने आज को खो देता है। इसलिए आवश्यक है कि हम भूत से सीखें, भविष्य के लिए योजना बनाएं, परन्तु अपना जीवन पूर्णतः वर्तमान में जीएं। यही संतुलन जीवन को सार्थक, शांत और आनंदपूर्ण बनाता है।

पुरुषोतम मास - 17 मई 2026 से 15 जून 2026

पुरुषोत्तम मास एकादशी - 27 मई 2026 / पुरुषोत्तम मास एकादशी 11 जून 2026

सोमवती आमवस्या - 15 जून 2026

या सा पद्मासना देवी पद्महस्ता पदे स्थिता।
पद्मालयां संनितां वन्दे विश्वप्रीतां नमाम्यहम्।।

स्वर्ण के समान वर्ण वाली, कमल पर विराजमान, वर-अभय प्रदान करने वाली है। भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक ज्ञान स्वरूप धन प्रदात्री भगवती कमला ही है। ऐश्वर्य, उच्चता और तेज स्वरूप गजों द्वारा आपका अभिषेक होता है, आपको मेरा नमन...

महाविद्या कमला साधना

पुरुषोत्तम मास की एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या अथवा पुरुषोत्तम मास के किसी भी दिन साधक स्नान, ध्यान कर पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठ जाएं और अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर लक्ष्मी चित्र स्थापित कर दें। लक्ष्मी चित्र के समीप ही गुरु चित्र स्थापित कर, गुरु चित्र का पंचोपचार पूजन कर लें। गुरु पूजन के पश्चात् कमला साधना में आगे का पूजन क्रम निम्न अनुसार है -

पूजन के इस क्रम में सर्वप्रथम **'मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त कमला यंत्र'** को शुद्ध जल से धो लें। इसके पश्चात् कमला यंत्र को पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर) से स्नान करायें। पंचामृत स्नान के पश्चात् पुनः शुद्ध जल से धोकर लक्ष्मी चित्र के सम्मुख रख दें। इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर नवग्रहों की शांति हेतु प्रार्थना करें -

नवग्रह प्रार्थना - *ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवन्तु।।*

नवग्रह प्रार्थना के पश्चात् एक थाली में नया पीला वस्त्र बिछाकर उसे बाजोट पर रख दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगावें। सबसे ऊपर चार फिर उनके नीचे चार-चार बिन्दियां चार पक्तियों में, इस प्रकार कुल 16 बिन्दियां लगा कर प्रत्येक बिन्दी पर एक-एक लौंग तथा एक-एक इलायची रख कर फिर इनका अष्टगंध से पूजन करें और हाथ जोड़ कर निम्न ध्यान मंत्र का उच्चारण करें -

उद्यन्मार्तण्ड-कान्ति-विगलित कवरीं कृष्ण वस्त्रवृतांगाम्।
दण्डं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम्।।
नाना रत्नैर्विभातां स्मित-मुख -कमलां सेवितां देव-देव-सर्वै
र्भार्यां रा ज्ञीं नमो भूत स-रवि-कल -तनुमाश्रये ईश्वरीं त्वाम्।।

जो साधक संस्कृत पढ़े लिखे नहीं हैं, उनको चिंता नहीं करनी चाहिए और धीरे-धीरे शब्द उच्चारण करते हुए यह ध्यान मंत्र पढ़ सकते हैं।

इसके बाद मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठियुक्त **'कमला यंत्र'** पीले वस्त्र पर जिसमें सोलह बिन्दियां लगाई हैं, उसी पर पूर्ण श्रद्धा के साथ पुष्पों का आसन देकर स्थापित करें और अष्टगंध से इस यंत्र पर सोलह बिन्दियां लगा दें।

इसके पश्चात् कमला यंत्र के चारों ओर लक्ष्मी के द्वादश स्वरूप द्वादश ज्योतिर्रत्न का स्थापन करें। ये लक्ष्मी के **महालक्ष्मी, ऋणमुक्ता, हिरण्यमयी, राजतनया, दारिद्र्य हारिणी, कांचना, जया, राजराजेश्वरी, वरदा, कनकवर्णा, पद्मासना, सर्वमांगल्या** द्वादश रूपों के प्रतीक हैं। कमला की इन द्वादश शक्तियों का पूजन अक्षत, कुंकुम, पुष्प इत्यादि से निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए करें -

ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं ऋणमुक्ता स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं हिरण्यमयी स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं राजतनया स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं दारिद्र्य हारिणी स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं कांचना स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं जया स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं राजेश्वरी स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं वरदा स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं कनकवर्णा स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं पद्मासना स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं सर्वमांगल्या स्थापयामि नमः।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मंत्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यंत्र पर पुष्प, अक्षत समर्पित करें –

विनियोग –

अस्य मंत्रस्य ब्रह्मऋषि गायत्रीच्छन्दः श्री जगन्माता महालक्ष्मी देवता श्रीं बीजं सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोग।

इसके पश्चात् न्यास सम्पन्न करें –

न्यास –

ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि।
गायत्रीश्छन्दसे नमः मुखे।
श्री जगन्माता महालक्ष्म्यै नमः।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक जलाएं, उसका पूजन करें तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें, ऐसा करने के बाद साधक इस यंत्र पर कुंकुम समर्पित करें, पुष्प तथा पुष्प माला पहनाएं, अक्षत चढ़ावें तथा नैवेद्य का भोग लगावें, सामने ताम्बूल, फल और दक्षिणा समर्पित करें।

भगवती कमला के आह्वान और पूजन के पश्चात् इस साधना में **'कवच'** पाठ का विधान है। इस दुर्लभ कवच का पांच बार पाठ करें, जो महत्वपूर्ण है, कवच पाठ से यंत्र का साधक के प्राणों से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, और साधना सम्पन्न करने पर साधक को ओज, तेज, बल, बुद्धि तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

सनत्कुमार उच्चरित लक्ष्मी तंत्र कवच है

कमला कवच

ऐंकारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्व सिद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षु युग्मे च शांकरी।
जिह्वायां मुख-वृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि।
ओष्ठाधरे दन्त पंक्तौ तालु मूले हनौ पुनः।।
पातु मां विष्णु वनिता लक्ष्मीः श्री विष्णु रूपिणी।
कर्ण-युग्मे भुज-द्वये-रतन-द्वन्द्वे च पार्वती।।
हृदये मणि-बन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः।
पृष्ठदेशे तथा गृह्ये वामे च दक्षिणे तथा।।
स्वधा तु-प्राण-शक्त्यां वा सीमन्ते मस्तके तथा।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः।।
पुष्टिः पातु महा-माया उत्कृष्टिः सर्वदावतु।
ऋद्धिः पातु सदादेवी सर्वत्र शम्भु-वल्लभा।।
वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर-गेहिनी।
रमा पातु महा-देवी, पातु माया स्वराट् स्वयं।।
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णु-माया सुरेश्वरी।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम।।
शिव-दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा।
भैरवी पातु सर्वत्र भैरुण्डा सर्वदावतु।।
पातु मां देव-देवी च लक्ष्मीः सर्व-समृद्धिदा।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्व-सिद्धये।।

यह कवच जो अपने आप में महत्वपूर्ण है, यदि साधक नित्य इसके ग्यारह पाठ करता है, तो भी उसे जीवन में धन, वैभव, यश सम्मान प्राप्त होता रहता है।

साधना में इसके पांच पाठ करें। कमला कवच के पाठ के पश्चात् **'कमल गट्टा माला'** का कुंकुम, अक्षत, पुष्प इत्यादि से पूजन करें और पूजन के पश्चात् **'कमल गट्टा माला'** से निम्न कमला मंत्र की 16 माला मंत्र जप करें।

कमला मंत्र

।। ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं क्लीं ह् सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।।

जब सोलह माला मंत्र जप हो जाय तब भगवती लक्ष्मी की विधि-विधान के साथ आरती सम्पन्न करें और उस यंत्र, माला एवं द्वादश ज्योतिर्रत्न को पूजा स्थान में रख दें।

सवा माह पश्चात् सम्पूर्ण साधना सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

– प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 750/–

महालक्ष्मी महाविद्या कमला का ही स्वरूप हैं, साधक का सौभाग्य जाग्रत होता है जब वह सद्गुरुदेव से महाविद्या कमला दीक्षा प्राप्त करता है। महाविद्या कमला साधक को सांसारिक सुख तो प्रदान करती ही हैं साथ ही साथ परालौकिकता का भी अभ्युदय होता है।

तंत्र शास्त्रों में महालक्ष्मी की पूजा महाविद्या कमला स्वरूप में ही की जाती है और लक्ष्मी से सम्बन्धित तंत्र को कमला तंत्र कहा जाता है। भगवती कमला अर्थ की अधिष्ठात्री देवी हैं। जो भौतिक सुख के इच्छुक होते हैं, उनके लिए कमला महाविद्या सिद्धि सर्वश्रेष्ठ है। कमला सर्व शक्ति प्रदायक हैं, क्योंकि कीर्ति, मति, द्युति, पुष्टि, बल, मेधा, श्रद्धा, आरोग्य, विजय आदि दैवीय शक्तियां कमला महाविद्या की अभिन्न सहयोगिनी देवियां हैं।

सद्गुरु शक्तिपात और महाविद्या साधना रहस्य -

प्रत्येक साधक साधना अवश्य ही सम्पन्न करता है पर उसे साधना का उचित परिणाम, उचित समय पर नहीं मिल पाता है और जब साधक सद्गुरुदेव से शक्तिपात प्राप्त कर साधना सम्पन्न करता है तो वह साधना फलितार्थ होती है इसीलिये शास्त्रों में गुरु द्वारा प्रदान किये गये शक्तिपात को उच्चतम् स्थान दिया गया है। शक्तिपात के माध्यम सद्गुरु शिष्य की चेतना को जाग्रत कर देते है जिससे वह दैवीय कृपा, शक्ति को ग्रहण कर सकता है।

शक्तिपात युक्त कमला महाविद्या साधना करने से -

- साधक का अपने कार्य के प्रति समर्पण बढ़ जाता है, उसके मान-सम्मान में भी वृद्धि होती है।
- नई तकनीक और नये कार्यों के प्रति रुचि बढ़ती है, आय के नये-नये स्रोत उत्पन्न होते है, जीवन में नवीनता का उदय होता है।
- साधक के विचारों, भावनाओं, चेतना में सकारात्मकता का उदय होता है।
- साधक के जीवन स्तर, स्वास्थ्य और धन में निरन्तर वृद्धि होती है।

महाविद्या कमला दीक्षा न्यौ. (प्रति चरण) - 3100/-

पुरुषोतम मास – 17 मई 2026 से 15 जून 2026

पुरुषोत्तम मास

कर्म और लक्ष्मी रहस्य

जीवन में कर्म को षोषित करने वाले देव भगवान पुरुषोतम और कर्म का पारितोषिक प्रदान करने वाली लक्ष्मी का समय-समय पर पूजन, ध्यान, साधना, तपस्या, मंत्र जप इत्यादि आवश्यक है।

दैनिक क्रम में बाधाएं, समस्याएं, अड़चनें इत्यादि तो आते ही रहते है, हार-जीत भी होती रहती है, सुख-दुःख आते जाते रहते है। परन्तु जीवन निरन्तर गतिमान रूप से इनके साथ ही आगे बढ़ता है। जीवन को आगे बढ़ाने का कार्य भगवान पुरुषोतम द्वारा किया जाता है वे अपने पोषण कार्य के द्वारा वास्तव में हमारे कर्म क्षेत्र को पोषित करते है और लक्ष्मी इसका भुगतान करती है। कर्मों में कमी, या भुगतान में कमी से जीवन चक्र उलझ जाता है।

पुरुषोतम मास इस जीवन चक्र को सुलझाने का समय है। इस काल में गृहस्थ साधकों के साधनाओं के द्वारा यह कार्य अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिये।

यह संसार कुरुक्षेत्र के सदृश है, यह बात लगभग हर व्यक्ति मानता है। कुरुक्षेत्र शब्द का शाब्दिक अर्थ है – कर्म का खेत।

संस्कृत में 'कुरु' शब्द की उत्पत्ति मूलतः 'कृ' (कृ) धातु से हुई है, जिसका अर्थ है **करना, कार्य करना या बनाना।** क्रिया रूप में 'कुरु' शब्द का अर्थ है **आदेश देना, अर्थात 'तुम यह कार्य करो'।** क्षेत्र का अर्थ है खेत।

यदि इन दोनों को जोड़ दिया जाए तो अर्थ होता है वह स्थान जहां क्रिया की जाती है। संसार में आने का अर्थ ही क्रियाशील होना है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो जन्म ले और उसके बाद उसे क्रियाशील नहीं हो एवं क्रिया का उद्देश्य फल की प्राप्ति है, फल अर्थात लक्ष्मी।

यह आवश्यक नहीं है कि यह लक्ष्मी केवल धन के रूप में ही हो। लक्ष्मी के आठ रूप बताए गए हैं, ये आठ रूप जीवन की समृद्धि और पूर्णता के आठ भिन्न-भिन्न आयामों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आदि लक्ष्मी (आद्य लक्ष्मी) – यह लक्ष्मी का मूल स्वरूप है। यह आध्यात्मिक शक्ति, संतोष और जीवन की मूल स्थिरता प्रदान करती हैं।

धन लक्ष्मी – यह धन, वैभव, सोना, रत्न और आर्थिक समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी हैं।

धान्य लक्ष्मी – यह अन्न, कृषि, भोजन और जीवन के पोषण की देवी हैं। इनके आशीर्वाद से घर में अन्न की कमी नहीं रहती।

गज लक्ष्मी – यह राजसत्ता, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य और सामाजिक सम्मान की प्रतीक हैं। प्रायः इनके साथ हाथियों का चित्रण किया जाता है।

संतान लक्ष्मी – यह संतान सुख, वंशवृद्धि और परिवार की समृद्धि प्रदान करती हैं।

वीर लक्ष्मी (धैर्य लक्ष्मी) – यह साहस, धैर्य, शक्ति और संकटों से लड़ने की क्षमता प्रदान करती हैं।

विजय लक्ष्मी – यह जीवन के संघर्षों में विजय, सफलता और उपलब्धि की देवी हैं।

विद्या लक्ष्मी – यह ज्ञान, शिक्षा, बुद्धि और विवेक प्रदान करती हैं।

इन आठों रूपों से यह स्पष्ट होता है कि **लक्ष्मी केवल धन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जीवन की समृद्धि के हर रूप में**

प्रकट होती हैं - अन्न, ज्ञान, साहस, संतान, सम्मान और विजय के रूप में भी।

और लक्ष्मी हमें इन आठों में से किसी भी रूप में चाहिए होती है। कभी धन के रूप में, कभी संतोष के रूप में, कभी ज्ञान के रूप में, तो कभी वैभव के रूप में। जीवन के विविध पक्षों में विविध प्रकार की लक्ष्मी आवश्यक है।

इसे ही शास्त्र में कर्म का फल कहा गया है। फल की आसक्ति हमें मोह में डाल देती है और फल से पूर्ण निवृत्ति हमें कर्मपथ से विमुख कर देती है।

अर्जुन भी एक समय कर्मपथ से विमुख हो गए थे और उन्हें पुनः कर्म मार्ग पर स्थापित करने के लिए ही भगवान को उन्हें उपदेश देना पड़ा।

कुरुक्षेत्र में दिए गए इस उपदेश में श्रीकृष्ण अर्जुन को अधर्म का नाश करने की प्रेरणा देते हैं।

सम्बन्धों की माया से ऊपर उठकर धर्मपथ का अनुसरण करने का उपदेश देते हैं। भगवद् गीता के 11वें अध्याय में श्रीकृष्ण अर्जुन को अपना विराट रूप दिखाते हैं, जिसे विश्वरूप भी कहा जाता है।

इस दिव्य रूप में अर्जुन ने पूरे ब्रह्माण्ड को भगवान के भीतर समाहित देखा, जिसमें अनन्त मुख, नेत्र और दिव्य आभूषण थे।

विष्णु के हाथ में सुदर्शन चक्र है। विष्णु का सबसे शक्तिशाली अस्त्र सुदर्शन चक्र है, जिसे उन्होंने अपने हाथ में धारण किया हुआ है। यह अस्त्र जिस पर भी छोड़ा जाता है, उसका संहार निश्चित होता है।

सुदर्शन चक्र का रहस्य क्या है?

सुदर्शन चक्र वास्तव में इस सांसारिक चक्र का प्रतीक है, जिसमें जन्म लेते ही हम सब उलझ जाते हैं। यह चक्र हमें इस प्रकार उलझाकर रख देता है कि हम इसके आगे देख ही नहीं पाते।

और यह उलझन लक्ष्मी की माया से उत्पन्न होती है। लक्ष्मी ही हमें मोहांध कर देती हैं, और फिर हम सही और गलत के बीच इतने भ्रमित हो जाते हैं कि अंततः स्वयं भगवान को आकर अर्जुन को ज्ञान देना पड़ता है।

अब अर्जुन तो भगवान का मित्र था, इसलिए भगवान उसके लिए प्रकट भी हो सकते थे और उसे अपना विराट रूप भी दिखा सकते थे।

परंतु सामान्य मनुष्य भगवान का सखा नहीं होता। इसलिए विष्णु ने अपने प्रिय पुरुषोत्तम मास में प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह विधान रखा है कि यदि वह उनकी पूजा करे, तो वह लक्ष्मी की प्राप्ति में आने वाली बाधाओं को पार कर सकेगा और अपने कर्मपथ को स्पष्ट रूप से देख पाएगा।

भगवान भगवान विष्णु और भगवती लक्ष्मी सृष्टि के संतुलन और संचालन के प्रतीक है। विष्णु जहां इस ब्रह्माण्ड के पालनकर्ता हैं, वहीं लक्ष्मी उस पालन के लिए आवश्यक धन, ऐश्वर्य और समृद्धि की अधिष्ठात्री हैं। यह दोनों शक्तियां एक-दूसरे की पूरक मानी जाती हैं।

विष्णु और लक्ष्मी का संबंध केवल भौतिक धन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के संतुलन, धर्म और सदाचार से भी जुड़ा है। भगवद्गीता में भगवान विष्णु (कृष्ण रूप में) कहते हैं-

'योगक्षेमं वहाम्यहम्'

अर्थात् जो भक्त श्रद्धा से उनका स्मरण करता है, उसके योग (आवश्यकताओं की प्राप्ति) और क्षेम (सुरक्षा) का वह स्वयं वहन करते हैं। यहां लक्ष्मी का स्वरूप उस 'योग' में प्रकट होता है और विष्णु 'क्षेम' के रूप में उसकी रक्षा करते हैं।

लक्ष्मी जी चंचला कही जाती हैं, अर्थात् वे स्थायी नहीं रहतीं, परन्तु जहां विष्णु का निवास होता है, वहां वे स्थिर हो जाती हैं। इसका गूढ़ अर्थ यह है कि यदि जीवन में धर्म, सत्य और संयम (जो विष्णु के गुण हैं) हो, तो धन और समृद्धि (लक्ष्मी) स्थायी रूप से बनी रहती है। मनुष्य अपने जीवन में विष्णु के गुणों को धारण करे, तो लक्ष्मी का आगमन और स्थायित्व स्वतः सुनिश्चित हो जाता है। यही इस दिव्य संबंध का वास्तविक संदेश है।

पृथ्वी से आकाश तक
मानव शरीर में पंच तत्वों की यात्रा

शास्त्र कहते हैं कि **'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'** अर्थात् जो इस सूक्ष्म शरीर में है, वही इस विराट ब्रह्माण्ड में भी व्याप्त है। **ब्रह्माण्ड पंच तत्त्वों से निर्मित है - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश।** जब शास्त्र यह उद्घोष करते हैं, तो प्रश्न सहज ही उठता है कि क्या मानव शरीर भी इन्हीं पंच तत्त्वों से बना है? और यदि ऐसा है, तो ये पंच तत्त्व हमारे भीतर किस रूप में कार्य करते हैं, तथा इनके बीच संतुलन बनाए रखना हमारे जीवन के लिए इतना आवश्यक क्यों है?

वास्तव में पंच तत्त्व केवल भौतिक घटक नहीं हैं, वे जीवन के गहरे सिद्धांतों और चेतना की अवस्थाओं को भी निरूपित करते हैं।

पृथ्वी तत्त्व हमारे जीवन की नींव का प्रतीक है। जैसे किसी वृक्ष की जड़ें उसे स्थिरता और पोषण देती हैं, वैसे ही मनुष्य के जीवन की भी एक जड़ होती है। जन्म से पूर्व बीज अवस्था में शिशु मां के गर्भ में, गर्भनाल के माध्यम से पोषण प्राप्त करता है। जन्म के समय यह नाल काट दी जाती है, पर क्या मां से जुड़ा वह सम्बन्ध वास्तव में समाप्त हो जाता है? नहीं।

मातृ-शक्ति केवल शारीरिक पोषण तक सीमित नहीं रहती, वह जीवन भर हमारे अस्तित्व की आधार शिला बनी रहती है। इस स्वरूप में मां केवल जननी नहीं, बल्कि उस जगत् जननी की शक्ति का प्रतीक है, जो सम्पूर्ण सृष्टि को धारण करती है। **जब मनुष्य अपने जीवन में स्थिरता, सुरक्षा और अपनत्व का अनुभव करता है, तब समझना चाहिए कि उसके भीतर पृथ्वी तत्त्व सन्तुलित है।**

जल तत्त्व हमारे शरीर में जीवन के प्रवाह का प्रतिनिधित्व करता है। मानव शरीर का लगभग सत्तर प्रतिशत भाग जल से बना है। कुछ ही समय तक जल न मिले तो शरीर असंतुलन का संकेत देने लगता है, गला सूख जाता है, थकान बढ़ती है और मन चिड़चिड़ा होने लगता है।

जल के बिना जीवन की कल्पना असंभव है। हमारे चेहरे की ओजस्विता, त्वचा की कोमलता और आंखों की चमक इन सबका मूल स्रोत जल है। **जल ही प्राण-शक्ति का वाहक है। वरुण की शक्ति हम अपने भीतर धारण किए चलते हैं। जल तत्त्व संयम, करुणा और भावनात्मक संतुलन प्रदान करता है।** जब शरीर और मन में जल का अभाव होता है, तब संवेदनशीलता घटने लगती है और क्रोध बढ़ जाता है।

क्रोध अग्नि तत्त्व की अभिव्यक्ति है। अग्नि का स्वभाव है जलना-जलाना और रूपांतरण करना। वह निर्माण भी कर सकती है और विनाश भी। हमारे भीतर यही अग्नि जठराग्नि के रूप में कार्य करती है, जो भोजन को पचाकर ऊर्जा में परिवर्तित करती है। केवल भौतिक भोजन ही नहीं, बल्कि मनो-भोजन अर्थात् हमारे विचार, अनुभव और भावनाएं भी इसी अग्नि में संस्कारित होती हैं।

यदि अग्नि संतुलित है, तो वह शक्ति देती है; यदि असंतुलित है, तो वही अग्नि दाहक बन जाती है। अग्नि को शीतल करने का कार्य जल करता है, इसीलिए भोजन के बाद तृप्ति और संतोष का अनुभव जल पीने पर ही स्पष्ट होता है। **जल और अग्नि का यह संतुलन ही स्वास्थ्य और मानसिक शांति का आधार है।**

भोजन से उत्पन्न ऊर्जा का उपयोग सबसे मूलभूत क्रिया में होता है श्वास-प्रश्वास में। प्रत्येक क्षण हम श्वास लेते हैं और प्रश्वास छोड़ते हैं। यह क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक जीवन है। **श्वास ही वायु तत्त्व की अभिव्यक्ति है।** वायु के बिना जीवन कुछ ही मिनटों में समाप्त हो सकता है। इतना निर्बल और असहाय है मानव जीवन वायु के सामने। वायु तत्त्व गति, संचार और जीवन-प्रवाह का प्रतीक है। जब **हमारी श्वास असंतुलित होती है, तब मन भी चंचल और अशांत हो जाता है। इसलिए प्राणायाम और श्वास-साधना के माध्यम से वायु तत्त्व को संतुलित करने पर विशेष बल दिया गया है।**

पंचम और सबसे सूक्ष्म तत्त्व है आकाश। **आकाश का अर्थ है शून्य, वह रिक्तता जिसमें सब कुछ घटित होता है।** अब प्रश्न उठता है कि शरीर में यह आकाश कहां स्थित है? **आकाश हमारे भीतर चेतना के स्तर पर विद्यमान है। ध्यान की अवस्था में यह शून्य स्वयं को प्रकट करता है। यह मस्तिष्क और अंतःकरण में निवास करता है।** जब हम बाह्य जगत की चंचलता से हटकर आंतरिक जगत की ओर उन्मुख होते हैं, तब आकाश तत्त्व अपने द्वार हमारे लिए खोल देता है। इसी शून्य में मौन है, शांति है और आत्मबोध की संभावना है।

इस प्रकार पंच तत्त्वों से निर्मित यह शरीर केवल एक जैविक संरचना नहीं, बल्कि एक जीवंत निरन्तर यज्ञ है, जिसमें निरंतर संतुलन की साधना चलती रहती है। जब इन पंच तत्त्वों के गुण संतुलित रहते हैं, तब जीवन सुखमय, स्थिर और सार्थक बनता है और जब यह संतुलन बिगड़ता है, तब रोग, अशांति और दुःख जन्म लेते हैं। इसलिए जीवन की साधना का एक गहरा अर्थ यही है कि हम अपने भीतर इन पंच तत्त्वों के संतुलन को पहचानें, समझें और सजगता के साथ बनाए रखें।

अपने शरीर के पंच तत्वों के सन्तुलन के लिये नित्य यह क्रिया करें -

1. **नित्य प्रति पूजा के समय भूमि पर आसन बिछाकर ईश्वर का ध्यान करें, इससे पृथ्वी तत्व की शक्ति आपको प्राप्त होती है।**
2. **नित्य प्रति उचित मात्रा में जल का सेवन करते रहे, जो व्यक्ति सीमित भोजन और उचित मात्रा में जल का सेवन करते है उनका शरीर सदैव स्वस्थ रहता है। कभी भी बहुत गर्म या बहुत ठण्डा जल का सेवन नहीं करें।**
3. **शरीर की अग्नि को प्रज्जवलित रखने के लिये भोजन नित्य प्रति निश्चित समय पर करें और इससे शरीर की अग्नि आपके भोजन को पचाकर पोषक तत्वों को शरीर के प्रत्येक भाग में पहुंचाती है। भूख की अग्नि को न तीव्र बनाएं और न ही बिल्कुल शांत कर दे। शुष्क अग्नि शरीर के अंगों का नाश कर देती है, पर सप्ताह में एक दिन व्रत अवश्य करें।**
4. **दिन में थोड़ी देर शांत बैठकर, नेत्र बंद कर अपने आज्ञा चक्र पर ध्यान देते हुए अपने श्वास-प्रश्वास को साक्षी भाव से देखते रहे। इससे आपका श्वसन तंत्र मजबूत होगा।**
5. **नित्य प्रति प्रातः जल्दी उठकर आकाश में उगते हुए सूर्य देव को देखें और उन्हें प्रणाम करते हुए जल का अर्घ्य दे।**

व्यवहार में पांच बातें -

1. **भूमि से जुड़े हुए काम करने वाले सामान्य व्यक्तियों से भी वार्तालाप करते रहे। अपने पद का अभिमान न करें।**
2. **सहृदय-सज्जन व्यक्तियों से मित्रता रखें। जिनके व्यक्तित्व में सरलता, तरलता और रस हो।**
3. **किसी भी क्रोध के समय तत्काल कोई निर्णय न लें। आधे घण्टे विचार कर अपनी प्रतिक्रिया दे, क्रोध की अग्नि दीर्घकालीन हानि पहुंचाती है।**
4. **नित्य प्रति प्राणायाम अवश्य करें, तेज गति से श्वास ले और धीमी गति से श्वास को छोड़े।**
5. **मन के भीतर आकाश स्थित है, जिसे ब्रह्म कहा गया है। जो शून्य का स्वरूप है उस शून्य आकाश में अपने भावों का विचरण करायें। दूषित भाव समाप्त होंगे और श्रेष्ठ भाव उदय होंगे।**

पुरुषोतम मास – 17 मई 2026 से 15 जून 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में

छः सिद्धिदायक यंत्र

कर्मशील व्यक्ति साधना के द्वारा जीवन में निरन्तर उन्नति प्राप्त कर सकता है, और इसके लिए प्रस्तुत है मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त यंत्र जो आपके जीवन में इन्द्रधनुषी रंग भर सकते हैं।

मोती चुनने के लिए सागर में गहरे उतरना पड़ता है, उसी प्रकार ज्ञान के श्रेष्ठ मोती प्राप्त करने हेतु मंत्र, यंत्र तथा तंत्र के विशाल सागर में यदि गुरु कृपा हो जाय, तो श्रेष्ठ स्वरूप प्राप्त कर सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान शिव के अमृत वचनों पर आधारित तथा महर्षि शुक्राचार्य द्वारा संहिताबद्ध, षडंग मंत्र विद्या पर आधारित महाग्रन्थ 'यंत्र चूड़ा मणि' श्रेष्ठतम ग्रन्थ कहा जा सकता है।

ये शब्द, ये प्रयोग केवल शब्द मात्र नहीं हैं, ये यंत्र तो हर घर में होने चाहिए। हर साधक को ये साधनाएं सम्पन्न करनी आवश्यक हैं। ये सिद्ध प्रयोग हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है।

कथा आती है, कि एक बार भगवान शिव, पार्वती के साथ विराजमान थे, पार्वती ने शिव से निवेदन किया, कि पृथ्वी पर इतने अधिक कष्ट क्यों हैं? मनुष्यों के चेहरों पर हर समय चिन्ता की रेखाएं क्यों बनी रहती हैं? वे लोग जो भी कार्य करना चाहते हैं वे सिद्ध नहीं होते, उनकी इच्छाएं हर समय अपूर्ण क्यों रहती हैं?

रुद्र देव ने कहा, कि पृथ्वी पर मनुष्य कार्य तो करता है, कर्मशील भी है, परन्तु उसमें कर्म को सही तरीके से करने का ज्ञान नहीं है, इसके लिए वह बारम्बार भटक जाता है। शास्त्रों के अनुसार चलता नहीं, उसमें आचार विचार की नियमितता नहीं है, हर समय अविश्वास, संदेह से घिरा रहता है, गुरु पर, साधना पर, मंत्रों पर, अविश्वास करते हुए कार्य करता है, इसलिए उसे जीवन में सिद्धि नहीं मिल पाती। पार्वती ने कहा, कि हे देव! क्या ऐसा कुछ उपाय हो सकता है, जिसे मनुष्य सरल रुप में कर सके, अपनी दिन-प्रतिदिन की चिन्ताओं को मिटा कर अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर परमतत्व को प्राप्त हो सके, मनुष्य की चिन्ताएं उसे एक चक्र में उलझाए हुए है, इसका कुछ उपाय अवश्य बतायें।

इस पर सिद्धियों के प्रदाता शिव ने जो 108 प्रयोग विशेष रुप से दिये, वे साधना के, सिद्धि के आधार है। सरलतम विधि के साथ, सरल मंत्र जप के ये प्रयोग साधक स्वयं सम्पन्न कर सकेंगे। इस में सर्वप्रथम छः यंत्रों का विवेचन एवं विधान स्पष्ट किया जा रहा है।

यंत्र साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी अनुपालना साधक को अवश्य ही करनी चाहिए। बिना जानकारी, बिना नियम, कार्य करने से सिद्धि प्राप्त नही हो सकती।

- ☆ प्रत्येक प्रयोग को तीन दिन तक विधि विधान से सम्पन्न करें, पूजन कार्य करें।
- ☆ साधना काल में ब्रह्मचर्य धर्म का पूर्ण रुप से पालन करें, ध्यान में भी शुद्धता हो।
- ☆ शुद्ध उद्देश्य और शान्त अन्तःकरण से ही प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, साधना समय को कल्प कहा जाता है, पूरे कल्प में पूर्ण विश्वास के साथ कार्य करना चाहिए, अन्यथा संदेह पूर्वक किया गया कार्य विपरीत फल देता है।
- ☆ साधना हेतु सर्वप्रथम स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर गुरु पूजन सम्पन्न करें और कुल-देवता, इष्ट देवता का भी पूजन सम्पन्न करें।
- ☆ यंत्र साधना का कार्य एकान्त में सम्पन्न करना चाहिए, साधना समय में विघ्न नहीं पड़ना चाहिए।
- ☆ सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए, और केवल दूध, फलाहार से तृप्ति नहीं हो, तो केवल सायंकाल को ही भोजन करें।
- ☆ साधना काल में भूमि पर ही शयन करें, रात्रि में जो भी स्वप्न आये, प्रातःकाल उठकर उनका विवेचन अवश्य करें, अशुभ स्वप्न आने पर उसी समय उठ कर गुरुमंत्र का जप सम्पन्न करना चाहिए।

इन नियमों को ध्यान में रखते हुए नीचे दिये गये विशेष प्रयोगों को साधक सम्पन्न कर सकते हैं। एक समय में एक ही प्रयोग सम्पन्न करें, सुबह कोई प्रयोग, दोपहर को कोई प्रयोग और शाम को कोई और प्रयोग उचित नहीं है, एक-एक करके साधना सम्पन्न की जाय।

1. ऋणमोचन यंत्र

ऋण बाधा बहुत अधिक बढ़ जाय तो किसी भी बुधवार को प्रातः जल्दी उठ कर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त धारण योग्य ताबीज रुपी यंत्र को अपने सामने एक पात्र में स्थापित करें, फिर निम्न यंत्र को अष्टगन्ध से पीले कागज पर अंकित करें। अंकित यंत्र के चारों ओर **'श्रीं'** बीज मंत्र लिखें, मध्य में जहां ॐ लिखा है उसके नीचे अपना नाम लिखें। सामने सात सुपारी रखें और प्रत्येक सुपारी के नीचे एक सिक्का स्थापित करें तथा कुंकुम चढाएं, अब इष्ट देवता, कुल देवता तथा गुरु पूजन कर मंत्र जप प्रारम्भ करें।

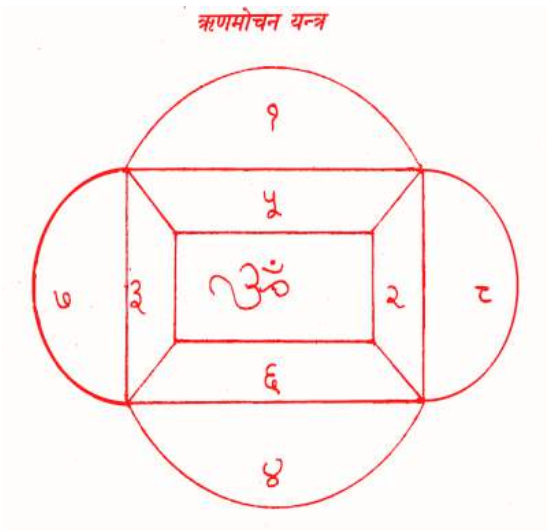

मंत्र

।।श्रीं।।

इस मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करें, तीन दिन के पश्चात् मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'धातु के ताबीज'** को काले धागे में बांध कर अपनी दाहिनी भुजा में एक माह धारण कर लें तथा एक माह के पश्चात् यंत्र ताबीज सहित शेष सामग्री को किसी शिव मन्दिर में चढा दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

प्रतिकूल परिस्थितियों में घबराहट उत्पन्न होती है और घबराहट में उसे अजीबो गरीब ख्याल आते हैं, उम्मीदें कमजोर पड़ती जाती है, धैर्य जवाब देने लगता है और ऐसी स्थिति में जो भी निर्णय लेता है, उसमें से अधिकांश गलत साबित होते हैं।

अतः सबसे महत्वपूर्ण है प्रतिकूल समय में धैर्य को बनाए रखना। धैर्य से ही कठिन से कठिन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। जिसके पास धैर्य नहीं, वह छोटी से छोटी समस्याओं का सामना भी सही तरीके से नहीं कर पाता है।

2. व्यवसाय लाभ यंत्र

सोमवार के दिन प्रातः सूर्योदय के पश्चात् उपरोक्त चित्र में दिये गये यंत्र का पूजन अष्टगन्ध से सम्पन्न करें। सर्वप्रथम गुरु पूजन, कुलदेवता, इष्ट पूजन के पश्चात् पीले कागज अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से निम्न यंत्र अंकित करें। यंत्र में अपनी दुकान अथवा व्यापार का नाम लिखें, यदि स्वयं के नाम से व्यापार कार्य हो, तो अपना स्वयं का नाम लिखें। अंकित यंत्र तथा साथ ही **धारण योग्य व्यवसाय लाभ यंत्र** स्थापित कर, पुष्प अर्पित करें तथा निम्न मंत्र की सात माला प्रतिदिन जप करें।

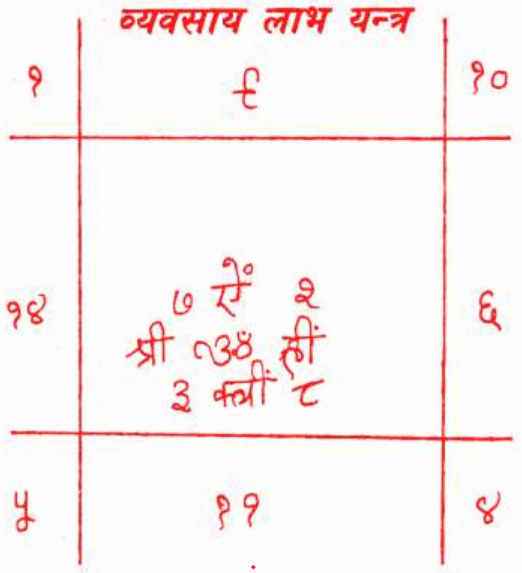

मंत्र

।। ऐं श्रीं ॐ हीं क्लीं ।।

तीन दिन मंत्र जप के पश्चात ताबीजरुपी यंत्र को गले में लाल रंग के धागे में पिरोकर धारण कर लें। सवा माह पश्चात् समस्त साधना सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

3. शत्रु विद्वेषण यंत्र

शनिवार की सायंकाल के पश्चात् इस प्रयोग को सम्पन्न करें। सर्वप्रथम साधक निम्न शत्रु विद्वेषण यंत्र का अंकन अष्टगंध से भोजपत्र अथवा पीले कागज पर करें। निम्न शत्रु विद्वेषण यंत्र में जिस स्थान पर नाम लिखा है, वहां शत्रु का नाम लिखें। यंत्र अंकन के पश्चात् साधक अपने सामने एक बाजोट पर निम्न अंकित यंत्र स्थापित कर दें तथा भात का नैवेद्य अर्पित करें। इसके पश्चात् साधक **'काली हकीक माला'** से सात माला निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र

।। ह्रीं अं ह्रीं ।।

तीन दिन के प्रयोग के पश्चात इस ताबीजरुपी यंत्र पर काला धागा बांध कर जमीन में गाड़ दें। इस यंत्र का पूजन और प्रयोग घर में नहीं करें, शिव मन्दिर में अथवा निर्जन स्थान में ही प्रयोग करना चाहिए।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/-

ज्ञान और शक्ति जीवन की विभिन्न कठिनाइयों में मदद करने के लिए सदैव साथ में चलती है...

ज्ञान शक्ति देता है और शक्ति ज्ञान प्रदान करती है...

अज्ञानी लोग थोड़ा सा काम शुरु करते हैं किन्तु बहुत ज्यादा व्याकुल होते हैं...

जबकि ज्ञानी अपने ज्ञान के धैर्य के साथ सहजता से कार्य सम्पन्न करता है...

ज्ञान शक्ति प्रदान करने वाला सबसे अच्छा और उपयुक्त साधन है..

4. अनंग यंत्र

गृहस्थ सुख जीवन का सौन्दर्य है, इसकी कमी जीवन में एक अधूरापन देती है। कई पुरुष साथी पुरुषार्थ, शौर्य, बल, सम्मोहन-आकर्षण की कमजोरी से पीड़ा ग्रस्त होते है तो कई स्त्रीयां लावण्य, माधुर्य, चंचलता, सौन्दर्य तथा सम्मोहन और आकर्षण जैसे विशिष्ट गुणों की कमी के कारण गृहस्थ सुख में पूर्ण आनन्द नहीं प्राप्त कर पाती है। उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव स्वरुप स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूर्ण अनुकूल, वश में होते है और एक-दूसरे को पूर्ण सुख प्रदान करने में सक्षम होते है।

शुक्रवार की मध्य रात्रि को इस यंत्र का अंकन कर इसको स्थापित करें और इसे गन्ध, पुष्प, नैवेद्य इत्यादि अर्पित करें। अंकित यंत्र के निकट ही ताबीज रूपी अनंग यंत्र स्थापित कर दें। साधक श्वेत वस्त्र धारण कर **'ह्रीं'** बीज मंत्र का जप करते हुए अपनी शक्तिवर्धन का स्मरण करें। फिर सात दिन तक नित्य अंकित अनंग यंत्र का पूजन कर निम्न बीज मंत्र की एक माला जप करें -

मंत्र

।। ॐ ऐं मदने मदन विद्रावणे अनंग संग मे देहि देहि क्रीं क्रीं स्वाहा ।।

सात दिन के पश्चात अनंग यंत्र को अपनी भुजा में धारण करें। यह प्रयोग निश्चय ही प्रबल प्रयोग है, जिसका प्रत्यक्ष परिणाम प्राप्त होता है। 3 माह पश्चात् समस्त साधना सामग्री को किसी पेड़ के नीचे गाड़ दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

5. लक्ष्मी विनायक यंत्र

भगवती लक्ष्मी धन की अधिष्ठात्री है तो भगवान श्रीगणेश विघ्न विनाशक है। जब विघ्नों का नाश होता है तो लक्ष्मी वहां स्थापित हो जाती है। लक्ष्मी-गणेश की पूजा से साधक के जीवन के असंभव और अधूरे कार्य भी पूर्ण हो जाते है। फिर उसे जीवन में आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है? बुधवार को प्रातः स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में एक घी का दीपक जलाएं, सामने पीला वस्त्र बिछाकर उस पर पीले कागज अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से अंकित निम्न यंत्र तथा ताबीज रूपी लक्ष्मी विनायक यंत्र को स्थापित करें। अब एक सुपारी पर मौली लपेट कर चावल की ढेरी पर स्थापित करें, तथा कुंकुम, केशर, अबीर - गुलाल, अष्टगन्ध, पुष्प, नैवेद्य से पहले गणपति का, फिर लक्ष्मी का पूजन करें। इस पूजन के पश्चात तीन माला निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

।। ॐ श्रीं ग्लौं नमः ।।

मंत्र जप पूरा होने के पश्चात इस लिखित यंत्र को पूजा में ही रहने दें और ताबीज रुपी यंत्र को अपनी दाहिनी भुजा में धारण कर लें, इसके पश्चात गणेश आरती तथा लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें। विशेष ध्यान रखें कि मृतक कार्यो में जाते समय इसे धारण न करें, तथा उतार कर अपने पूजा स्थान में रख दें, नित्य पूजन के क्रम में यंत्र को अपने सामने रखकर एक माला मंत्र जप अवश्य करें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

6. महामृत्युंजय कवच यंत्र

व्याधि, पीड़ा जीवन का अभिशाप है, बीमारी व्यक्ति के जीवन को घुन की तरह खोखला कर देती है, शरीर तो निर्बल होता ही है, मन और इच्छा शक्ति भी निर्बल हो जाते हैं और एक अज्ञात मृत्यु भय हर समय बना रहता है, इसीलिए महामृत्युंजय अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है। इसके पूजन में, जप में, वह शक्ति है, जो पीड़ा से प्रसन्नता की ओर, बीमारी से स्वस्थता की ओर तथा भय से निर्भयता की ओर ले जाती है।

किसी भी सोमवार को किये जाने वाले इस प्रयोग में प्रातः पहले स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर शिव पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात पीले कागज अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से अंकित महामृत्युंजय यंत्र को अपने सामने रख कर एक ओर धूप, अगरबत्ती जलाएं, दूसरी ओर घर में रखे किसी भी **'शिवलिंग'** को यंत्र पर रख कर चन्दन से पूजा करें, इसके सामने एक जल से भरा पात्र रखें, पूरे पूजन के दौरान **'ॐ नमः शिवाय'** मंत्र जप करते रहें साथ ही **ताबीज रूपी धारण योग्य महामृत्युंजय यंत्र** रख दें तथा इस यंत्र के चारों कोनों तथा मध्य में भी चन्दन लगाएं, इसके पहले पूजा के प्रारम्भ में ही अपना नाम, पिता का नाम तथा गोत्र (जाति) लिखें।

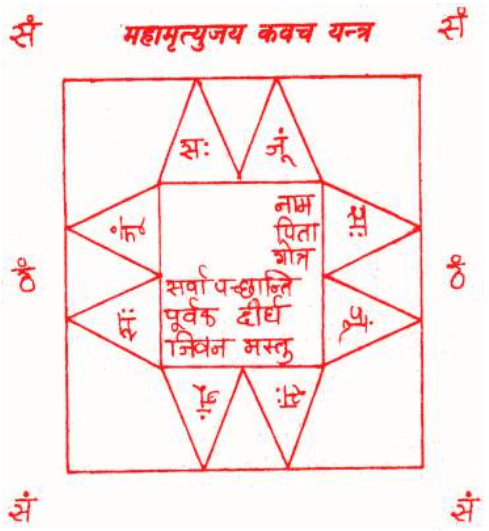

अब महामृत्युंजय की प्रार्थना करें –

प्रार्थना मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

इसके पश्चात महामृत्युंजय मंत्र की ग्यारह माला का जप करें, अब सामने रखे जल को दाहिने हाथ से खुद के शरीर पर छिड़कें, और शेष जल पी लें।

मंत्र

॥ॐ हौं जूं सः॥

यदि किसी अन्य व्यक्ति के नाम से प्रयोग सम्पन्न करना है, तो पहले दाहिने हाथ में जल ले कर यह संकल्प करें, कि मैं गुरु तथा शिव को साक्षी रखते हुए यह पूजन कार्य अमुक (व्यक्ति का नाम, उसके पिता का नाम, गोत्र) हेतु सम्पन्न कर रहा हूं, पूजन के पश्चात ताबीज धारण करा दें। शिव कृपा का यह अनूठा प्रयोग बडी से बड़ी व्याधि में भी शान्ति प्रदान करता है। यह प्रयोग अत्यन्त सरल एवं शीघ्र प्रभाव देने वाला है, जिससे समस्या के सम्बन्ध में तत्काल राहत प्राप्त हो जाय, दिये गये दिनों में निरन्तर पूजन सम्पन्न करने से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 2100/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

विशेष : साधकों को इन छः यंत्रों की साधना एवं मंत्र जप करते समय निर्देशानुसार कागज, भोजपत्र अथवा वस्त्र पर कुंकुम या केसर अथवा अष्टगन्ध से स्वयं यंत्र का अंकन करना है और उसके साथ ही ये ही यंत्र जो ताबीज रुप में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हैं, उन्हें धारण करना है।

☆ मैंने अपने शिष्यों के हृदय में आग प्रज्वलित कर दी है, प्रचण्डता से एक ज्वाला धधका दी है, जो समाज के कूड़े-करकट को जलाने में पूरी तरह सक्षम है।

☆ यह दिव्य अग्नि सक्षम है, दिमाग में जमे हुए जालों को साफ करने में।

☆ यह दिव्य अग्नि, ज्ञान अग्नि-मस्तिष्क में आलोचना, तर्क-कुतर्क का जो मैल भर गया है, उसे खाक कर देने में समर्थ है।

☆ इस ज्ञान अग्नि से शिष्य समर्थ हो गए हैं, समाज की चुनौतियों का जवाब देने में, तुर्की-ब-तुर्की उत्तर देने में, आंखें दिखाने वालों की आंखें नोच लेने में।

☆ शिष्य, पाखण्ड पर प्रहार करने में समर्थ हो गए हैं, ढोंगी बाबाओं की चालबाजियों को ध्वस्त करने में सिद्ध हो गए हैं और समाज से टक्कर लेने में समर्थ हो गए हैं।

☆ ये समर्थ हो गए हैं हिमालय को भी चूर-चूर करने में, विशाल समुद्र को उलीच लेने में और फलक को धरती पर उतार लेने में, क्योंकि मैंने इनके सीने में आग धधका दी है, जोश भर दिया है।

☆ तुम्हारा और मेरा इस जीवन का नहीं, कई-कई जन्मों का सम्बन्ध है, मैं तुमसे कई जन्मों से परिचित हूं।

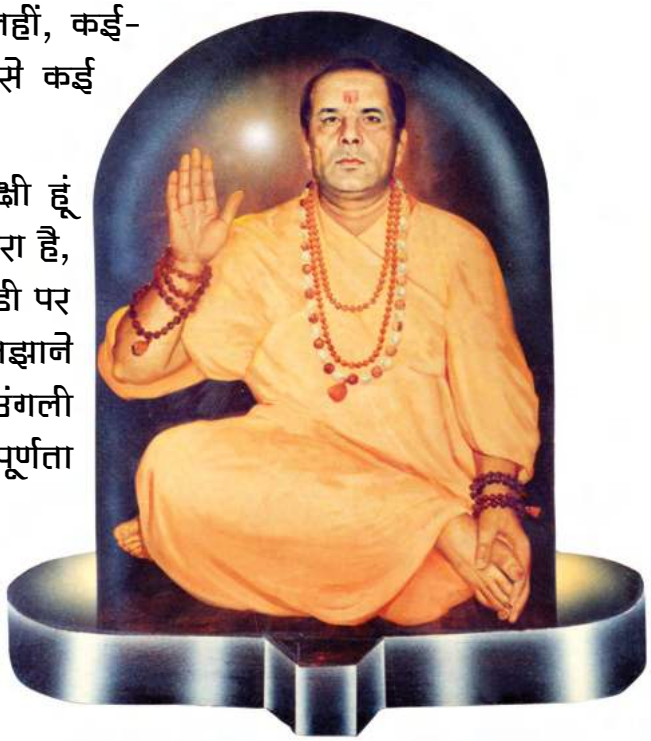

☆ पिछले पच्चीस जन्मों का तो मैं साक्षी हूं ही, और हर जीवन में मैंने तुम्हें पुकारा है, तुम्हें आवाज दी है, जीवन की पगडंडी पर चलने का आह्वान किया है और समझाने की कोशिश की है कि तुम मेरी उंगली पकड़कर चलो मैं तुम्हें निश्चय ही पूर्णता तक पहुंचा दूंगा।

☆ कई शिष्य बीच रास्ते में ही फिसल जाते हैं, मार्ग से भटक जाते हैं, अपना हाथ छुड़ाकर समाज के दलदल में उलझ जाते हैं।

☆ तुम मेरे शिष्य तो हो, तुम सयाने तो हो गए हो, पर बुद्धि के काले लबादे ने तुम्हारे व्यक्तित्व को बांधकर कसमसा दिया है।

☆ तुम्हारा और मेरा परिचय तो कई-कई जन्मों का है, पर तुम डरे हुए हो, भीरू हो, हिचकिचा रहे हो।

☆ तुम कब तक दरवाजे पर खड़े रहोगे, कब तक बाहर ठिठके रहोगे, कब तक दरवाजे की सांकल को ही खटखटाते रहोगे, कब तक संदेह-असंदेह की देहरी पर डोलते रहोगे।

☆ गुरु-हृदय के अन्दर प्रवेश क्यों नहीं कर लेते, दरवाजा तो पूरा खुला हुआ है, और जब तुम्हारा गन्तव्य, लक्ष्य ही इस द्वार में प्रवेश कर अन्दर पहुंचना है तो फिर हिचकिचाहट क्यों?

☆ युग बीत गए, सदियां बीत गईं और तुम ठिठके खड़े हो, इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

☆ बढ़ो! 'गुरु हृदय द्वार' खुद आगे बढ़कर तुम्हें निमंत्रण दे रहा है।

शिष्य धर्म

- गुरु का कर्त्तव्य है कि बराबर शिष्य पर प्रहार करे और शिष्य के पास एकमात्र विकल्प है कि उस प्रहार को सहन करे। शिष्य में सहन करने की क्षमता नहीं है तो वह शिष्य नहीं बन सकता, और गुरु में प्रहार करने की क्षमता नहीं है तो वह गुरु नहीं बन सकता।
- शिष्य के सामने यदि कोई गुरु पर प्रहार करता है... शब्दों के माध्यम से या निरर्थक प्रश्न के माध्यम से, और वह चुपचाप सुन ले, या यदि गुरु की निन्दा हो रही हो और वह सुन ले, तो उससे बड़ा पापी इस संसार में कोई नहीं।
- शिष्य की पूंजी केवल तीन चीजें होती हैं, चौथी अगर शिष्य के पास है तो वह शिष्य नहीं है। शिष्य के पास चौथी चीज होनी ही नहीं चाहिए, उसके पास केवल समर्पण होता है, उसके पास सेवा होती है, उसके पास श्रद्धा होती है।
- गुरु जैसा करे वैसा तुम्हें करने की जरूरत नहीं है, गुरु जैसा कहे वैसा करने की जरूरत है। गुरु ऐसा क्यों कर रहा है, तुम उसे अभी समझ नहीं पाओगे।
- श्रद्धा के साथ अपने-आप को पूर्णरूप से समर्पित करने की क्रिया का भी भान होना चाहिए, इसलिए नहीं कि तुम्हारे समर्पण करने से गुरु को महानता मिलती है, गुरु की महानता तो उसके ज्ञान से है।
- शिष्य में समर्थता होनी आवश्यक होती है, शिष्य में, गुरुता प्राप्त करने के लिए समर्पण का होना आवश्यक है...और समर्पण का अर्थ है 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेवं समर्पयेत्' 'मैं' कुछ हूं ही नहीं।
- गुरु कहे और शिष्य करे, वह तो मामूली मनुष्य है, और गुरु कहे शिष्य करे ही नहीं वह राक्षस है, गुरु नहीं कहे और शिष्य इशारा समझ कर करे, वह देवता है।
- यह तुम पर निर्भर है कि तुम पादपद्म बन सको, तुम विवेकानन्द बन सको। यह तुम्हारे हाथ में है, गुरु तो ज्ञान प्रदान करते है।
- जिस क्षण शिष्य के जीवन में तरंग आती है, जिस क्षण उसके जीवन में आनन्द की हिलोर आती है, तो वह निरंतर अग्रसर होता रहता है, क्योंकि लहर रुकती नहीं है। पत्थर या लकड़ी एक जगह रुक सकते हैं, लहर नहीं रुक सकती।

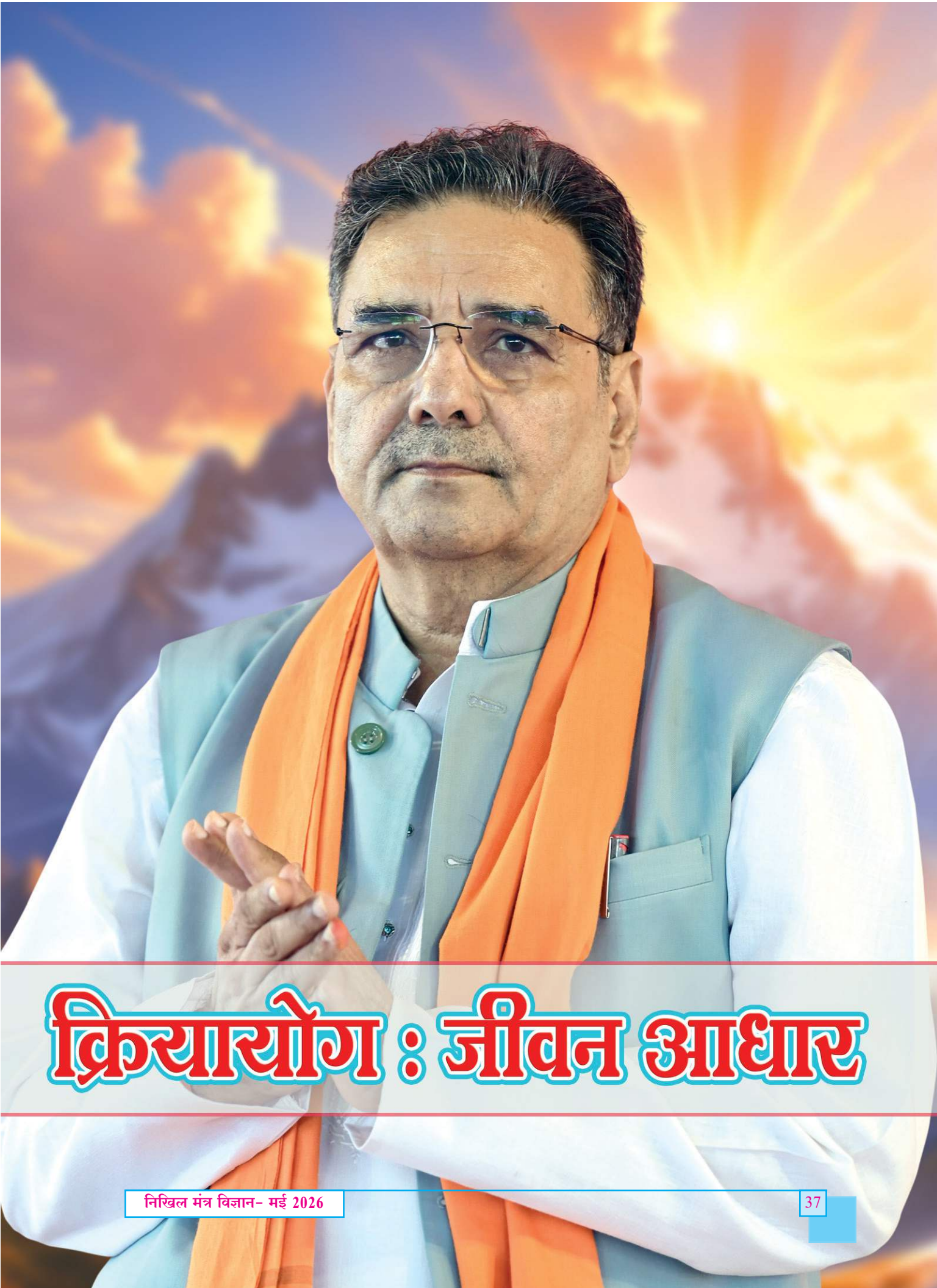

क्रियायोग : जीवन आधार

क्रियायोग का सरलतम सिद्धान्त, नववर्ष की पूर्व संध्या पर गुरुदेव का सारगर्भित प्रवचन -

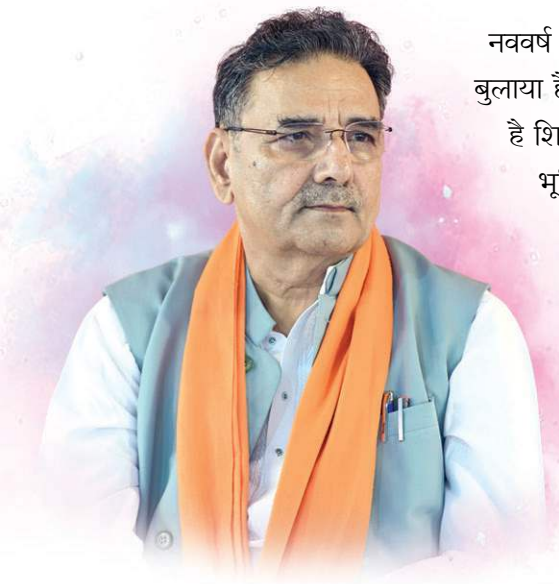

नववर्ष की पूर्व संध्या पर आपका स्वागत है, मैंने कोई लेखा-जोखा लेने के लिये नहीं बुलाया है। गुरु भविष्य का लेखा-जोखा बनाने के लिये भी नहीं बुलाते है। गुरु बुलाते है शिष्य का स्वागत करने के लिये। यह गुरुधाम, यह आरोग्यधाम निखिल की कर्म भूमि है, मेरी कर्म भूमि है और आपकी साधना भूमि है। जितना इसका अधिकार मुझे है, उतना ही आपका भी अधिकार है। यहां आपने पिछले चालीस वर्षों में करोड़ों-करोड़ों भाव अर्पण किये है। इस चैतन्य भूमि पर आपका स्वागत है।

सर्वप्रथम हम दोनों हाथ जोड़कर गुरु ध्यान करते है -

यस्मै कारणरूपाय कार्यरूपेण यत्।
कार्यकारणरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

जो इस सम्पूर्ण जगत का कारण है और ये जगत उनका ही परिणाम है। जो कारण और परिणाम दोनों की प्रकृति में समर्थ है उन सद्गुरु को मेरा प्रणाम!।

नानारूपमिदं विश्वं न केनाप्यस्ति भिन्नता।
कार्य कारण रुपाय तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

विविध रूपों वाले इस संसार में जो विविधता के कारण है और जिनके कारण ही इस संसार में विविधता है उनको मेरा प्रणाम। गुरु ही कारण और प्रभाव के रूप में चमकते है।

तो हमारे जीवन में जो कार्य, कारण रूप, स्वरूप है उन सद्गुरुदेव निखिल को, पारमेष्ठि गुरु को हमारा नमन है।

निश्चित रूप से गुरु शक्ति से ही हम कार्य करते है और उसी का स्वरूप है यह 'श्रीसायुज्य क्रियायोग महोत्सव''।

हमारे भीतर निरन्तर क्रिया होती रहे और उस क्रिया द्वारा हमें श्री की प्राप्ति हो यही तो हमारे जीवन की सबसे बड़ी मनोकामना रहती है। इस मनोकामना के लिये ही तो हम निरन्तर और निरन्तर संघर्ष करते है। यह क्रियायोग जीवन योग है।

क्रियायोग का अर्थ ध्यान योग भी है।

क्रिया योग का अर्थ एकाग्रता भी है।

क्रियायोग का अर्थ लक्ष्य सिद्धि भी है।

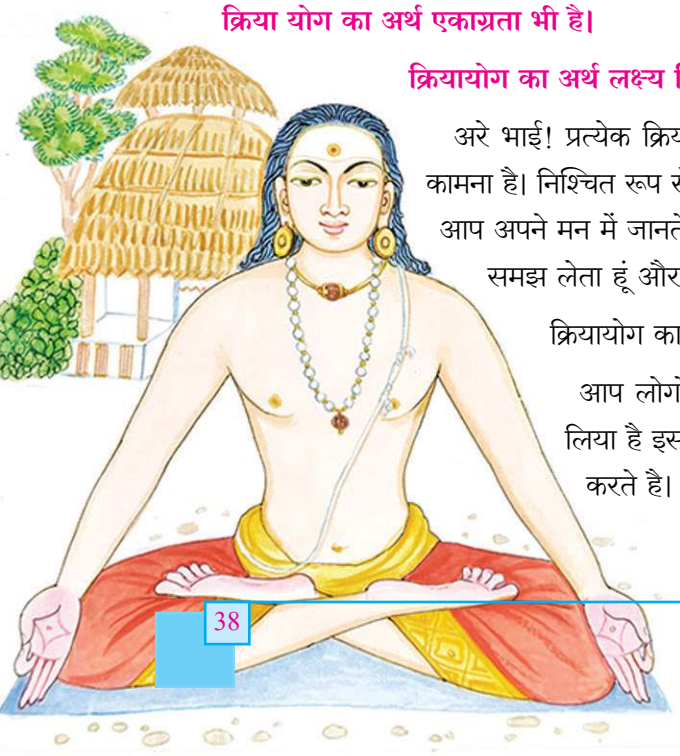

अरे भाई! प्रत्येक क्रिया फल प्राप्ति के लिये की जाती है और फल प्राप्ति आप सब की कामना है। निश्चित रूप से आज यहां गुरु के दरबार में कुछ कामनाएं लेकर आए है। ये बात आप अपने मन में जानते है और मैं आपके नेत्रों में झांक कर आपके भावों को पढ़ लेता हूं, समझ लेता हूं और मेरे भावों को आपके भीतर उतार देता हूं।

क्रियायोग का अर्थ ध्यान योग भी है।

आप लोगों ने क्रियायोग, ध्यानयोग को कोई दूसरी दुनिया की वस्तु समझ लिया है इसलिये आप क्रिया तो करते है लेकिन योग और ध्यान के साथ नहीं करते है। इस कारण क्रिया बिखरी-बिखरी रहती है।

मुझे 100 में से 80 साधक यही कहते है कि गुरुजी मेरा ध्यान नहीं लगता, गुरुजी मेरा ध्यान भटकता रहता है। जैसे ही मैं आंखें बंद करके एकाग्र होने की कोशिश करता हूं तो मेरा ध्यान कहीं से कहीं चला जाता है, ध्यान किसलिये आनन्द के लिये।

आज आनन्द उत्सव है। आनन्द के लिये ही गुरु शिष्य का मिलन हुआ है और आनन्द का आधार ध्यान और क्रिया ही है।

आप कहते हो ध्यान नहीं लगता जबकि दिन में 25 बार ध्यान का प्रयोग करते हो।

आप गाड़ी चलाते हो तो मां-बाप कहते है - ध्यान से चलाना।

पढ़ते हो तो कहते है - ध्यान से पढ़ना।

कार्य करते हो तो कहते है - ध्यान से करना, समझ कर करना। ध्यान से चलना, ध्यान से रहना।

मिलते हो और विदा होते है तो यही कहते हो ना अपना ध्यान रखना।

तो इसका अर्थ यह हुआ कि ध्यान आपके जीवन में हर बात में व्याप्त है।

ध्यान बिना जीवन शून्य।

यह ध्यान हर जगह है। हम अपना ध्यान नहीं रखें, अपने कार्य का ध्यान नहीं रखें, अपने मन का, शरीर का ध्यान नहीं रखे तो कार्य, मन और शरीर कुछ भी ठीक से नहीं चल पाता है।

इसलिये ध्यान आधार है, अब इस ध्यान को जबरदस्ती किया जाता है तब यह ध्यान भटकता है और जब मन से ध्यान करते है तो, मन से कार्य करते है तो एकाग्र हो जाता है अर्थात् ध्यान और एकाग्रता परस्पर जुड़े हुए है। एक के बिना दूसरा संभव ही नहीं है और ध्यान और एकाग्रता मिलन ही क्रियायोग है।

नित्य प्रति गुरु प्रार्थना हम सब करते है क्या बोलते है?

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदं।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।।

तो आपका ध्यान ही गुरु का स्वरूप है और गुरु के वचन ही मंत्र है। मोक्ष, मुक्ति, आनन्द ही गुरु कृपा का साकार रूप है।

कहते है ना ध्यान हटा दुर्घटना घटी, तो भाई अपना ध्यान व्यर्थ में क्यों विचलित करते हो?

चलो आज आपकी बात मान लेता हूं कि जीवन एक संग्राम है। ये आपकी बात है। आप जीवन को युद्ध मानते हो इसीलिये बहुत उठापटक है। बिना कार्य के एक क्षण भी नहीं रह सकते है। ईश्वर ने, प्रकृति ने निरन्तर कार्य करने की व्यवस्था कर दी है। स्वयं अपने शरीर को देखों, हर क्षण श्वास ले रहा है। हर समय हृदय धड़कना रहा है। रक्त वाहिनीयां सारे शरीर में रक्त पहुंचा रही है, ला रही है।

अब सोचों कुछ क्षण के लिये शरीर अपनी गतिविधियां रोक दे तो क्या होगा?

राम नाम सत्य हो जायेगा।

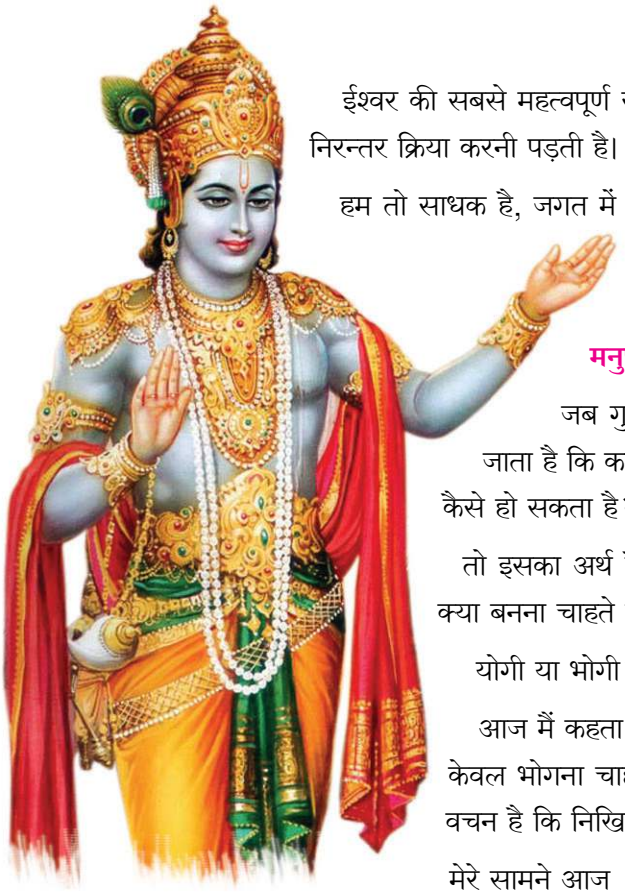

ईश्वर की सबसे महत्वपूर्ण संरचना यह शरीर ही है, इसे सुचारू रूप से चलाने के लिये निरन्तर क्रिया करनी पड़ती है। बिना थके, बिना रुके।

हम तो साधक है, जगत में प्राप्ति की इच्छा रखते है। फिर हम काम, क्रिया से पीठ कैसे मोड़ सकते है?

क्रिया करते है लेकिन मन की इच्छाएं बहुत है। इसलिये **मनुष्य कार्य करता है फल प्राप्ति के लिये।**

जब गुरु द्वारा, यहां तक की भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बार-बार कहा जाता है कि कर्म करते रहो, फल की इच्छा मत करो। तो आप कहेंगे कि ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसी भावना तो किसी योगी में ही हो सकती है।

तो इसका अर्थ है आप योगी नहीं भोगी बनना चाहते हो। सही-सही बताओं क्या बनना चाहते हो?

योगी या भोगी?

आज मैं कहता हूं कि संसार के ज्यादात्तर व्यक्ति भोगी होते है जो केवल और केवल भोगना चाहते है और वे सोचते है कि भोगने में ही आनन्द है और मेरा वचन है कि निखिल शिष्य थोड़ा भोगी है और ज्यादा योगी है।

मेरे सामने आज जो बैठे है और जो सुन रहे है वे योगी है।

योगी का अर्थ संन्यासी नहीं होता। योगी का अर्थ है - जिसने विशेष उद्देश्य से अपने आपको जोड़ दिया है क्योंकि योग का अर्थ ही जोड़ना है और योगी किस चीज से जोड़ता हैं योगी स्वयं को, अपने आपको संयम और संकल्प की शक्ति से जोड़ता है।

अरे भाई! जिसने अपने आपको संयम और संकल्प से जोड़ लिया उस योगी को संसार के सारे भोग कैसे प्राप्त नहीं होंगे? उसकी सारी कामनाएं अपने आप पूर्ण होती है क्योंकि उसने अपने आपको संयम और संकल्प की शक्ति से योग कर लिया है।

यही तो क्रिया योग है।

आज मैं एक विशेष बात कह दूं। क्रियायोग केवल श्वासों का आना-जाना देखना, अनुभव करना नहीं है।

जो गुरु अपने शिष्य को उसकी क्रिया के साथ योग नहीं करता है वह गुरु है ही नहीं।

गुरु वही है जो शिष्य के जीवन में संकल्प, संयम और क्रिया का योग कर दे और उसके लिये कोई हजार विधियां नहीं है।

उसका प्रथम चरण है अपने श्वास पर नियन्त्रण, अपने मनोभाव पर नियन्त्रण। **जहां अकारण क्रोध, घृणा, द्वेष, तुलना का भाव आया नहीं वहां जीवन में क्रियायोग छिन्न-भिन्न होने लगता है।**

अच्छा बताओं क्रिया का उल्टा क्या होता है। क्रिया का उल्टा है प्रतिक्रिया। हम सब क्रिया भी करते है और प्रतिक्रिया भी करते है।

मैं आपसे ही पूछ रहा हूं किसके जीवन में आनन्द रहेगा? क्रियायोग करने वाले के जीवन में या प्रतिक्रिया करने वाले के जीवन में?

आप जानते हो ना क्रिया करने वाले की जीवन में ही आनन्द रहेगा। क्रिया योग करने वाले का पहला सिद्धान्त है श्वास पर नियन्त्रण और इससे भावों पर भी नियन्त्रण प्राप्त हो जाता है।

इसीलिये बार-बार कहा जाता है कि अपने श्वासों का प्रवाह देखों, उसका आना-जाना देखों, कहीं अनियन्त्रित तो नहीं हो रहा है।

मेरे पास एक शिष्य आया उसका स्वभाव बड़ा क्रोधी था और उसके कारण अनेक गलतियां भी की थी।

आप भी देख लेना आपके जीवन में जो भी गलतियां हुई है वह क्रोध के कारण ही हुई है, विचार करो, खुद की गलतियों के बारे में।

उस शिष्य को बहुत क्रोध आया, बॉस से झगड़ा हो गया था। त्याग पत्र, नौकरी से इस्तीफा दे दिया। मेरे पास आया और कहा कि गुरुदेव बहुत बड़ी गलती हो गई है। मुझको समझ में नहीं आता कि मैं अपने भावों को, क्रोध को कैसे कंट्रोल करूं? आप तो मुझे मन के भावों को कंट्रोल करने की कोई साधना दे दो। ऐसा कोई मंत्र दे दो जिससे मैं अपने भावों को कंट्रोल कर सकूं।

मैंने उसके सिर पर हाथ रखकर शक्तिपात किया और धीरे से बोला - प्रिय शिष्य, तुम क्रोध में अपने श्वास की गति को धीमी कर लो। गहरी श्वास लो और किसी भी प्रतिक्रिया से पूर्व तुम 24 घण्टे का समय दो।

बस 24 घण्टे तुम प्रतिक्रिया नहीं करोगे।

कुछ दिन बीते वह मेरे पास आया एवं कहा कि गुरुदेव! आपने कमाल कर दिया। मेरा अकारण क्रोध बिलकुल शांत हो गया है तथा क्रोध के शांत होने के बाद मेरे जीवन में एक चमत्कार हुआ। कुछ दिन पहले मेरे बॉस का फोन आया, 'उन्होंने कहा गुस्सा ठण्डा हो गया तो काम पर वापस आ जाओ।'

अब कहानी सुनने में मुझे आनन्द आ रहा था। मैंने कहा ऐसा कैसे हुआ?

उसने कहा ऑफिस में हर कोई जानता था कि मुझे गुस्सा बहुत आता है। एक दिन बाजार में मेरी गाड़ी को मेरे सहकर्मी ने ठोक दिया। मैं बाहर उतरा एवं आपकी आज्ञानुसार धीरे-धीरे श्वास लिया, फिर उसे देखा नमस्ते किया एवं कोई प्रतिक्रिया नहीं की। मैकेनिक से काम का एस्टीमेंट लिया एवं अगले दिन उसे बिल दे दिया। उसने पैसे दिए, पर वह आश्यर्चचकित था कि मैं इतना शान्त कैसे रहा, तमाशा नहीं किया।

उसने बॉस को बताया एवं बॉस हतप्रभ हो गये और मुझे फोन किया।

मैंने कहा देखो, **तुमने संयम से जग जीत लिया।**

पहले अपने आप को जीतो, फिर जग जीता जाता है।

जग को जीतने का अर्थ है फल की प्राप्ति और आप सबने फल का अर्थ लक्ष्मी सोच लिया है। पर लक्ष्मी का स्वभाव तो चंचल है।

पर हमें ऐसी लक्ष्मी चाहिये जो स्थिर हो, ऐसा नहीं कि आज रहे और कल नहीं रहे। जैसे लॉटरी लग जाये और आप बन गये करोड़पति और साल भर में वापिस खकपति।

करोड़पति से मुझे याद आया कि मैंने देखा कि केबीसी सीरियल में कई लोग एक करोड़, पांच करोड़ तक जीत जाते है। एक दिन गुगल कर उन सबकी स्टोरी छानी। तो मालूम पड़ा की 10 में से 7 ने तो अपना पूरा पैसा शौक मौज और दिखावे में खर्च कर दिया। वॉपिस वहीं अपने पुराने ढर्रे पर जिन्दगी जी रहे है। क्योंकि एकाएक लक्ष्मी आ गई थी।

एक राजस्थानी में कहावत है - शायद आपके यहां भी होगी। कि **जब लक्ष्मी आती है तो छाती पर लात मारती है और मनुष्य बड़ा ही तना-तना, सीना फुलाकर चलता है और जब लक्ष्मी जाती है तो पीठ पर लात मारकर जाती है जिससे मनुष्य एकदम झुका-झुका, दबा-दबा चलता है।**

अरे भाई! हमें ऐसी लक्ष्मी नहीं चाहिये कि आप कुछ काल के लिये तन गये, कुछ काल के लिये झुक गये। हमें तो लक्ष्मी चाहिये जो चिर स्थाई हो।

कहते है - दादा हरजे पोता भोगे, ऐसी लक्ष्मी हो कि हमारे पुत्र-पुत्रियां और उनकी संताने सुख से रहे। आने-जाने वाली नहीं चाहिये।

ऐसी लक्ष्मी है - श्री और आज यह 2 दिनों का श्री सायुज्य क्रियायोग का उद्देश्य है कि हमारे जीवन में लक्ष्मी चिर स्थाई हो।

आप सब जानते हो भाई, काम के बिना फल मिलता नहीं है। मैं एक विशेष बात कह रहा हूं - **काम के बाद फल मिलना ही पर्याप्त नहीं है। हमें तो ऐसा फल प्राप्त हो जिसमें हमारा कल्याण हो।**

ये जो कल्याण का भाव है, श्री का भाव है। लक्ष्मी-लक्ष्मी सबको प्रिय लगती है लेकिन आपकी लक्ष्मी के साथ श्री संयुक्त है या नहीं है यह आपको भाव प्राप्ति आपका ज्ञान देता है।

गुरु प्रार्थना में कहते है -

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन श्लाकया
चक्षुरन्मीलितं तस्मै श्री गुरुवै नमः

जिसने ज्ञान अंजन रूपी श्लाका से, तीली से अज्ञान रूपी अंधकार से अंधे हुए लोगों की आंखें खोल दी हो और ज्ञान नेत्र खोल दिये है उन गुरु को नमन है।

गुरु क्या देते है? केवल क्रिया का भाव नहीं, क्रियायोग का भाव देते है और क्रियायोग का भाव है - प्रेम का भाव।

संसार में सबसे सुखी व्यक्ति कौन है? जो प्रेममय हो। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसे प्रेम नहीं चाहिये।

प्रेम को संसार का जल कहा जा सकता है। **इस प्रेम जल में सबकुछ अंकुरित हो सकता है। जब हम प्रेम में होते है तो हम आनन्दित रहते है। हम प्रसन्न रहते है।**

अब आनन्दित रहना हम सब का स्वभाव है, पर हमने क्या किया आनन्द के लिये हजार शर्ते लगा दी।

यह मिल गया तो मैं आनन्दित हो जाऊंगा।

वह मिल गया तो मैं खुश हो जाऊंगा।

इसलिये होता यह है कि आनन्द आपको छू कर निकल जाता है। मैं तो स्पष्ट कहता हूं कि इसका अर्थ है आपके भीतर प्रेम की अनुभूति मंद हो गई है।

आज गुरुधाम में बैठे, आरोग्यधाम में बैठे तो हम समझे कि **हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण तत्व क्या है? हमारे जीवन में तीन तत्व महत्वपूर्ण है –**

1. ऊर्जा अर्थात् शक्ति 2. समय अर्थात् महाकाल 3. धन अर्थात् लक्ष्मी शक्ति।

पूरे जीवन आप इन तीनों के बीच बैलेंस बनाने की कोशिश करते रहते है।

ध्रुव सत्य क्या है? जब यह तीनों शक्तियां आपके जीवन में समभाव में रहेगी तो जीवन में आनन्द प्रवाहित होगा।

लेकिन एक बड़ी समस्या है, इन तीनों शक्तियों के बीच साम्य भाव कम होता है। **बचपन में क्या होता है – ऊर्जा और समय होता है तो धन नहीं होता।**

यौवन में धन और ऊर्जा है लेकिन भागदौड़ इतनी है कि समय नहीं।

वृद्धावस्था में में समय और धन है लेकिन हमारी ऊर्जा शक्ति क्षीण हो जाती है।

तो क्रियायोग का सूत्र है। ऊर्जा अर्थात् शक्ति, समय अर्थात् महाकाल, धन और लक्ष्मी को समत्व में रखने का। जब हम समत्व में रखते है तो हमें अपने जीवन में आनन्द अनुभव होता है। त्तैतरीय उपनिषद् का श्लोक है –

आनन्दो ब्रह्मेति व्याजानात्।
आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते।
आनन्देन जातानि जीवन्ति।
आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति।

आनन्द ब्रह्म है। आनन्द से ही सब भूत उत्पन्न हुए है, उत्पन्न होने के बाद आनन्द से ही जीवित रहते है, आनन्द में ही अन्त में विलीन हो जाते हैं।

सुखं वै जीवनं नाम आनन्दं,
सन्तुष्टिः सर्वेषु विभावयेत।
अनन्यचिन्तनं सदैव जीवितं,
शोकादिमोक्षेण प्रमुच्यते जनः।।

जीवन वास्तव में आनंद का नाम है, सबको संतुष्ट रहना चाहिए। अनन्य चिंतन अर्थात् ईश्वर को साक्षी रखकर हमेशा जीवन जीना चाहिए, दुःख और अन्य बंधनों से छूट जाता है इंसान।

आनन्द में हम ईश्वर की अनुभूति करते है, हम प्रेममय हो जाते है इसीलिये ईश्वर का दूसरा नाम सच्चिदानन्द है।

सच्चिदानन्द अर्थात् सत्+चित्+आनन्द।

हमें रखनी है आनन्द की अनुभूति निरन्तर इसलिये हमें दो तत्वों को मिलाना ही पड़ेगा जिसका नाम है श्री और क्रिया।

जिस क्रिया में श्री नहीं हो, वह क्रिया नहीं करनी है। जिस श्री में क्रिया नहीं हो वह श्री अधूरी है।

आनन्द के बारे में आप सब बहुत उत्सुक हो, यही प्राप्त करना चाहते है और आप जानते हो कि आनन्द कभी स्थिर नहीं होता, इसीलिये दौड़ लगी हुई है आनन्द को खोजों, आनन्द को खोजों। पश्चिमी संस्कृति में इसे Pursuit of happiness अर्थात् खुशी की तलाश, **आनन्द का पीछा करो लेकिन क्या पीछा करने से कुछ मिलता है?**

अच्छा, मैं बात अलग तरह से समझाता हूं। आप सब जानते हो कि कोई घटना घटित हो जाती है तो पुलिस हमेशा देर से पहुंचती है।

ऐसा क्यों?

इसका कारण है कि संसार में चोर है तो पुलिस है। अब संसार में कोई अपराध ही नहीं हो तो क्या पुलिस की आवश्यकता होगी?

नहीं होगी ना, इसीलिये चोर-पुलिस भागम-भाग में चोर आगे पुलिस पीछे होती है। **आप जिस चीज का भी पीछा करेंगे वह हमेशा आपसे आगे रहेगी।**

यदि आप आनन्द को प्राप्त करना चाहते है, आनन्द के स्थाई भाव से प्राप्त करना चाहते है अपने पास रखना चाहते है तो आनन्द का पीछा मत करो।

एक कथा याद आ रही है मुझे, ध्यान से सुनना -

बौद्ध धर्म के संस्थापक हुए भगवान बुद्ध और उनके शिष्य हुऐ आनन्द और कथा में कहा जाता है कि आनन्द अपने जीवन में बुद्ध के पीछे छाया के समान चलते रहे।

कितना गंभीर अर्थ है - **पश्चिम कहता है आनन्द का पीछा करो, पूर्व कहता है यदि जीवन में संयम और संकल्प है, बुद्ध भाव है तो आनन्द आपके पीछे-पीछे चलेगा।**

आपके पीछे-पीछे आनन्द आना चाहिये।

बहुत लम्बे-चौड़े सिद्धान्त मत बनाओं, मैं मूल क्रियायोग समझा रहा हूं।

यह जीवन हमें दो ही चीजें सीखने के लिये मिला है।

1. क्रिया करना - सीखने के लिये। 2. सब्र अर्थात् धैर्य सीखने के लिये।

बाकी सब मोह-माया है।

जीवन दो बातों के लिये ही मिला है। जिसने इनको सीख लिया, उसने क्रियायोग सीख लिया। आप क्या कहते है? संसार के लोग क्या कहते है। हम जीवन में छोटे-छोटे लक्ष्य बनाते है और इन लक्ष्यों को बनायें बिना, जीवन में सुख मिलेगा या नहीं मिलेगा यह भी निश्चित नहीं है।

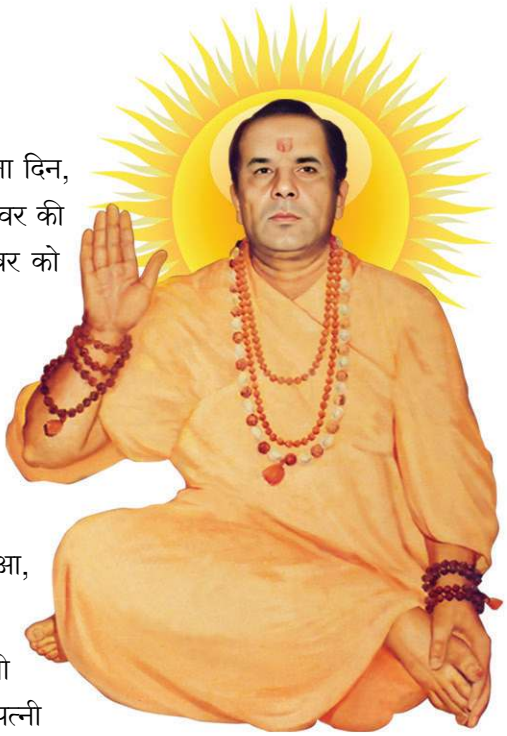

एक बात कह रहा हूं, सोंचों -

आप जिस नौकरी को चाहते थे, वह मिल गई। नौकरी का पहला-पहला दिन, आपको नौकरी पर जाना था लेकिन रास्ते में बहुत भीड़-भाड़ थी, आप ईश्वर की दया से बचते-बचाते पहुंच गये। ऑफिस पहुंच कर आपने गुरु को, ईश्वर को धन्यवाद दिया कि आपकी कृपा से आज का शुभ दिन आया।

एक बार भी भीड़ भरे सफर ने आपका मुड खराब नहीं किया क्योंकि भीड़ का मिलना तो रूटीन है। उसके लिये स्पेशल दिन को क्यों खराब किया जाये।

अभी आप इस शिविर में आ रहे हो, आपकी ट्रेन 4-6-8 घण्टे लेट हो गई आप पहुंच गये और धन्यवाद दिया कि कोई बात नहीं लेट हुआ तो हुआ, मैं गुरुजी के पास पहुंच गया।

चलो, एक और उदाहरण बताता हूं। आपकी पदोन्नति हुई है, नौकरी लगी है, महत्वपूर्ण कार्य पूरा हुआ है। अब आपके घर में आपकी मां ने, आपकी पत्नी ने छुट्टी के दिन हवन रख दिया और मां ने आपको शॉपिंग लिस्ट दी और कहा कि गुरु जी ईश्वर को धन्यवाद देने के लिये हवन है। तुम बाजार जा कर यह सामान लेकर आ जाओं। अब नवरात्रि के कारण मार्केट में बहुत भीड़ है। सामान तो ले आये, बाजार में गाड़ी भी दूर खड़ी करनी पड़ी। कैसे ही करते, हांफ्ते दौड़ते सामान ले आये और घर आकर गुस्सा किया और कहा कि एक दिन तो छुट्टी मिलती है और उस पर भी इतना काम।

पूरा दिन और पूरा सप्ताह घर का माहौल तनाव पूर्ण रहता है। जबकि घर में तो हवन का आयोजन आपकी सफलता को सेलिब्रेट करने के लिये किया था।

देखों मैंने आपको दो उदाहरण बतायें, दोनों में ही आपको भीड़ का सामना करना पड़ा था। पर दोनों में ही आपकी प्रतिक्रिया अलग-अलग थी। क्योंकि पहले उदाहरण मैं आप इधर-ऊधर के डिस्ट्रेक्शन (distraction) को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। आपका लक्ष्य था कि यह सब तो चलता रहेगा, मुझे पहुंचना है।

दूसरे उदाहरण में आपने भीड़ इत्यादि के डिस्ट्रेक्शन (distraction) को अपने ऊपर हावी होने दिया।

पहले में सोचा कि भीड़ है तो क्या हुआ, काम का पहला दिन है मूड क्यों खराब करूं? दूसरे में आपने स्वयं अपना मूड खराब कर लिया। अरे! हवन है सामान कोई और ले आता। मुझे भीड़ में नहीं जाना पड़ता।

सबसे बड़ी बात हैं आप अपने मूड (Mood) को किस तरह से नियन्त्रित करते हो।

अपने मूड (Mood) को नियन्त्रित करना क्रियायोग है, यह सबसे महत्वपूर्ण है।

इसका क्या अर्थ हुआ? आपके लिये इच्छा पूर्ति महत्वपूर्ण है पर उस इच्छापूर्ति के लिये हवन यज्ञ महत्वपूर्ण नहीं है। इसका अर्थ है - आपका क्रियायोग सन्तुलित नहीं है।

आप आनन्द प्राप्त करना चाहते हो ना, मेरी बात अपने हृदय में स्थापित कर लो आपका 2025 शुभ-शुभ हो जायेगा। अपने जीवन में आनन्द प्राप्ति के लिये आपको डिस्टेक्शन (distraction) पर ध्यान नहीं देना है मतलब इसने क्या कहां? उसने क्या कहां? लोग क्या कहेंगे? आप तो बिल्कुल अपना ध्यान अपने ऊपर केन्द्रित करो। जैसे एक योगी करता है।

देखते है ना योगासनों में टेढ़े-मेढ़े अभ्यास के बीच में भी बैलेंस बनाये रखते है।

बिल्कुल ठीक उसी प्रकार आनन्द के लिये आपको बैलेंस बनाना आना चाहिये।

आप हो आज के योगी और बैलेंस बनायें रखने के लिये एक चीज आनी चाहिये।

ध्यान आगे की ओर हो और आपकी श्वास नियन्त्रित हो।

वही बात तो मैंने आपको थोड़ी देर पहले कहीं थी जीवन क्या है? क्रिया करने के लिये और धैर्य सीखने के लिये। आगे की ओर ध्यान रखों।

आप सब लोग मेट्रो में सफर करते है अभी तो भारत के करीब-करीब सब बड़े शहरों में मेट्रो चल गई है। दिल्ली में तो आधे से अधिक लोग मेट्रो में चलते है। मैं भी 2-4 बार साल में मेट्रो का सफर कर लेता हूं। मैं मेट्रो का सफर कभी-कभी इसलिये करता हूं कि लोगों के चेहरों के भाव देख सकूं। हर आयु वर्ग के लोग सब अपनी-अपनी दुनिया में खोये हुए। सुबह के समय थोड़ी चिन्ता की मुख मुद्रा होती है। शाम के समय थकान के बावजूद प्रसन्नता की मुख मुद्रा रहती है।

अब आप स्टेशन पर खड़े हो, आप किधर देखते हो, उस दिशा की ओर देखते हो जिस दिशा से ट्रेन आयेगी। पीछे की ओर तो नहीं देखते।

चलों, ट्रेन आ भी गई। 20 सैकण्ड में आप चढ़ नहीं सके और वह ट्रेन छूट गई। तो क्या हुआ? 3 मिनट बाद दूसरी ट्रेन आ जायेगी।

पर ज्यादात्तर लोगों का क्या होता? ट्रेन चढ़ने के लिये भागते-दौड़ते आये और 1 सैकेण्ड के लिये ट्रेन छूट गई तो एकदम गुस्सा हो जाते है। जैसे कोई प्रलय आ गई।

अब अगला दिन आता है स्टेशन पर आप उसी ट्रेन में चढ़ते हो यहां आप क्या मुंह फुला कर बैठ जाओंगे कि मेट्रो कल तुम मेरे पहुंचने से 5 सैकेण्ड पहले क्यों रवाना हो गई? मैं गुस्सा हूं नहीं बैठूंगा। मुंह फूला कर बैठे रहोंगे तो चढ़ोंगे कैसे?

दूसरे तो कहेंगे नहीं, अरे बेटा ट्रेन पर गुस्सा मत कर।

आप चढ़ोंगे क्योंकि आपको अपने गंतव्य पर जाना है।

ऐसा ही है जिन्दगी में खुशियों की मेट्रो चल रही है। एक छूटेगी तो दूसरी आ जायेगी। मुंह फुलाने से क्या फायदा, गुस्सा होने से क्या फायदा, धैर्य रखना आना चाहिये ना।

पर ज्यादात्तर लोग उल्टा करते है। सबसे साथ होता है जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है तुम्हारा विश्वास घटता जाता है।

एक ट्रेन छूट गई, दूसरी मिलेगी या नहीं मिलेगी। इसका विश्वास ही नहीं है।इसका कारण है आप सामने देखना बंद कर देते हो। केवल पीछे देखते हो भूतकाल में।

इसे कहते है आशा के विपरित जाना। जीवन तंत्र के विरूद्ध जाना।

सारा जीवन तंत्रमय ही है।

तंत्र क्या है? तंत्र अर्थात् पद्धति और पद्धति में क्या होता है? सिस्टम में क्या होता है, एक नियम है जिसका निश्चित परिणाम है जैसे - दो में दो जुड़ेगा तो चार हो जायेगा।

पानी को उबालोंगे 100 डिग्री पर तो भाप बनने लगेगा। वही पानी 0 डिग्री से कम होते ही बर्फ जम जायेगा। तो जो ये तंत्र है नियमों की लम्बी श्रृंखला है।

आपने स्वयं अनुभव किया होगा कि आप जब साधना के समय पूरे निर्देशों का सही-सही पालन करते हो तो साधना सिद्ध हो जाती है लेकिन नियम मानना जरूरी है।

और नियम से बना है नियमित।

अब आप किसी दिन सुबह 7 बजे पूजा करते हो, किसी दिन 8 बजे, तो किसी दिन 11 बजे पूजा करते हो। क्या इसे नियमित कहोंगे? नहीं।

तंत्र का सबसे बड़ा नियम क्या है? और तंत्र की शुरुआत कहां से हुई? शिव ने दिया संसार को तंत्र।

आगम-निगम तंत्र पद्धति शिव और पार्वती के बीच चल रहा संवाद है।

अब शिव कौन है? महामृत्युंजय महाकाल और शिव आपके पास है।

काल अर्थात् समय के रूप में इसलिये आप **'शिवोहऽम्... शिवोऽहम्...'** है।

अब समय का स्वभाव कैसा है? काल का स्वभाव कैसा है? निरन्तर आगे की ओर बढ़ता हुआ। अब आप पीछे की ओर देखते रहोंगे तो क्या होगा? आप शिव के विरुद्ध हो जाते है, आप तंत्र के विरूद्ध हो जाते है।

और तंत्र में काल अर्थात् समय हमेशा आज में है। अच्छा एक बात बताओं आज वर्तमान को अग्रेंजी में क्या कहते है? प्रजेन्ट (present)

प्रजेन्ट (present) का एक और अर्थ है उपहार (gift) तो भाई हमारे शिव हमें रोज समय का उपहार देते है। रोज एक दिन प्रदान करते है। हर दिन तुम्हारे पास समय सुबह आती है और फिर यही समय रात्रि में शिव हमें निद्रा में ले जाते है।

क्या शिवरात्रि सिर्फ एक दिन के लिये आती है?

अरे भाई! तो फिर 364 दिन किसके है? वे भी शिव के है, महाकाल के है, महामृत्युंजय के है।

मैंने अभी पूछा था आपसे, तंत्र का पहला नियम क्या है? तंत्र का पहला नियम है - आनन्द भाव में रहना और तंत्र की पराकाष्टा क्या है - अवधूत स्थिति, शिव की अवस्था।

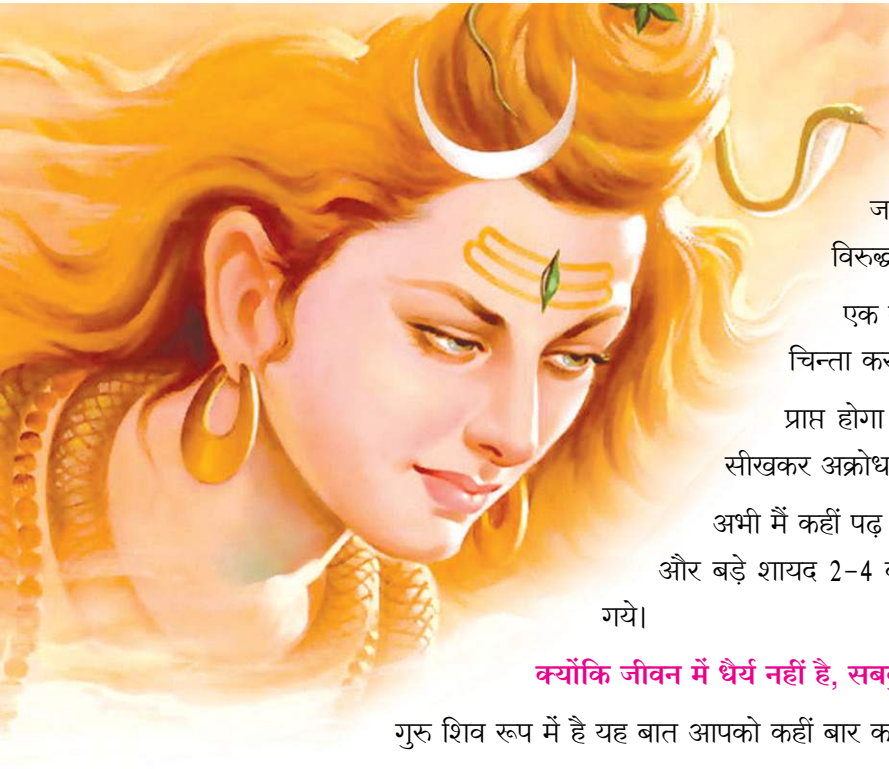

जब भी आप चिन्ता करते हो आप तंत्र के विरुद्ध जाते हो।

एक बात सोचों तो सही, अब तक आपने जीवन में चिन्ता करके क्या प्राप्त कर लिया?

प्राप्त होगा क्रियायोग के द्वारा, प्राप्त होगा धैर्य के साथ सीखकर अक्रोध की स्थिति में आकर।

अभी मैं कहीं पढ़ रहा था कि बच्चे दिन में 50-70 बार हंसते है और बड़े शायद 2-4 बार हंसते है। क्यों भाई आप क्यों हंसी भूल गये।

क्योंकि जीवन में धैर्य नहीं है, सबकुछ जल्दी-जल्दी प्राप्त करने की चिन्ता है।

गुरु शिव रूप में है यह बात आपको कहीं बार कहीं गई है।

यो गुरु सः शिवः प्रोक्तो

गुरु को परखना है तो यह समझों कि वे आनन्द अवस्था में आपके साथ रहेंगे।

शिव की स्थिति अर्थात् ब्रह्मानन्द। ब्रह्म जो आनन्द में है। इसीलिये ब्रह्म को आनन्द कहा गया है।

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।।

मुझे समझ में ही नहीं आता है कि कई गुरु लोग गंभीर क्यों रहते है। वे व्यर्थ का विवेचन, विश्लेषण करते है। मुझे तो लगता है कि वे ज्ञानी अवश्य है, शास्त्र के जानकार है पर गुरु शब्द तो बहुत गहरा है।

गुरु प्रसन्न अवस्था में स्थित है और हमारा तंत्र भी आनन्दमय रहने पर बल देता है। आप छिन्नमस्ता साधना, काली साधना, महामृत्युंजय साधना किसलिये करते है? मारकाट के लिये या आनन्द के लिये। निश्चित रूप से आनन्द के लिये।

एक बात पर ध्यान देना। गुरु के नाम में ही आनन्द है हमारे गुरु का नाम है - निखिलेश्वरानन्द, सच्चिदानन्द और भी गुरुओं के नाम है - सत्यानन्द, प्रेमानन्द, अखण्डानन्द, रामानन्द, हरिहरानन्द...।

सीधा सादा अर्थ है - गुरु कौन जो आनन्द में रहता है और जो आनन्द प्रदान करता है। तो एक बात सिद्ध हो गई है कि तंत्र का सीधा सीधा अर्थ है - आनन्द में रहना।

आप कहोंगे गुरुजी मैं तो संसार की इतनी समस्याओं से गिरा हुआ हूं। आनन्द में कैसे रहूंगा?

प्रिय शिष्यों उपहार ग्रहण करो,

चौंक गये, समझ में नहीं आया गुरुजी किस उपहार की बात कर रहे हैं। **मैं उस उपहार की बात कर रहा हूं जो रोज तुम्हारे मन के द्वार पर आकर खड़ा होता है। मैं प्रजेन्ट (present) 'आज' की बात कर रहा हूं, जो आज मिला है उसे ग्रहण नहीं करोंगे तो वह आज चला जायेगा। 'आज' जो चला जायेगा, आज का उल्टा है जा। जो आज है वह जाने के लिये ही आ रहा है।**

और आज क्या है? काल का वह अंश है हमारे जीवन का वह टुकड़ा है जो महाकाल ने हमें जीने के लिये दिया है।

महाकाल जिनका काल पर अधिकार है। काल अर्थात् समय। जब थोड़ी भी तबीयत खराब हो जाती है तो आप जोर-जोर से महामृत्युंजय मंत्र का जप करने लग जाते हो।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

क्यों करते हो आप महाकाल से यह प्रार्थना कि आपको दीर्घायु प्रदान करे। आयु अर्थात् समय, समय अर्थात् काल और काल जो रोज एक-एक दिन करके मिलता है अर्थात् इस प्रजेन्ट (present) जिसे आपको ग्रहण करना है।

क्या आप प्रत्येक दिन का दिल और बांहे खोलकर स्वागत करते हो।

देखों भाई, असत्य मत बोलना। वैसे भी झूठ बोलने से कोई लाभ नहीं है। सुबह-सुबह मुंह बनाकर उठते हो, हाथ-पैर हिलाते नहीं हो, कुछ योग नहीं, कुछ व्यायाम नहीं, दो-तीन-चार चाय घुटकी, कुछ खाया और नौकरी काम पर चल देते हो।

यह सोचते हो कि मुझे काम पर क्यों जाना पड़ रहा है?

मैं आराम क्यों नहीं कर सकता?

अरे भाई! सूर्य यदि एक दिन सोच ले कि मैं आराम करूंगा तो क्या संसार चलेगा? सभी साधक बतायें कि आप कौन हो? आप कहते हो ना मैं उनका सन son हूं पुत्र हूं और सूर्य को क्या कहते है sun।

दोनों में कोई फर्क नहीं है। आप भी अपने परिवार के सूर्य हो, यदि आप ही आराम करने लग जाओंगे तो घर संसार कैसे चलेगा?

सूर्य उदय होता है, सूर्य अस्त होता है। यह आपकी अवधारणा है। सूर्य कभी अस्त नहीं होता। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है इसीलिये दिवस होता है और रात्रि होती है।

आज नववर्ष की पूर्व संध्या पर आपको कह रहा हूं कि दिवस है क्रियायोग का स्वरूप और रात्रि है आनन्द योग का स्वरूप।

दिवस है शक्ति और क्रिया का स्वरूप, रात्रि है विश्राम और शिव का स्वरूप।

इसीलिये जीवन में क्रिया और विश्राम, शक्ति और शिव का सहयोग निरन्तर और निरन्तर चलता रहता है।

और इस सबके लिये जो तीन तत्व चाहिये वह आप सब के पास है। समय है, ऊर्जा है और क्रियाफल अर्थात् श्रीसायुज्य लक्ष्मी है।

जीवन धर्म यह है कि हम अपने समय और ऊर्जा का भलीभांति सदुपयोग कर श्री और लक्ष्मी को अपने जीवन में निमन्त्रित करें।

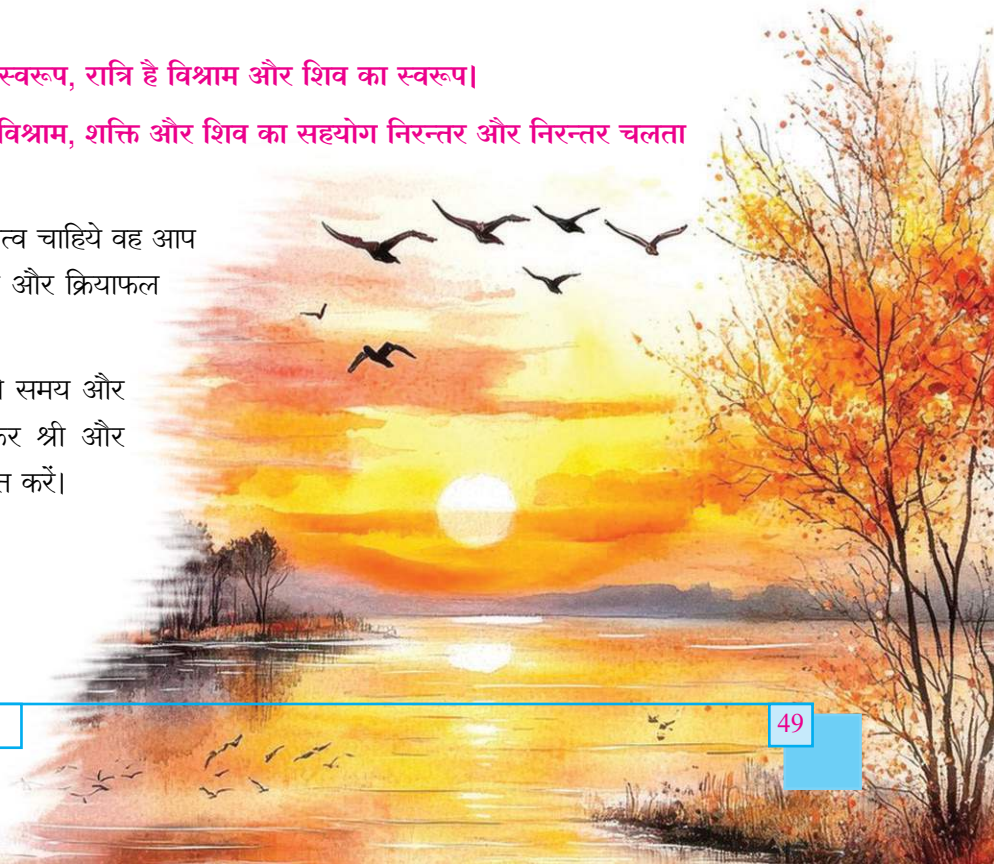

श्रीसुक्त में प्रार्थना में कहा गया –

ता म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देय गामश्वं पुरूषानहम् ।।२।।

हे देवताओं आप लक्ष्मी को हमारे घर लेकर आओं। क्यों आपके घर लेकर आये क्योंकि लक्ष्मी प्रार्थना में हम कहते है –

जिस घर मां तुम रहती, तहं सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता।।

सद्गुण के लिये भी धन चाहिए।

जो बात मैंने प्रारम्भ में कहीं थी वह बात पुनः कह रहा हूं कि जीवन प्रेम से ही चलता है, प्रेम ही संसार का जल है और यह जल क्या है?

यह एक त्रिवेणी संगम है समय, शक्ति और धन का सम्बन्ध, ध्यान से सुनना, समय, शक्ति और श्री का मिलन।

हम जिससे प्रेम करते है उससे क्या प्रदान करते है? या तो समय देते, शक्ति देते है, धन देते है या तीनों ही दे देते है।

एक माता अपने बच्चों को समय और शक्ति देती है।

पत्नी पति को समय और शक्ति देती है और एक पिता अपनी संतान को समय, शक्ति और धन तीनों प्रदान करता है।

गुरु रूप में मैं आपका पिता भी हूं, माता भी हूं, सखा भी हूं और उस रूप में आपको समय, शक्ति और धन का आशीर्वाद प्रदान कर रहा हूं।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

इस नववर्ष में आप अपनी तीनों शक्तियों के प्रति जाग्रत रहेंगे, जागरुक रहेंगे और आनन्द के साथ रहे यही मेरा आशीर्वाद।

परम पूज्य गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

(श्री सायुज्य क्रिया योग महोत्सव,
दिल्ली – 2024)

काल निर्णय

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं, और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	
रविवार (मई 3, 10, 17, 24, 31) (जून 7, 14)	दिन	06:00 से 08:24 तक 11:36 से 02:48 तक 03:36 से 04:24 तक
	रात	06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
सोमवार (मई 4, 11, 18, 25) (जून 1, 8)	दिन	06:00 से 07:30 तक 09:12 से 11:36 तक
	रात	08:24 से 11:36 तक 02:48 से 03:36 तक
मंगलवार (मई 5, 12, 19, 26) (जून 2, 9)	दिन	10:00 से 11:36 तक 04:30 से 06:00 तक
	रात	06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 05:12 से 06:00 तक
बुधवार (मई 6, 13, 20, 27) (जून 3, 10)	दिन	06:48 से 10:00 तक 02:48 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 09:12 तक 12:24 से 02:48 तक
गुरुवार (मई 7, 14, 21, 28) (जून 4, 11)	दिन	06:00 से 07:36 तक 10:00 से 11:36 तक 04:24 से 06:00 तक
	रात	09:12 से 11:36 तक 02:00 से 04:24 तक
शुक्रवार (मई 8, 15, 22, 29) (जून 5, 12)	दिन	06:00 से 06:48 तक 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 03:36 तक
	रात	07:36 से 09:12 तक 10:48 से 11:36 तक 01:12 से 02:48 तक
शनिवार (मई 2, 9, 16, 23, 30) (जून 6, 13)	दिन	06:00 से 06:48 तक 10:30 से 12:24 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक 02:48 से 03:36 तक 05:12 से 06:00 तक

मेष

वर्तमान समय मिश्रित फलकारक है। महत्वपूर्ण कार्य की विलम्बता से मन में निराशा का भाव आ सकता है। किसी पुराने वाद-विवाद को लेकर संघर्ष की स्थिति बन सकती है, आत्मविश्वास से परिस्थिति का सामना करें, गुरु कृपा से बड़ी से बड़ी समस्या पर विजय प्राप्त कर सकते है। संतान के भविष्य को लेकर शान्ति का अनुभव होगा। इस माह परिवार के साथ यात्रा पर जा सकते हैं, यात्रा सुखद् रहेगी। आप अनुकूलता हेतु **'नृसिंह साधना'** (अप्रैल 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 8, 15, 20, 25 हैं।

वृषभ

आलस्य के कारण सामान्य रूप से प्राप्त होने वाली सफलता भी असफलता में बदल जाती है। आप आलस्य का त्याग कर कर्मपथ पर गतिशील होने का प्रयास करें, कर्मपथ के अवरोधों से घबराएं नहीं। इस माह परिवार में चला आ रहा सम्पति विवाद समाप्त हो सकता है, आप समझदारी के साथ हल निकालने का प्रयास करें। अपने शत्रु पक्ष को कमजोर नहीं समझे, शत्रु पक्ष हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'तारा महाविद्या दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 8, 13, 18, 31 हैं

मिथुन

अपने हितैषी और शुभ चिन्तकों का सदैव ध्यान रखें। इनके द्वारा दी गई कठोर सलाह, सुझाव आपके तत्काल फल नहीं दे, पर भविष्य में लाभ अवश्य होगा। इस माह आर्थिक पक्ष को लेकर सावधानी रखने की आवश्यकता है। आय के नवीन स्रोत से धन लाभ होगा, किन्तु अनावश्यक खर्च को भी नियन्त्रित करना पड़ेगा। जीवन साथी के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता हो सकती है, यात्रा करते समय सावधानी रखें। अनुकूलता हेतु **'अक्षय पात्र साधना'** (अप्रैल 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 4, 13, 23, 31 हैं।

कर्क

ज्योतिष गणनानुसार समय मिश्रित फलकारक है, इस माह आय-व्यय को सन्तुलित करने की विशेष आवश्यकता है। इस हेतु योजना बनाकर कार्य करें। अनावश्यक खर्च को नियन्त्रित करें और निवेश करते समय विशेष सावधानी रखें। कार्य स्थल में अपनी वाणी पर संयम रखें अन्यथा वाद-विवाद की स्थिति बन सकती है। विद्यार्थी वर्ग को उनके परिश्रम के अनुरूप सफलता प्राप्त हो सकती है। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'कमला महाविद्या दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 4, 16, 22, 30 हैं।

सिंह

आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी, किन्तु आप इससे प्रभावित होकर स्वयं में अहं भाव न आने दें अन्यथा आपके बनते कार्य बिगड़ सकते है। अपने व्यक्तित्व को शांत और संयमित रखें। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, साथ ही लम्बे समय से अटके अचल सम्पत्ति विवाद का हल आपके पक्ष में हो सकता है। विद्यार्थी वर्ग के लिये समय चुनौतिपूर्ण है, लक्ष्य के प्रति लापरवाही नुकसान दायक हो सकती है। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'तंत्र बाधा निवारण दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 9, 16, 25, 28 हैं।

कन्या

योजनाबद्ध रूप से सम्पन्न कार्यों में सफलता की संभावना बहुत अधिक होती है। आप भी अपने अस्त-व्यस्त कार्यों को योजनाबद्ध करने का प्रयास करें, समय आपके अनुकूल है। परिणाम स्वरूप आपको लाभ भी प्राप्त होगा। इस माह क्रोध को अपने से दूर रखें अन्यथा बनते कार्य बिगड़ सकते है। राजकीय एवं न्यायिक कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। जीवन साथी के साथ वाद-विवाद की स्थिति समाप्त करें। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'रसेश्वरी मातंगी दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथिया - 9, 20, 27, 31 हैं।

तुला

समय की चाल आपके पक्ष में है, आपकी आशा अनुरूप ही कार्य पूर्ण हो सकते है। इस माह आपके आय में वृद्धि की संभावना है, योजनाबद्ध प्रयास करें। आकस्मिक और अतिरिक्त आय से आपका आर्थिक पक्ष मजबूत हो सकता है। परिवार में हर्ष का वातावरण रहेगा, संतान के भविष्य को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय होंगे। निकटम सहयोगी, मित्र की खिन्नता आपको परेशान कर सकती है। आप अनुकूलता हेतु **'कनक धारा यंत्र साधना'** (अप्रैल 2025) अवश्य सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 4, 13, 20, 30 हैं।

वृश्चिक

धोखा और विश्वासघात तब ही होता है, जब आंख बन्द कर विश्वास किया जाता है इसलिये आप इस मामले में सावधानी रखें। माह के प्रारम्भ स्थितियां प्रतिकूल हो सकती है, किन्तु कोई स्थिति सदा के लिये नहीं होती। समय के साथ स्थितियां सामान्य हो जाती है। सद्गुरुदेव की कृपा से आप सही मार्ग कर चयन करेंगे, हर स्थिति में विजय आपकी ही होगी। आश्चर्यजनक सफलता के लिये धैर्य रखें। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'छिन्नमस्ता महादीक्षा'** अवश्य ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 5, 9, 15, 24 हैं।

धनु

अपने परिश्रम और मेहनत के बल पर आप सफलता प्राप्त करेंगे, परिणाम स्वरूप बोनस और प्रमोशन के रूप में सफलता प्राप्त हो सकती है। व्यापारी वर्ग अपना कार्य विस्तार करने में सफल होगा, आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। इस माह परिवार में मांगलिक कार्यक्रम हो सकता है, मित्रों एवं परिवारजनों के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। जीवन साथ का सहयोग आपके लिये लाभप्रद सिद्ध होगा। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'राजयोग भाग्योदय दीक्षा'** अवश्य ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 11, 18, 25, 28 हैं।

मकर

आवेश की ज्वाला व्यक्ति के सोचने-समझने की शक्ति जला देती है। आवेश में व्यक्ति भाग्य की लिखी सफलता को भी असफलता में बदल देता है। इस माह आप धैर्य और संयम को व्यवहार में उतार कर कार्य करें। अर्थ की दृष्टि से यह माह आपके लिये बहुत लाभकारी सिद्ध होगा। शत्रुपक्ष

☆ **सर्वार्थ सिद्धि योग** - 4, 8, 9, 13, 14, 15, 18, 21, 25, 27 मई / 5, 6, 9, 11, 12, 14, 15 जून ☆ **अमृत योग** - 18, 21 मई/ 14, 15, 18 जून ☆ **द्विपुष्कर योग** - 7 जून ☆ **त्रिपुष्कर योग** - 3 मई/ 16, 21 जून ☆ **गुरुपुष्य योग** - 21 मई/18 जून ☆

उन्नति में बाधा उत्पन्न करने का प्रयास करेगा। जीवन साथी का सहयोग आपके लिये लाभकारी सिद्ध होगा। आप **'शनि प्रसन्न साधना'** (अप्रैल 2026) करें। शुभ तिथियां - 2, 11, 20, 31 हैं

कुम्भ

इस माह आपको आपके परिश्रम और धैर्य का कर्मफल आर्थिक और सामजिक रूप में प्राप्त होगा। आप कार्यक्षेत्र, व्यापार इत्यादि में उच्चता के नये आयाम स्थापित करेंगे। शत्रु पक्ष आपकी उन्नति से खिन्न होकर आपको नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकता है, अतः सावधानी रखें। आय के नवीन स्रोत बनेंगे, घर-परिवार में सामंजस्य बढ़ेगा। माता-पिता का आशीर्वाद एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप अनुकूलता हेतु **'नटराज शिव साधना'** (मार्च 2026) अवश्य सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 1, 12, 21, 30 हैं।

मीन

नवग्रहों की गणनानुसार वर्तमान समय मिश्रित फलकारक रहेगा। कार्यालय, ऑफिस में कार्य की अधिकता से आप मानसिक रूप से थके हुए अनुभव करेंगें, ध्यान और योग के द्वारा अपने आत्मबल को मजबूत करें। इस माह बेरोजगार व्यक्तियों को योग्यतानुसार रोजगार प्राप्त होने की संभावना है, अतः प्रयास तीव्र करें। गुरु कृपा एवं वसुधा लक्ष्मी के आशीर्वाद से आप नवीन भूमि क्रय कर सकते है। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'बगलामुखी दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 7, 18, 25, 31 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

16 मई	ज्येष्ट कृ.-30	शनिवार	शनि जयन्ती
17 मई	ज्येष्ट अ. शु.-01	सोमवार	ज्येष्ठ अधिक मास
25 मई	ज्येष्ट अ. शु.-10	सोमवार	गंगा दशमी
27 मई	ज्येष्ट अ. शु.-11	बुधवार	पुरुषोतमा एकादशी
28 मई	ज्येष्ट अ. शु.-12	गुरुवार	प्रदोष
31 मई	ज्येष्ट अ. शु.-15	रविवार	पुरुषोत्तम पूर्णिमा
11 जून	ज्येष्ट अ. कृ.-11	गुरुवार	पुरुषोतमा एकादशी
15 जून	ज्येष्ट अ. कृ.-30	सोमवार	सोमवती अमावस्या

आज क्या करना है - वराहमिहिर वचन

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जाएंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाए। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जून - 2026

1. प्रातः **'मधुरूपेण रूद्राक्ष'** (न्यौ. 150/-) का पूजन कर पूजा कक्ष में रख दें, इच्छित कार्य सम्पन्न होगा।
2. प्रातः **'मंगल स्तोत्र'** का पाठ कर दिन का प्रारम्भ करें।
3. **'महागणपति यंत्र'** (न्यौ. 350/-) का पंचोपचार पूजन कर गणपति मंदिर में अर्पित कर दें, कार्य सिद्धि होगी।
4. प्रातः विशेष **'गुरु पूजन'** अवश्य सम्पन्न करें तथा गुरु सेवा का प्रण करें। जीवन में शुभत्व का प्रारम्भ होगा।
5. मीठा दही खाकर ही घर से निकलें, कार्य में सफलता प्राप्त होगी।
6. हनुमान विग्रह को सिन्दूर और तेल चढ़ायें, बाधा समाप्त होगी।
7. सद्गुरुदेव से **'चामुण्डा शक्ति दीक्षा'** ग्रहण करें।
8. शिवलिंग पर दुग्ध मिश्रित जल चढ़ाते हुए **'ॐ हौं जूः सः'** महामृत्युंजय मंत्र का जप करें, आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।
9. **हनुमान चालीस** का पाठ कर, दिन का आरम्भ करें
10. अपने इष्ट का स्मरण कर, दिन का प्रारम्भ करें।
11. **पुरुषोतम एकादशी** पर सम्पन्नता एवं समृद्धि हेतु **अक्षय पात्र साधना, कनकधारा यंत्र साधना, नारायण लक्ष्मी साधना एवं महालक्ष्मी साधना** सम्पन्न करें।
12. पांच लौंग पान में रखकर घर के बाहर रख दें, आने वाली बाधा समाप्त होगी।
13. सरसों के तेल का दान करें, बाधा समाप्त होगी।
14. **'गायत्री मंत्र'** की 5 माला मंत्र जप करें।
15. **सोमवती अमावस्या** पर ग्रह बाधा दोष शांति हेतु **'चन्द्रमौलिश्वर साधना'** (पृष्ठ सं. 18) सम्पन्न करें।
16. प्रातः गुड़ घी खाकर ही घर से निकलें।
17. **रम्भा तृतीया** के शुभ मुहूर्त में 'अनंग रति साधना' सम्पन्न करें।
18. सद्गुरुदेव से से **'गुरु हृदस्थ धारण दीक्षा'** ग्रहण करें।
19. अपने भोजन में सफेद वस्तुओं (दूध, दही, चावल और सफेद मिठाई आदि) को प्राथमिकता प्रदान करें।
20. **विंध्यवासिनी जयन्ती** पर तंत्र बाधा, तंत्र दोष समाप्त करने हेतु **'विंध्यवासिनी साधना'** (जून 2026) सम्पन्न करें।
21. **गुरु जन्म** दिवस पर **विशेष गुरु पूजन** सम्पन्न करें और **गुरु सेवा का संकल्प** लें।
22. गन्ने का रस से शिवलिंग का अभिषेक करें।
23. **महेश नवमी** पर अपने मन-मस्तिष्क को सुदृढ़ करने हेतु **'चन्द्रमौलिश्वर साधना'** (पृष्ठ सं. 18) सम्पन्न करें।
24. **बटुक जयन्ती** के शुभ मुहूर्त में **'बटुक भैरव साधना'** (जून 2026) सम्पन्न करें तथा सद्गुरुदेव से **'भैरव दीक्षा'** ग्रहण करें।
25. भगवान विष्णु का पूजन कर पीले पुष्प अर्पित करें।
26. प्रातः चेतना मंत्र की दो माला जप अवश्य करें।
27. सद्गुरुदेव से 'शनि प्रसन्न दीक्षा' ग्रहण करें।
28. कुंकुम मिश्रित जल से सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।
29. **वट सावित्री पूर्णिमा** पर गृहस्थ सुख में वृद्धि हेतु **'शिव गौरी साधना'** (जून 2026) सम्पन्न करें।
30. **'बजरंग बाण'** का पाठ कर दिन का आरम्भ करें।

अप्रैल 2026 अंक में प्रकाशित

आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह अप्रैल 2026 में प्रकाशित है

अक्षय पात्र साधना

(पुरुषोतम मास - 17 मई 2026 से 15 जून 2026)

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है उसका जीवन अक्षय हो, उसके जीवन पात्र में सदैव पूर्णता हो उसे जीवन के नवरस-नवरंग की प्राप्ति हो...। इसी हेतु सिद्धाश्रम योगियों ने अक्षय तृतीया के शुभ मुहूर्त में अथवा उस दिन संकल्प कर किसी भी शुभ मुहूर्त में अक्षय पात्र साधना सम्पन्न करने का विधान किया।

अक्षय पात्र साधना सिद्धिदायक है और तुरन्त चमत्कारिक ढंग से प्रभाव देने वाली है। यदि कोई साधक मनोयोगपूर्वक इसे सम्पन्न करे तो अक्षय पात्र साधना के माध्यम से साधक जिस वस्तु, पदार्थ, स्वर्ण, वस्त्र या रत्न की कामना करता है, वह अवश्य प्राप्त होता है और जीवन भर वह अक्षय पात्र उसके लिए उपयोगी बना रहता है।

अक्षय पात्र की विशेषता यह होती है कि इस पात्र का निर्माण उस समय किया जाता है जब सूर्य स्वयं अपने नक्षत्र पर आरूढ़ हो। ऐस विशेष मुहूर्त में ही अक्षय पात्र का निर्माण कर उसे सूर्य साधना में निर्दिष्ट अठारह संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं। अक्षय पात्र को यजुर्वेदीय सूर्योपनिषद् मंत्रों से सम्पुटित किया जाता है। ऐसे अक्षय पात्र पर ही साधना सम्पन्न की जानी चाहिए।

- अक्षय पात्र साधना न्यौ. - 750/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 07)

कनकधारा यंत्र

(पुरुषोतम मास - 17 मई 2026 से 15 जून 2026)

कनकधारा यंत्र का घर, व्यापार स्थल में स्थापन लक्ष्मी प्राप्ति के लिये अत्यन्त दुर्लभ और रामबाण प्रयोग है। कनकधारा यंत्र के पूजन से दरिद्रता का नाश होता है। यह यंत्र दरिद्रता को दूर कर धनाधिपति बनने के योग बनाता है और अष्ट सिद्धि व नव निधियों की प्राप्ति होती है।

गुरुआज्ञानुसार साधकों के कल्याण हेतु रवि और गुरु पुष्य नक्षत्र में विशेष प्राण प्रतिष्ठा क्रिया द्वारा कनकधारा यंत्र को सिद्ध किया गया है। शुभ मुहूर्त में कनकधारा साधना सम्पन्न कर अपने जीवन में आ रही धन सम्बन्धी बाधा को समाप्त कर सके। साधक मात्र कनकधारा यंत्र को स्थापित कर कनकधारा स्तोत्र के पाठ से धन प्राप्ति के मार्ग में आ रही बाधाओं को समाप्त कर सकता है और अपने जीवन को दारिद्रय मुक्त कर सकता है।

कनकधारा यंत्र के घर, व्यापार स्थल में स्थापन मात्र से ही नए आर्थिक स्रोत बनते है और आर्थिक उन्नति प्रारम्भ हो जाती है, व्यापार में बेतहाशा वृद्धि होने लगती है। पूर्ण पारिवारिक उन्नति के लिए कनकधारा यंत्र को घर, व्यापार स्थल में अवश्य स्थापित करना चाहिए।

- कनकधारा यंत्र न्यौ. - 600/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 59)

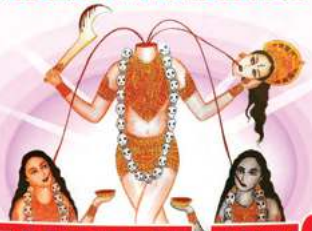

छिन्नमस्ता साधना

छिन्नमस्ता जयंती - 1 मई 2026
सोमवती अमावस्या - 15 जून 2026
गुप्त नवरात्रि - 15 जुलाई 2026 से 22 जुलाई 2026

तंत्र की दस महाविद्याओं में छिन्नमस्ता एक अत्यन्त ही उच्चकोटि की शक्ति है। छिन्नमस्ता महाविद्या साधना को सिद्ध करने से साधक जीवन के सभी सुखों को प्राप्त करता है। उसके जीवन में धन प्राप्ति, शत्रुबाधा पर विजय, रोग शान्ति तथा उसके परिवारजनों का जीवन पूर्ण रूप से सुरक्षित रहता है। छिन्नमस्ता महाविद्या साधना तो तीव्र शत्रुहन्ता साधना है, इसके प्रभाव से तीक्ष्ण शत्रु भी निस्तेज हो जाता है। छिन्नमस्ता 'विरुद्ध तंत्र संहारिणि' देवी है, आपके विरुद्ध किये तंत्र का नाश करती है।

व्यापार-कारोबार विपन्न अवस्था में चल रहा हो, तो इस साधना के बाद व्यापार-कारोबार में सुदृढ़ता प्राप्त होती है और आर्थिक अभाव समाप्त हो जाते हैं तथा धन का आगमन बराबर बना रहता है। छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं। श्री भैरव तन्त्र में कहा गया है कि छिन्नमस्ता आराधना से साधक जीव भाव से मुक्त होकर शिव भाव को प्राप्त कर लेता है। छिन्नमस्ता की कृपा एवं आशीर्वाद से ही योगी, सृष्टि में मोह-माया और भोग से मुक्त होकर, जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त करते हैं।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 650/-
(अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 16)

छिन्नमस्ता शक्तिपात महादीक्षा

छिन्नमस्ता जयंती - 1 मई 2026
सोमवती अमावस्या - 15 जून 2026
गुप्त नवरात्रि - 15 जुलाई 2026 से 22 जुलाई 2026

महाविद्या छिन्नमस्ता शक्तिपात दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक तंत्र बाधाओं को अपने जीवन से समाप्त कर सकता है। तंत्र प्रयोग से शरीर का तेज कम हो जाता है, कार्य में रुकावटें आती है, व्यापार बंध जाता है। इन सब बाधाओं के निराकरण हेतु छिन्नमस्ता दीक्षा परम आवश्यक है।

कैसा भी विरुद्ध तंत्र हो, चाहे किसी भी प्रकार का जादू, टोना-टोटका किया हुआ हो छिन्नमस्ता शक्ति के प्रभाव से उसे समाप्त किया जा सकता है। छिन्नमस्ता समस्त पापों का नाश करने वाली है, जीवन में किसी भी प्रकार के रोग, दुःख, आधि-व्याधि इन सब का नाश छिन्नमस्ता शक्ति द्वारा संभव है। जीवन में किसी प्रकार की भी समस्या हो जैसे शत्रु बाधा, कोर्ट-कचहरी का भय, कारोबार की समस्या, आर्थिक समस्या इन सब का निराकरण छिन्नमस्ता शक्तिपात दीक्षा द्वारा संभव है।

शिष्य के जीवन का परम सौभाग्यशाली क्षण होता है जब सद्गुरु उसे छिन्नमस्ता शक्तिपात दीक्षा (सात चरण) प्रदान करते हैं। सद्गुरुदेव से छिन्नमस्ता महादीक्षा प्राप्त कर, जब साधक छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न करता है तो जीवन के सभी सुखों से युक्त हो जाता है।

- छिन्नमस्ता शक्तिपात महादीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. 3100/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 19)

नृसिंह शाक्त साधना

पुरुषोत्तम मास 17 मई 2026 से 15 जून 2026

सिंह को जंगल का राजा बनने के लिए ना तो कोई अभिषेक किया जाता है ना कोई संस्कार। अपने गुण और पराक्रम से वह स्वयं ही जंगल के राजा के पद को प्राप्त कर लेता है। पराक्रम का अर्थ है - एक या एक से अधिक व्यक्तियों में प्रतिस्पर्धा होने पर अपने लिए विजय सुनिश्चित करना। इसमें चातुर्य, सूझबूझ और शौर्य बल का विविध अनुपातों में समन्वय होता है।

पराक्रम, साधक के लिए अति आवश्यक तत्व है। जब आपमें पराक्रम जाग्रत होता है तब जीवन की व्याधियां पीड़ा, निराशा, मानसिक उपद्रव सब समाप्त हो जाते हैं। भगवान विष्णु का नृसिंह अवतरण गूढ़ संदेश छिपाए हुए है, भगवान विष्णु का नृसिंह अवतार मनुष्यों को सिंह के समान पराक्रमी बनने का संदेश देता है। वास्तव में सफल जीवन तो उसका ही कहा जा सकता है, जो अपने जीवन के लक्ष्यों को सिंह की भांति झपटकर प्राप्त करने की क्षमता से युक्त हो।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 650/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 25)

नृसिंह दीक्षा

पुरुषोत्तम मास 17 मई 2026 से 15 जून 2026

पराक्रम का अर्थ है दो या दो से अधिक व्यक्तियों में प्रतिस्पर्धा की स्थिति में विजयी होना। जो प्रतिस्पर्धा में विजयी होता है उसका पराक्रम अधिक होता है। पराक्रम के बिना मनुष्य का जीवन अर्थहीन है। पराक्रम का यह भाव नृसिंह साधना-दीक्षा से ही संभव है।

अभाव, तनाव, पीड़ा (शारीरिक, मानसिक अथवा दोनों), दारिद्र्य जैसे राक्षसों की समाप्ति नरकेसरी की ही क्षमता से हो सकती है। रग-रग में सिंह की ही लपक और शौर्य से ही जीवन की समस्याओं पर झपट्टा मार सकते है।

बाधाएं तो नित नये स्वरूप में आती रहती हैं लेकिन जो साधक दृढ़ निश्चयी होते हैं, जिनके मन में सर्वोच्च बनने का भाव हिलोरे लेता है उन्हें नृसिंह साधना एवं दीक्षा सम्पन्न कर अपने जीवन में एक नया ओज व क्षमता प्राप्त करनी चाहिए। इस हेतु इस समय-समय पर नृसिंह साधना अवश्य सम्पन्न करें, सद्गुरुदेव से नृसिंह दीक्षा ७ चरणों में अवश्य प्राप्त करें।

- नृसिंह दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 2100/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 28)

ऋण मोचन मंगल साधना

कर्ज का भार व्यक्ति के जीवन में अभिशाप की तरह होता है, जो व्यक्ति की हंसती हुई जिन्दगी में एक विष बुझे तीर की भांति चुभ जाता है, जो निकाले नहीं निकलता और व्यक्ति को त्रस्त कर देता है। ऋण का ब्याज अदा करते-करते लम्बी अवधि हो जाती है, पर मूल राशि वैसी की वैसी बनी रहती है।

शुभ मुहूर्त में ऋण मोचन मंगल साधना करने से व्यक्ति कितना भी अधिक ऋण भार युक्त क्यों न हो, उसकी ऋण मुक्त होने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। '

ऋण मोचन मंगल साधना को तो समय-समय पर सम्पन्न करते रहना चाहिए। ऋण को एक बोझ माना गया है, और इस बोझ से जल्दी से जल्दी मुक्ति प्राप्त करना ही श्रेष्ठ है। ऋण बोझ के प्रभाव से जीवन की गति बाधित हो जाती है, उसकी चेतना-चिन्तन का विषय विकास न होकर बोझ हो जाता है।

अथर्ववेद में ऋण को **'यम का पाश'** कहा गया है अर्थात् ऐसा बंधन जो मनुष्य को केवल आर्थिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से भी जकड़ लेता है। वेदों में बार-बार यह प्रार्थना की गई है कि मनुष्य ऋण से मुक्त हो, क्योंकि ऋण केवल एक लेन-देन नहीं है, बल्कि यह जीवन की स्वतंत्रता को सीमित कर देता है। एक ऋण के न चुकाने पर अनेक ऋण उत्पन्न हो जाते हैं और यह क्रम धीरे-धीरे मनुष्य को भीतर से तोड़ देता है। इसी कारण शास्त्रों में कहा गया है -

'ऋणं कृत्वा न जीवेत्तु, ऋणं दुःखस्य कारणम्।'

ऋण लेकर जीना अंततः दुःख का ही कारण बनता है।

स्कन्द पुराण में भी अत्यंत स्पष्ट रूप से कहा गया है कि **जो व्यक्ति बिना ऋण चुकाए मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके पुण्य कर्मों का एक भाग ऋणदाता को प्राप्त होता है।** यह केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि समाज में अनुशासन और उत्तरदायित्व बनाए रखने का एक गूढ़ संदेश है। इसका तात्पर्य यह है कि हम अपने कर्मों के फल के स्वामी तभी बन सकते हैं, जब हम अपने दायित्वों का पूर्ण निर्वाह करें।

इसी संदर्भ में रहीम का प्रसिद्ध दोहा जीवन के संबंधों की वास्तविकता को अत्यंत सरल शब्दों में प्रस्तुत करता है

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो उधार लगाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।।

उधार का संबंध प्रेम के धागे को कमजोर कर देता है। एक बार यह धागा टूट गया, तो वह पुनः जुड़ तो सकता है, लेकिन उसमें पहले जैसी सहजता नहीं रहती। यह बात आज के सामाजिक जीवन में अत्यन्त प्रासंगिक है, जहां रिश्ते अक्सर आर्थिक व्यवहार के कारण प्रभावित होते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में ऋण

वर्तमान युग में मनुष्य का जीवन बाहरी और भीतरी दो स्तरों पर चलता है। बाहर से वह प्रसन्न, सफल और सम्पन्न दिखाई देता है, परन्तु भीतर से वह अनेक प्रकार के तनाव,

ऋण तीन प्रकार के होते हैं

1. **बीज रूप में ऋण इन्वेस्टमेन्ट या निवेश की भांति है, जैसे उच्च शिक्षा हेतु लिया गया ऋण, या फिर मकान खरीदने के लिए लिया गया ऋण, बीज रूप में है।**
2. **भोग रूप में वह ऋण है जो कन्ज्यूमरिज्म के चकाचौंध से प्रभावित होकर लिया जाता है। इस श्रेणी में क्रेडिट कार्ड पर लिया गया ऋण आता है। ऋण लेकर सुख सुविधाएं जोड़ने से आप अपने संतोष सुख और शांति को गिरवी डाल देते हैं। सामना खरीदने का आराम उस समय समाप्त हो जाता है जब आपके पास उस ऋण को चुकाने की क्षमता नहीं हो।**
3. **मजबूरी में ऋण निकट सम्बन्धियों से लिया जाता है एवं यह ऋण अत्यन्त पीड़ा दायक है। इसे लेने वाले व्यक्ति का स्वाभिमान हमेशा आहत रहता है।**

वास्तव में धन हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है और अपने परिश्रम द्वारा वह सम्मान पूर्वक जीवन निर्वाह कर सके इतना तो अर्जन करने का प्रयास करना ही चाहिये। यही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है।

हालांकि बीज रूप में और मजबूरी में उधार मांगना जरूरी हो जाता है लेकिन यदि आप सिर्फ कामनाओं का पीछा करने के लिए उधार ले रहे हैं तो आप अपने आप को अकेला मत समझिए। आप जैसे हजारों हैं और आदि काल से हैं।

चिंताओं और आर्थिक दबावों से घिरा रहता है। कई बार यह स्थिति जन्म से ही उत्पन्न होती है जहां संसाधनों का अभाव होता है और उन्हें उचित अवसर नहीं मिल पाते। वहीं कुछ लोग अत्यधिक परिश्रम और ईमानदारी के बावजूद भी धन का संचय नहीं कर पाते।

किन्तु ये परिस्थितियां घातक नहीं हैं, क्योंकि परिश्रम, साधना, गुरु-कृपा और ईश्वर की अनुकम्पा से इनका समाधान संभव है। वास्तविक संकट तब उत्पन्न होता है जब मनुष्य अपनी वास्तविक आवश्यकताओं से अधिक, समाज में दिखावे और प्रतिस्पर्धा के कारण व्यय करने लगता है।

इस प्रकार की मानसिकता व्यक्ति को विवेकहीन बना देती है। वह यह भूल जाता है कि उसकी आय क्या है? उसकी क्षमता क्या है? और भविष्य की आवश्यकताएं क्या हैं? परिणामस्वरूप, वह धीरे-धीरे ऋण के जाल में फंसता चला जाता है।

कभी-कभी जीवन में ऐसी परिस्थितियां भी आती हैं जहां ऋण लेना अपरिहार्य हो जाता है। जैसे बीमारी, आकस्मिक दुर्घटनाएं या अन्य आपात स्थितियां। इन परिस्थितियों में ऋण लेना अनुचित नहीं है, क्योंकि जीवन की रक्षा सर्वो परि है। परंतु जब ऋण अनावश्यक इच्छाओं और दिखावे के कारण लिया जाता है, तब वह विनाश का कारण बनता है।

शास्त्रों में कहा गया है -

अलाभे न विषादः स्यात्, लाभे न अतिउत्साहः।
एतद् लक्ष्म्या निवासस्य, रहस्यं परमं स्मृतम्।।

हानि होने पर दुःखी न होना और लाभ होने पर अत्यधिक उत्साहित न होना। यही धन को स्थायी बनाने का रहस्य है।

लक्ष्मी को **'चंचला'** कहा गया है, परंतु यह चंचलता केवल उन लोगों के लिए है जो अस्थिर और असंयमी हैं। जो व्यक्ति धैर्यवान, संतुलित और संयमित होता है, उसके पास धन स्थिर रहता हैं। किंतु जब मनुष्य अपने आचरण, व्यवहार और अपव्यय से धन का अनादर करता है, तब वह धनहीन हो जाता है।

जब धन चला जाता हैं, तो उसके स्थान पर एक भयंकर स्थिति उत्पन्न होती है 'ऋण'। यह ऋण एक ऐसे दानव के समान है जो मनुष्य को अपने आठ भुजाओं से जकड़ लेता

है। वह न उसे चैन से जीने देता है और न ही शांति से मरने देता है। इसी कारण कहा गया है –

ऋणी जीवति दुःखेन, मृतोऽपि न सुखं व्रजेत्।

ऋणी व्यक्ति जीवन में दुःख भोगता है और मृत्यु के बाद भी शांति नहीं पाता।

अब प्रश्न उठता है कि **इस समस्या का समाधान क्या है? इसका उत्तर अत्यंत सरल, किन्तु व्यवहार में कठिन है – संकल्प और संयम। मनुष्य को यह दृढ़ निश्चय करना चाहिए कि वह आय के अनुसार ही जीवन व्यतीत करेगा। अनावश्यक खर्चों को रोकेगा और दिखावे से दूर रहेगा।**

धन की वृद्धि भी एक बालक के समान होती है– धीरे-धीरे, समय के साथ। यदि कोई व्यक्ति एक ही दिन में सब कुछ प्राप्त करना चाहता है, तो वह अवश्य ही गलत मार्ग की ओर जाएगा।

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

धैर्य और समय के साथ ही वास्तविक सफलता और समृद्धि प्राप्त होती है।

ऋण और मंगल ग्रह

ज्योतिषानुसार **ऋण की समस्या का सम्बन्ध मंगल ग्रह से जोड़ा गया है। मंगल अग्नि तत्व प्रधान, रक्तवर्णीय और दक्षिण दिशा का स्वामी ग्रह है। यह साहस, पराक्रम, भूमि, भाई-बंधु और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है।**

मंगल मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है तथा मकर में उच्च और कर्क में नीच का होता है। इसकी दृष्टि विशेष रूप से चौथे, सातवें और आठवें भाव पर होती है, जिससे यह जीवन के अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

यदि मंगल शुभ स्थिति में हो, तो यह व्यक्ति को साहस, आत्मविश्वास और पराक्रम प्रदान करता है। परंतु यदि यह अशुभ हो जाए, तो यह क्रोध, विवाद, दुर्घटना, आर्थिक हानि और ऋण का कारण बन सकता है।

इसी कारण ज्योतिष में ऋण मुक्ति के लिए **'ऋणमोचक मंगल स्तोत्र'** का पाठ करने की सलाह दी जाती है। साथ ही, मंगलवार का व्रत, हनुमान जी की उपासना और दान-पुण्य भी मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने में सहायक माने गए हैं।

हर व्यक्ति को ना सिर्फ अपना वित्तीय लक्ष्य मालूम होना चाहिए बल्कि उसके पास एक योजना भी होनी चाहिए, जिसके तहत वह अपने वित्तीय लक्ष्य को पूरा करेगा।

इस संदर्भ में यह सोच कि, कल किसने देखा है और समस्या आएगी तब देखा जाएगा यह नहीं चलेगा। यह तो समस्याओं से आंख मूंद लेने की बात है, क्योंकि जिन समस्याओं का, जिन मुश्किलों का हम सामना नहीं करते हैं, वे हमारे जीवन की कुरुक्षेत्र बन जाती हैं।

अतः अति आवश्यक स्थिति में ही ऋण लें और ऋण के भार को उतना ही सीमित रखें जितना आसानी से वहन कर सकें और समय पर ऋणों से मुक्ति प्राप्त कर सकें।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में तीन ऋण विद्यमान हैं, जिनसे वह आजीवन मुक्त नहीं हो पाता हैः देव ऋण, पितृ ऋण और गुरु ऋण। इन तीन ऋणों से मुक्ति तो असम्भव है, पर इनके प्रति सेवाभाव का निर्णय लेकर आप जीवन के कष्टों से मुक्ति पा सकते है। जब इन तीन ऋणों के अलावा आप अन्य किसी प्रकार का ऋण लेते है तो आपके जीवन का सुख चैन छीन लेते हैं। उधार की जिन्दगी और किश्तों में खरीदा सुख रिश्तों में कड़वाहट घोल देते हैं। आए दिन तनाव जनित क्रोध की अभिव्यक्ति, दाम्पत्य में घुलता खटास ऋण-जनित है। ऋण विष की तरह है जो आपके जीवन से अमृत चुरा लेता है। अमृत से ही अमरत्त्व की ओर बढ़ने में अर्थात् मृत्योर्मा अमृतगमयं की यात्रा पर बढ़ने के लिए ऋण मुक्ति अनिवार्य है।

– गुरुदेव नन्दकिशोर श्रीमाली जी

अंततः यह समझना आवश्यक है कि ऋण केवल आर्थिक समस्या नहीं है यह जीवन के असंतुलन का परिणाम है। जब मनुष्य अपने विचारों, व्यवहार और इच्छाओं पर नियंत्रण स्थापित कर लेता है, तब वह न केवल ऋण से मुक्त होता है, बल्कि एक शांत, संतुलित और समृद्ध जीवन की ओर अग्रसर होता है।

ऋण मोचन मंगल साधना

जब भी आप प्रयास करके भी ऋण रूपी बाधाओं से पार नहीं हो पा रहे हो तो ऋण मोचन मंगल साधना को किसी भी मंगलवार, किसी भी सर्वार्थ सिद्धि योग अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ किया जा सकता है।

इसके लिये प्रातः शुद्ध वस्त्र धारण कर, दक्षिण दिशा की ओर मुख कर लाल रंग के आसन पर बैठ जाएं, सामने एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका स्थापित कर लें तथा गुरुदेव निखिल का पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें।

निखिल पूजन के पश्चात् गुरु चित्र के सामने ही चावलों से एक त्रिकोण बनाकर उसके मध्य **'प्राण प्रतिष्ठा युक्त मंगल यंत्र'** स्थापित करें। फिर दाहिने हाथ में जल लेकर **विनियोग** करें –

ॐ अस्य श्रीभौमस्तोत्रस्य गर्ग्गऋषिः मङ्गलो देवता। त्रिष्टुप्छन्दः। ऋणापहरणे जपे विनियोगः।

विनियोग के पश्चात् मंगल कामना हेतु ध्यान करें –

रत्नाष्टा पद वस्त्र राशिममलं दक्षात्किरंतं करा-
दासीनं विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम्।।
पीता लेपन पुष्प वस्त्र मखिलालंकार संभूषितम्।
विद्या सागरपारगं सुरगुरुं वंदे सुवर्णप्रभम्।।

इसके पश्चात् **मूंगा माला** से एक माला **मंगल गायत्री मंत्र** एवं एक माला **मंगल सात्विक मंत्र** का जप करें –

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय
धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

भौम सात्विक मंत्र

ॐ अं अंगारकाय नमः।

इसके पश्चात् 9 माला भौम **तांत्रोक्त मंत्र** की **'मूंगा माला'** से करें –

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

यह साधना 7 दिवसीय साधना है जो मंगलवार से मंगलवार तक की है। 7 दिवसीय साधना के पश्चात् 7 मंगलवार तक ऋण मोचन मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

साधना समाप्ति के पश्चात् सम्पूर्ण साधना सामग्री को घर से दूर कहीं भूमि में गाड़ दें। सामग्री गाड़ देने के पश्चात् सीधे अपने घर जाएं तथा पीछे मुड़ कर नहीं देखें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 450/–

ऋणमोचक मंगल स्तोत्र

चतुवर्ग चिन्तामणि महाग्रंथ के अनुसार धन सम्बन्धी, ऋण-दोष दूर करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय 'मंगल साधना' है। मंगल साधना सम्पन्न करने के पश्चात् साधक सात मंगलवार तक नित्य ऋणमोचक मंगल स्तोत्र का पाठ करता है तो उसकी ऋण बाधा अवश्य ही समाप्त होती है और भविष्य में भी ऋण सम्बन्धी बाधाओं से मुक्ति प्राप्त होती है। एक माला मंगल मंत्र का जप करने के पश्चात् इस स्तोत्र का पाठ अवश्य सम्पन्न करें।

मंगल मंत्र

।। ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।।

ऋणमोचक मंगल स्तोत्रम्

।। मंगल भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।१।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनंदनः।।२।।
अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्तापहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।३।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।४।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगल प्रणमाम्यहम्।।५।।
स्तोत्रअंगारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीड़ा स्वल्पापि भवति क्वचित्।।६।।
अंगारक महाभाग भगवत् भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।।७।।
ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यंतु मम सर्वदा।।८।।
अतिवक्र दुराराध्यः भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ।।९।।
विरंचिशक्रविष्णुनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्वेन ग्रहराजो महाबलः।।१०।।
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋणदारिद्रदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः।।११।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तोत्रं च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ।।१२।।

ऋण मोचन मंगल साधना सम्पन्न कर 'ऋणमोचक मंगल स्तोत्र' का पाठ करने वाले हजारों साधकों को ऋण के कष्टकारक चुंगल से मुक्त होने के पत्र निरन्तर निखिल मंत्र विज्ञान कार्यालय को प्राप्त होते रहते है।

1-2-3 मई 2026

जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

23-24 मई 2026

ऋणेश्वरी मातंगी साधना शिविर, बैतुल

शिविर स्थल : लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम, जिला चिकित्सालय के पास, बैतुल (म.प्र.)

निखिल सेवा समिति: एस.एल.धुर्वे 9993155686• सरनाम सिंह ठाकुर 8839635953• सी.एल.मरकाम 9425629921• शैलेन्द्र भावसार 8989293797• घनश्याम धुर्वे 9407327792• धर्मेन्द्र परिहार 9406959699• अशोक इवने 9752219559• संजय जौजारे 9425656940• महेश जावरकर 9893064312• शशिकांत जयसिंहपुरे 8602431898• एस आर उईके 9165502327• महेश झरबड़े 9993950304• कमल किशोर वाघमारे 9827850557• प्रदीप राठौर 9584303059• गुलाब कोडोपे 9329519159• निखिल मवासे 6260564633• बबलू बडोनिया 9425008547• सुरेश धुर्वे 9340947927• सतीश मालवी 9893103051• संजय बिहारे 8602694567• मोहन उईके 9407295650• **बैतूल:** जनकलाल मवासे 9425361761• राजश्री निखिल 7869380172• डॉ. कृष्णा मौसिक• डॉ. मनक धुर्वे• कविता मालवीय• सुनीता उईके• जीवन मोहबिया• विमल बछले 958945443• सोबेलाल मर्सकोले• विशाल भौरासे• धन्नुसिंह धुर्वे 9424403501• राजेश माकोड़े• द्वारका प्रसाद नर्रे• पूण्डलिकराव जावरकर 7974946797• सुखदेव वरकड़े 6264375917• नरेश धोटे• प्रकाश मौसिक• बाबूलाल धूर्वे• अनिल हुरमाडे• साहबलाल धुर्वे• राकेश भलावी• विजय मालवीय• रमेश पंद्राम• किशोर खजांची• सुशीला सुरेश उईके• भारती आहके• ओमकार साहु• फुलसिंह परते• **मूलताई:** सुशीला आई.डी.कुमरे 9425304226• विक्रम सिंह सिसोदिया 9424403512• सुजीत उईके 7566916296• संजय इवनाते• **भैंसदेही:** संतोष मालवीय(काटकुम्भ) 9421828233• राकेश राठौर 9826475745• संतोष मालवीय(कोयलारी)• मनीराम पांसे(सुपाला)• सरवन सिरसाम• दयाराम बारस्कर• **चिचोली:** राकेश राठौर 6263128295• सुरेन्द्र चौहान 9399166868• मनीराम धुर्वे• उदेशा वरकड़े• सोमलाल वरकड़े• बिंदिया उईके• सरदार बाबा धुर्वे 6268029311• रविशंकर धनवारे 8319470026• रामविलास उईके• सुखलाल अखंडे• **शाहपुर:** सुरेन्द्र वरकड़े 8889446269• रमती सलामे• सुनील काजले 9399497400• संतराम लविस्कर 9406926286• **घोडाडोंगरी:** रतन वरकड़े• वृन्दावन यादव 8878841723• नरेन्द्र महतो 9425381917• विजय परते• **सारणी:** सुरेश धुर्वे• राजेश मालवीय• राजू विश्वकर्मा 8965836689• जंगल सिंह पांडरे• उज्ज्वला पांसे• **भीमपुर:** गोलमन उईके 9893478781• सुखदेव बामने 8458967528• नीरज सलामे• **प्रभात पट्टन:** डॉ. घनश्याम सोनी 9826936969• उदयराम लांजीवार 8989099372• कमलेश गलफट• **आठनेर:** नारायण राव पोटफोडे• नेकराम राठौर• मनोहर जीतपुरे 9424403543• **सातनेर:** मुकेश राठौर 9165424845• **आमला:** डॉ. संतोष कवड़कर 8463870055• रुसीलाल यादव 9691937521• महेन्द्र मानकर 8827513689• तेजेश्वर पाठेकर 9424422484• अशोक नावंगे• संजय वराठे• नानेश्वर पाठेकर• अंशु ढोलेकर• **छिन्दवाड़ा:** बलदेव दवंडे 9424461118• किशोर यादव 9131478055• जीत्तू साहू 9425626955• धनपाल धुर्वे• मनमोहन धुर्वे• सुरेन्द्र धुर्वे• जय कुमार पाल• पंडितराम शर्मा• तुलसीराम राय• रामवती कैथवास• जय नारायण सराठे-9406744011• **जुन्नारदेव:** कमल कुरोलिया 6260350183• **पाडुरणा:** शेषराव गावंडे 9589510765• विजय पराठकर 8818939957• सुरेन्द्र श्रीवास्तव 9425895851• कुशाल बोरीवाल• **नर्मदापुरम:** डॉ. सविता नितिन मौसिक• एच एन शर्मा 9424436961• भागवती सिंग• सुनील चौहान• विनय ठाकुर• जमुना पाल• **हरदा:** विजय ठाकुर 9826939522• गणेश रघुवंशी 9826820103• कपिल जाट 9926594959• संतोष शर्मा• **भोपाल:** कौशिक श्रीवास्तव 9425183471• चन्दा बाई पदाम• एस.बी.शा• भागीरथ साहू• ज्ञानेश्वर

उईके• ललित शर्मा• कृष्णगोपाल मैथली• एल.एल.उईके• संगीता सातपुते• जयवंती इवने• **विदिशाः** देवना अरोरा 9406917770• राकेश सिंह 9309636074• गजेन्द्र आचार्य• **बालाघाटः** लक्ष्मण लिल्हारे 9827077484• सुरेश कटरे 8120954529• जयप्रकाश बनोटे• शांतिलाल लिल्हारे• संजय भगत• डी.एस.पिछोडे• युगल किशोर भगत 9302085014• घनश्याम लिल्हारे• सुभाष साहू• **गाडरवाड़ाः** बी.के.झारिया 9617987339• आशीष जाटव 8878298110• **खंडवाः** धनराज• रंजीत यादव 8878486317• मनोज तिवारी 9893338539• नरेन्द्र राणा• **इंदौरः** विष्णु पाटीदार 9826231345• अशोक प्रजापति 9425074794• गणेश मोदिया 9826031845• श्रीकुमार शाक्य 9131044850• कुंवर सिंह नरवरिया• विनायक टकले 7987796306• दिलीप धोटे• ललित जोशी• **खरगोनः** डॉ.महावीर प्रसाद मण्डलोई 7987893720• **सिवनीः** डॉ.राजकुमार धुर्वे 9165127984• **मंडलाः** जी.एस.मरावी 9424423326• **महाराष्ट्रः** राजेन्द्र सिंह सेंगर 9823019750• के.एन.मोहड़ीकर 9405243305• शुक्राचार्य ठाकरे 9423606893• गुणवंत खोबरागड़े• अशोक लाडके• निर्मला राठौर• रविन्द्र जादो• सुखदेव धोटे• **भुसावलः** ज्ञानेश्वर पाठेकर 8839513922• **छत्तीसगढ़ः** के.के.तिवारी 8319536266• बबला उपाध्याय 9425537575• मनोज कुमार निषाद•

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

29-30-31 मई 2026

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

6-7 जून 2026

चामुण्डा सायुज्य धूमावती साधना शिविर, कांगडा

शिविर स्थल : शक्ति पीठ श्री चामुण्डा नन्दिकेश्वर धाम, जिला -कांगडा (हि.प्र.)

आयोजकः- ई अजय शर्मा 9418028082• एड.जनरल अमित कुमार 6230761379• डॉ.गगन प्रसाद 9816586263• डॉ. भुवन 9805798917• डॉ.मोहनलाल 9459791047• डॉ.राजेश 9625478910• डॉ.सुमन 7018682238• पवन गोस्वामी 9418121437• रितु कुमारी 9736076636• अंकुश गोस्वामी 7807018293• अजय कुमार 7734866902• अतुल चौधरी 9736751155• अनिल कुमार 8968594235• अपूर्व गौतम 9816467430• अमरजीत 9418350285• अरविंद डोगरा 9418833140• आशीष वशिष्ठ 8894043472• कुलदीप चंद शर्मा 8894895255• कैलाश भारती 9825058000• गोपाल 9896187061• चमन लाल 7018223212• चमारु राम 9882635540• चैन लाल 9805650078• जगत नाथ नड्डा 9418255835• ज्ञानचंद रतन 9418090783• ज्ञानचंद 9418000677• टी.एस.चौहान 9805167325• तुलसीराम 9418694858• देसराज राणा 9817834845• दौलत चौहान 9459000014• धर्मेंद्र 8373960020• धीरज शर्मा 9418583180• नंदलाल 9418009920• नरेश आचार्य 9418100652• निर्मल कुमार 8219872907• पंकज कुमार 9418724811• पन्नू राम 9418253074• पम्मी अवस्थी 7018369309• पिंटा धीमान 9816149000• पुष्कर महाजन 8054920639• प्रवीण कुमार 9857587922• बंसी राम ठाकुर 9805042544• बुद्धि सिंह 9805172263• भूपेंद्र 7807029021• मंजीत 9418438912• मदन लाल 8894542723• मदल लाल 9817299226• मदन शर्मा 9418032185• महेंद्र गुप्ता 9418043420• महेन्द्र नायक 9857991795• यशपाल 9418856701• रविन्द्र 9418946619• राकेश कुमार 9805110884• राजीव शर्मा 8360238015• राजेंद्र शर्मा 9418103439• राम कालिया 9817045856• रामचंद्र 9318550505• रोशन लाल 9459590877• रोशन लाल चोतड़ा 8219233692• ललित 9418186082• विजेंद्र चंदेल 9418096604• विनय नेगी 9459450000• विनय भारद्वाज 7727950971• विनीत कुमार 9817008890• विपिन शर्मा 9216824006• विवेक गुप्ता 7018118041• विवेक चौधरी 8894389084• विवेक धर्माणी 6239799830• विशाल 8126910727•

विशाल रघु कंदरोर 9882700872• शशि शर्मा 7018936520• शीश राम 99824777513• कुलदीप शर्मा 9816520602• शैली 7818200050• संजय जोशी 9805454311• संजय डोगरा 7652827148• संजय महाजन 9818110257• संजय सूद 9816005757• संजीव शर्मा 8219935365• संतोष 7018508884• संतोष कुमार 7018508864• सिकंदर शर्मा 9882922891• सुनील कुमार 9816422033• सुनील निखिल 9459475909• सुभाष कुमार 9805145347• सुरजीत 9418284974• सुरजीत डोगरा 8894651561• सुरेश कुमार 9816219700• सुरेश कुमार 7018490390• सुशील कुमार 9887631231• सोहनलाल 9418808883• हरनाम सिंह वर्मा 9418325131• जीवन लता 9418046965• ज्योति 9555766233• निर्मला देवी 8282692898• शिवानी शर्मा 7439000001• संगीता गौतम 7018313213• सीमा ठाकुर 8894715299• हेमलता 9817164577• सतिंदर पाल 9805245829• सुरेन्द्र कुमार•

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

12-13-14 जून 2026

जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

26-27-28 जून 2026

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

28-29 जुलाई 2026

पारमेष्ठि गुरु शक्ति गुरु पूर्णिमा महोत्सव, अयोध्या

शिविर स्थल : कारसेवक पुरम निकट जानकीघाट (परिक्रमा मार्ग), अयोध्या (उ.प्र.)

आयोजक-सिद्धाश्रम साधक परिवारः- व्यवस्थापक मण्डल-आजमगढ़ः- फौजदार सिंह 9721458101• डॉ. दिनेश मिश्र 9307637084• रमाशंकर यादव 9120590115• मीरा मिश्रा 9307782759• दिवाकर सिंह एडवोकेट 9415833466• राम मिलन सिंह 9721458122• अरूण सिंह एडवोकेट 9415457229• रामू राम आर्या 9208491715• डा. जितेन्द्र गौतम 7319886120• माखन लाल संन्यासी 7607951922• डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा प्राचार्य 97214558117• डॉ. दिवाकर सिंह प्राचार्य 9721458112• मुसाफिर सिंह चेयरमैन• मदन मोहन पाण्डेय• **अयोध्याः-** आशीष मौर्य 933670965• राजेन्द्र पाण्डेय• शोभनाथ मौर्य 9450647011• **लखनऊः-** उदय सिंह 9795405047• **रायबरेलीः-** राम सिंह यादव 7379854779• **प्रतापगढ़ः-** तरुणेन्द्र पाण्डेय 7860190328• **प्रयागराजः-** गजराज सिंह 9935699073• **विशिष्ट आयोजक आजमगढ़ कालेज प्रबंधकगणः-** इन्द्रासन राय• डॉ.सानन्द सिंह• राज बहादुर सिंह• डॉ.प्रेमप्रकाश यादव• डॉ.अशोक सिंह• राकेश सिंह पालीवाल• डॉ. जितेन्द्र राय• शारदा शंकर राय• दीपक राय• सुनील राय• श्यामसुन्दर सिंह• पण्डित हरिनाथ तिवारी शास्त्री• डॉ.संजय सिंह• डॉ.रेनू सिंह• शम्भू नाथ सिंह पूर्व मंत्री• डॉ.आर. पी. सिंह प्राचार्य• भूपेन्द्र बहादुर सिंह• अनिल सिंह श्रमविभाग• सुजीत तिवारी• यशवंत सिंह डिग्री कालेज• अवनीश प्रताप सिंह• पुन्ज प्रकाश सिंह• गायत्री सिंह• बालमुकुन्द सिंह• रामनाथ सिंह• ओंकार सिंह (दुबरी)• पंकज सिंह गोपालगंज• श्रीराम सिंह वाजिदपुर• आज्ञाशंकर चौबे• ओमप्रकाश सिंह• अम्बरीश राय• पूरन सिंह• उमाकान्त सिंह पुट्टू• विवेक सिंह• सिद्धार्थ सिंह• शैलेन्द्र सिंह सिचाई विभाग• प्रतीक राज सिंह लखनऊ• रामअवतार सिंह लखनऊ अमित सिंह (बन्टी)• रवि गुप्ता• अजय सर्राफ• बजगंज बहादुर सिंह• सुब्बालाल यादव• धमेन्द्र यादव• डॉ. मनोज सिंह• सचिन

सिंह• मिथिलेश सिंह गहजी• मनोज चौबे• डॉ. मिथिलेश सिंह• प्रवीण सिंह निजामाबाद• **आयोजक मण्डल**

आजमगढ़ः- ओमप्रकाश सिंह• हरिद्वार सिंह• चेतनरायन सिंह• शुभम• सौरम• हरिभजन राम• हरिबंश सिंह• दीपक राम• सौदागर शर्मा• विन्ध्याचल पाण्डेय 9451242176• चुन्नीलाल चौहान 9415370622• घनश्याम तिवारी 9415988730• इन्दुमति राय• विद्या जायसवाल• मंजू जायसवाल• मनोज साहनी• राधेश्याम दूबे• बेदप्रकाश सिंह• अखिलेश मिश्रा• इन्द्रसेन यादव• डॉ.आर.डी.सिंह 7905642185• हरिलाल गुप्ता 9795114881• हषिकेश तिवारी 9451307191• रामदेव यादव• चेतई यादव• रामसूरत यादव• मनोज साहनी• जितेन्द्र मौर्य• राजेन्द्र मौर्य• सबिता• उषा चौहान• प्रेमशीला राय• स्नेहलता चौरसिया• विजय यादव• धमेन्द्र• शारदा विश्वकर्मा• जगदीश पाण्डेय• परमहंश मौर्य• राधिका सिंह• लोदई• कैलाशी• फूलमती• कमला प्रसाद निखिल• उत्तम पाठक• विजय विश्रा• पार्वती मौर्य• प्रभुनाथ मिश्रा• राममूरत यादव• लालचन्द निषाद• मनोज कुमार• राममूरत सिंह• रविशंकर यादव• अनिल यादव• संजय राय• विगविजय नाथ द्विवेदी• **मुहम्मदाबादः-** पूनम गौड़• विमला यादव• लालसा यादव• मंजू यादव• शान्ती साहनी• इन्दू• लक्ष्मी• शीला• **खुरहटः-** रामनयन मौर्य• प्रदुम्न यादव• विजय शंकर• रामप्रवेश यादव• रामअवध चौहान• **अम्बेडकर नगरः-** अच्छेलाल यादव• डॉ.लालजी पटेल• रमेश चन्द सोनी• देवनरायन पाण्डेय• योगेन्द्र मौर्य• **संतकबीर नगरः-**रूदल प्रसाद चौधरी 9889308362• चिन्ताहरण पटेल• अलख निरंजन विश्वकर्मा• राजदेव मौर्य• निखिलानन्द यादव• लालसा प्रसाद पासवान• दिगविजय चौरसिया• अश्वनी कुमार• रामानन्द• विपिन विश्वकर्मा• **गोरखपुर देवरियाः-** अंकित पाण्डेय• विरेन्द्र साही 9936858949• **रायबरेलीः-**उषा शर्मा• शिवविरंचि• श्रीकृष्ण वर्मा• उमाशंकर पटेल• वियज पाल सोनी• सोनू सोनी• ज्ञानवती सिंह• **प्रयागराज-प्रतापगढ़ः-**एम.आर.मिश्रा• रविशंकर सोनी• विकास तिवारी• **जौनपुर वाराणसीः-** अंकित सिंह• मंजू सिंह• डॉ.विनोद कुमार सिंह• **लखनऊः-** वी.के.श्रीवास्तव 9005160009• कमला सिंह• शिवओम बाजपेई• हरिओम बाजपेई• रामा• समरजीत सिंह• साधना सिंह• ज्ञानशंकर शुक्ला• मनीष साहू• शैलेश मिश्रा• प्रवीण पंकज• नीरज बाजपेई• रामगोपाल साहू• सुशील मण्डल• अनामिका सिंह• **दिल्लीः-** इन्द्रपाल सिंह• शिव कुमार गुप्ता बन्टी• रामकिशोर मौर्य• सचिन शर्मा• **टाटानगरः-** वाई0 एम0 मूर्ति 7461066316• अभय कुमार वर्मा 9835563288• डॉ.रवि• नरेश कुमार वर्मा• रामकेश चौधरी• विजय बहादुर साहू• संजीव कुमार• रामबाबू सोनकर• अरूण प्रसाद• गुरुवारी देवी• विजय कुमार झा• नमन पाठक• हरदीप सिंह• अनिल उराव• रामकृष्ण कुमार• विजय गुप्ता• संजीव सुमन• नवीन कुमार• **बिहार-** शोभादास 79038699• गणेश कुमार 9334753839• **बेगूसरायः-**गिरीश प्रसाद• **खगडियाः-**राम मनोहर• डॉ. अशोक कुमार• **सीतामढीः-** नन्दकिशोर मण्डल• **मधुबनीः-** राजेन्द्र कुमार लाल• **कटिहारः-** नरेश निखिल• **मधेपुराः-** मुरली प्रसाद यादव• **नैरतियाः-**जनार्दन यादव• **दरभंगाः-** पुरसोत्तम सिंह• **मोतीहारीः-** लालन कुमार• **मुजफ्फर नगरः-** सुरेन्द्र सिंह• **पुर्णियाः-** संजय कुमार• **पटनाः-** राधा मोहन• मंजू• कामता प्रसाद• डॉ.विजय• राजेन्द्र राम• बालाजी सहाय• धीरज कुमार सिंह• **नागपुरः-** राजेन्द्र सिंह सेमर 9823019750• मधुकर उडकुडे• के.एन.मोहाडिकर• शुक्राचार्य ठाकरे• अशोक लड़के• गुणवंत खोब्रागडे• प्रशांत परसोडकर• महेश आर्थिक• संजय रसनफुटे• आनंगपाल पवार• भारतराव चंद बघेल• **उडीसाः-** सुधांशू दोस 94377146388• सत्याब्रत साहू• 9936244073• **छत्तीसगढ़ः-** के. के. तिवारी 9827955731• बबला उपाध्याय 93014800081• सुदामा चन्द्रा• संतोष सोनी• **नेपालः-** डॉ.एस.के.धिताल• डॉ. सुडान बासकोटा• गोपी कोइराला• शम्भू प्रसाद• **छिन्दवाडाः-** बलदेव देवण्डे• **आसामः-** प्रभुदयाल सिओटिया• चन्द्रभान सिंह (सी.वी. सिंह)• हरेन्द्र यादव• राधेश्याम तिवारी• गुलाब प्रसाद गुप्ता• मुन्नीलाल साहू• भानू कमल• नागेश्वर गुप्ता• प्रदीप भराली• स्वाती अग्रवाल• शिवशंकर अग्रवाल• प्रेमबहादुर• हिमशिखा•

रूम बुकिंग हेतु सम्पर्क करे - • राममिलन सिंह 9120922801, 9721458122, • डॉ. दिनेश मिश्रा 9307637084, • मीरा मिश्रा 9307782759, • रमाशंकर यादव 9120590115

शनि जयन्ती

16 मई 2026

शनि प्रसन्न दीक्षा

नवग्रहों में शनि को सर्वाधिक प्रभावशाली ग्रह माना गया है, जिसका प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र - कर्म, चरित्र, संघर्ष और सफलता पर होता है

- शनि साधक में गहराई, गंभीरता और न्यायप्रियता का विकास करते है। शनि की कृपा से साधक न्याय पूर्ण, निष्पक्ष और कर्म क्रिया में गतिशील होता है।
- शनि साधक में संघर्षों से लड़ने की क्षमता विकसित करते है, जिससे शत्रु पक्ष उनके सामने नतमस्तक हो जाता है।
- शनि की कृपा से साधक सत्य, अनुशासन और परिश्रम के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए उच्चता के शिखर पर प्रतिष्ठित होता है।
- शनि की कृपा से साधक जिम्मेदार, आत्मनियन्त्रित, धैर्यवान और दृढ़ निर्णय लेने वाला बनता है, जिससे उसके कार्यों में बाधाएं स्वतः ही समाप्त हो जाती है।
- शनि की कृपा 'अति प्रदायक' (अधिक देने वाला) है और इसी प्रकार शनि की वक्र दृष्टि 'अति विनाशक' (सब कुछ नष्ट करने वाला) है।

यह तो निश्चित है कि शनि न्यायधीश की भांति कर्मफल प्रदान करते है इसीलिये शनि के प्रभाव से तीव्र हानि या तीव्र लाभ दोनों हो सकते है। सद्गुरु अपने शिष्य को अपने रक्षा क्षेत्र में ले लेते है, जिससे साधक को अपने पूर्व जन्म के दोषों को भोगना न पड़े और वर्तमान समय में श्रेष्ठ कर्म करें जिससे शनि भय से मुक्त होकर वह निरन्तर क्रियाशील रहे।

गुरु का आशीर्वाद, गुरु का शक्तिपात साधक के जीवन में रक्षा कवच बनकर कार्य करता है। यही सद्गुरु की शनि प्रसन्न दीक्षा प्रदान करने का रहस्य है।

शनि प्रसन्न दीक्षा न्यौ. (प्रति चरण) - 3100/-

RNI No. RAJBIL/2010/34624
Postal Registration No. Jodhpur/300/2025-2027

MAGAZINE POST
Cust. ID - 3000067881
Contract ID - 41372420
BPC Jodhpur HO 342001

माह : मई और जून में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान जोधपुर

1-2-3 मई

12-13-14 जून

स्थान आरोग्यधाम (दिल्ली)

29-30-31 मई

26-27-28 जून

पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंचकर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रेषक -
निखिल मंत्र विज्ञान
14 A, मेन रोड हाई कोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर - 342001 (राज.)
फोन: 9799988915, 9799988930
9799988937, 9799988938
SMS & WhatsApp - 9602334847
Web Add. - nikhilmantravigyan.org
facebook.com\nikhilmantravigyan.org
Email - nmv.guruji@gmail.com

दिल्ली कार्यालय - आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 110034,
फोन: 9799988904, 9799988905, 9799988970